शंका समाधान

केवल उपदेश प्राप्त भगत समाज के लिए



गुरु को राखिये शीश पर
चलिए आज्ञा माही
कहैं कबीर उस भगत को
तीन लोक भय नाही

-: प्रेरणास्त्रोत :-
जगतगुरु तत्वदर्शी
संत रामपाल जी भगवान

मुल्यः- निःशुल्क

स्वयं भी पढ़ीये
अन्य भाई बहनों तक भी
पहुंचाएं व मर्यादा बचायें

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार सुबह उठते ही, भक्ति की शुरुआत क्या व कौनसी वाणी बोलकर करनी चाहिए ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि उपदेशी भगत को सुबह नींद से जागते ही, बिस्तर पर बैठकर या खड़े होकर सर्व प्रथम मंगलाचरण करना चाहिए और साथ मे निम्न पांच वाणिया उच्चारित करनी चाहिए

समर्थ साहेब रत्न उजागर, सत्य पुरुष मेरे सुख के सागर
जूनी संकट मेटो गुसाई, चरण कमल की मैं बली जाही

भाव भक्ति दीज्यो प्रवाना, साधु संगति पूर्ण पद ज्ञाना
जन्म कर्म मेटो दुःख दुन्दा, सुखः सागर में आनंद कदा

निर्मल नूर जहूर जुहारं, चन्द्रगता देखो दिदारं
तुमहो बंकापुर के वासी, सतगुरु काटो यम की फांसी

मेहरबान हो साहिब मेरा, गगन मण्डल मैं दीज्यो डेरा
चकवे चिदानन्द अविनाशी, ऋद्धिसिद्दी दाता सब गुण राशी

पिण्ड प्राण जिन दीने दाना - गरीब दास जाकू कुर्बाना

उपदेशी भगत को मंत्र व तीनों समय की आरती कब व कैसे करनी है, आरती बैठकर करे या खड़े होकर, आरती वीडियो से करे या भक्तिबोध पुस्तक से, यदि कभी आरती ना हो पाये, तो मर्यादा खंडित होगी या नही ?

उपदेश प्राप्त करने के साथ ही भगत को, प्रतिदिन अपने घर पर तीन समय की आरती करने के लिए भक्तिबोध नाम से एक छोटी पुस्तक मिलती है

☞ जिसमे तीनों समय की आरती

☞ अन्नदेव की आरती

☞ व गुरुदेव भगवान को भोग लगाने की विधि लिखी होती है ।

1) **सुबह की आरती**-सुबह की आरती को नित्य नियम कहा जाता है, जिसका पाठ करने में लगभग 50 मिनट का समय लगता है, गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार, यह सुबह का नित्य नियम पाठ रात्रि 12 बजे से लेकर दिन के 12 बजे तक कभी भी अपनी सुविधा अनुसार किया जा सकता है!

2) **असुर निकंदन रमैनी**-दोपहर की आरती को असुर निकंदन रमैनी कहा जाता है, इस पाठ को करने में लगभ 16 मिनट का समय लगता है, इस पाठ को करने का समय दोपहर के 12 बजे से लेकर रात्रि के 12 बजे तक अपनी सुविधा अनुसार कभी भी कर सकते है!

3) **संध्या आरती**-सायंकाल की आरती को संध्या आरती कहा जाता है, इस पाठ को करने में लगभग 35 मिनट का समय लगता है, इस पाठ को सूर्यास्त (सूरज ढलने) से लेकर रात्रि 12 बजे तक अपनी सुविधा अनुसार कभी भी कर सकते है

तीनो समय की आरती (पाठ)
करने का उत्तम समय क्या है ?

तीनो समय की आरती को संध्या आरती कहा जाता है
संध्या आरती में एक जगह गुरुदेव भगवान ने बताया कि ...
संध्या सो जो सन्धि पिछानै,मन पसरे कुं घट में आनै
सो संध्या हमरे मन मानी,कहै कबीर सुनो रे ज्ञानी

संध्या सो जो सन्धि पिछानै अर्थात तीनो समय की आरती को संध्या आरती का ही नाम दिया गया है,यानी तीनो समय की आरती के करने का उत्तम समय, संध्या काल का समय है, **संध्या काल - दो समय के मिलन को कहा जाता है**

☞ अतः गुरुदेव जी ने सुबह की आरती का उत्तम समय, सुबह सूर्य उदय होने से एक आध घंटा पहले का समय बताया है, लगभग 5 बजे के आसपास, क्योंकि उस वक्त रात्रि का समय खत्म होता है और दिन का समय शुरू होता है, इस कारण उसे संध्या यानी दो समय का मिलन कहा जाता है, इसके अलावा किसी कारणवश विशेष परिस्थिती में इस पाठ (आरती) को रात्रि 12 बजे से लेकर दिन के 12 बजे तक कभी भी किया जा सकता है, **लाभ गुरुदेव ने एक समान ही बताया है**

☞ दोपहर की आरती-का उत्तम समय दोपहर के 12 बजे से लेकर दोपहर के 2 बजे तक का है, क्योंकि उस समय सुबह का समय खत्म हो जाता है और दोपहर का समय शुरू होता है, **इसलिए इसे भी संध्या काल अर्थात दो समय का मिलन कहा जाता है**

☞ इसके अलावा किसी कारणवश विशेष परिस्थिती में इस पाठ को दोपहर के 12 बजे से लेकर रात्रि के 12 बजे तक कभी भी किया जा

सकता है, **लाभ गुरुदेव ने एक समान ही बताया है ,**

☞ **संध्या आरती** - संध्या आरती (पाठ) का समय उत्तम समय सूर्यास्त का समय है, क्योंकि उस वक्त दिन का समय खत्म और रात्रि का समय शुरु होता है, जिसे संध्या काल अर्थात दो समय का मिलन कहा जाता है

इसके अलावा किसी कारणवश विशेष परिस्थिती में इस पाठ को सूर्यास्त से लेकर रात्रि 12 बजे तक कभी भी किया जा सकता है, **लाभ गुरुदेव ने एक समान ही बताया है**

यदि किसी दिन, किसी विशेष कारणवश आरती व मंत्र नही कर पाये, तो मर्यादा खंडित होती है या नही ?

गुरुदेव भगवान ने **कबीर सागर का सरलार्थ** पेज न.593 पर बताया कि, उपदेशी भगत ने तीनों समय की आरती, गुरुदेव भगवान का आदेश समझकर विशेष कसक के साथ नियमित रूप से करते रहना चाहिए, **यदि कभी कभार किन्ही विशेष परिस्थितियों में भूलवश या मजबूरीवश आरती नही कर पाते है** तो गुरुदेव ने बताया कि ऐसी स्थिति में दोष नही लगता है

यदि किसी दिन मंत्र जाप नही कर पाते है,
तो मर्यादा खण्डित होती है या नही ?

गुरुदेव कहते है - **नर संसारी लग्न में दुःख सहै करोड़ा - परमार्थ के कारणे जितना सहो उतना थोड़ा**

मंत्र जाप के विषय मे गुरुदेव भगवान ने कोई छूट नही दी है , **और**

यही कहा है कि दांव लगते ही जैसे भी समय मिले, उठते बैठते, काम करते करते, या यात्रा में है तो आते जाते समय, या सोते समय, आराम करते करते भी जाप करते रहना चाहिए, उपदेशी ने भगवान की भक्ति को सर्व प्रथम लेना चाहिए, यदि सांसारिक कार्यों मे व्यस्त होकर आप गुरुदेव भगवान की भक्ति को ही भूल जाते हो, तो यह बहुत बड़ी कमजोरी है, भगत के लिए भक्ति से बढ़कर दूसरा विशेष कार्य नही होना चाहिए क्योंकि बाकी सांसारिक कार्य भी भगवान की भक्ति करते रहने से ही सिध्द होंगे

क्या आरती की तरह मंत्र जाप करने का भी कोई समय निर्धारित किया हुआ है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि ...

नाम उठत नाम बैठत, नाम सोवत जाग बे - नाम खाते नाम पीते, नाम सेती लाग बे, अर्थात मंत्र जाप (सिमरण) करने का कोई विशेष समय नही है, आरती करते समय व सत्संग सुनने समय मंत्र जाप नही करना है, बाकी किसी भी समय, उठते बैठते, खाते पीते, नहाते, यात्रा करते समय, सोते समय कभी भी मंत्र (सुमरण) जाप कर सकते है

सुबह उठने के बाद सबसे पहले आरती करनी चाहिए, या मंत्र जाप करना चाहिए ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, यह आपकी अपनी स्वयं की इच्छा पर निर्भर करता है, चाहो तो सुबह सुबह आंख खुलते ही, बिस्तर पर लेटे लेटे या बैठकर कुछ 10, 20, 50, मंत्र जाप कर लीजिए, या चाहो तो पहले आरती कर लीजिए

प्रथम मंत्र की पूरी माला (108 बार जाप) एक बार मे ही करना जरूरी है या अलग अलग समय मे कर सकते है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, यह आपकी इच्छा व समय पर निर्भर करता है, आप चाहे तो एक बार मे भी प्रथम मंत्र की पूरी माला कर सकते है, चाहो तो सारा दिन में कभी 10, कभी 5, कभी 15 इस तरह से भी जाप कर सकते हो ,

प्रथम मंत्र जाप करने की विधि क्या है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, प्रथम मंत्र **सुरत, निरत और मन के साथ जाप किया जाता है**

सूरत, निरत, और मन क्या है,
तथा उसके साथ कैसे जाप किया जाता है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, जो मंत्र आपको मिला है, जाप करते समय विशेष कसक के साथ, उस मंत्र अर्थात शब्द पर ध्यान लगाकर जाप करना सुरती निरति से जाप करना होता है , तथा जाप करते समय अपने मन को उन मंत्रो के ऊपर टिकाकर रखना अर्थात जाप करते समय मन इधर उधर की बातों पर ध्यान ना दे, **उसे मन के साथ जाप करना कहते है**

क्या आरती या मंत्र करने के लिये नहाना आवश्यक है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि

नहाये धोये क्या होय, जो मन का मैल ना जाय - मीन सदा जल में रहै, धोये बास ना जाय अर्थात नहाना केवल शरीर की स्वच्छता है मन की नही, अतः आरती या सुमरण करने के लिए नहाने की आवश्यकता नही है, यदि आपका सुबह जल्दी नहाने का अभ्यास है तो आप नहाकर भी आरती कर सकते है, पुस्तक को गंदे हाथ ना लगे, इसके लिए आरती करने से पहले हाथ पैर जरुर धो लेने चाहिए

आरती पुस्तक से करना उत्तम विधि है
या गुरुदेव के ऑडियो वीडियो से ?

गुरुदेव भगवान एक तीर से अनेक शिकार करते है, **उन्होंने आरती का वीडियो हम भक्तो को आरती की सही विधि समझाने के प्रयोजन से बनाया है, नाकि रोजाना वीडियो लगाकर आरती करने के लिए**

☞ स्वयं गुरुदेव ने एक भगत की भूमिका निभाते हुए, आरती का वीडियो बनाकर अपने गुरु के आगे आरती करते हुए अपना शिष्य धर्म भी निभाया है, **और हम भक्तो को शिक्षा दी है कि, जैसे मैं अपने गुरुदेव के लिए हाथ मे भक्तिबोध पुस्तक लेकर आरती कर रहा हूँ, ठीक इसी तरह तुम भक्तो ने भी तीनो समय की आरती हाथ मे भक्ति बोध लेकर पढ़कर ही करनी है, नाकि ऑडियो वीडियो चलाकर**

वीडियो के साथ आरती करना उत्तम विधि नही है, अक्सर देखने को मिलता है कि, भगत समाज गुरुदेव की आवाज में ऑडियो वीडियो में आरती लगाकर अन्य कार्य भी करते रहते है और बाते भी, जो उचित नही है ,

गुरुदेव भगवान ने आरती हमे पढ़कर करने के लिए दी है, नाकि ऑडियो वीडियो लगाकर सुनने के लिए , विचार करे - **उपदेश के बाद आपको तीनो समय की आरती की पुस्तक किसलिए मिलती है ? उसे बंद करके घर पर रखने के लिए** या हाथ मे लेकर तीनो समय की आरती करने के लिए ?

कभी फुर्सत में ध्यान से पढ़ना - भक्तिबोध पुस्तक के कवर पर नीचे की तरह साफ साफ लिखा है **(मूल्य - नित्य नियम पाठ)** अर्थात प्रतिदिन तीनो समय, इस पुस्तक को हाथ मे लेकर पाठ (आरती) नही करते है, तो समझिये आप अपने गुरुदेव को इस पुस्तक का मूल्य अदा नही कर रहे है, आप गुरुदेव के साथ और अपने साथ धोखा कर रहे है ,

यदि भक्तिबोध पुस्तक के साथ ही तीनो समय का पाठ (आरती) करना है तो फिर गुरुदेव ने आरती का वीडियो किसलिए बनाया होगा ?

गुरुदेव भगवान अंतर्यामा और दयालु है, उन्हें पता था यदि कोई अनपढ़ या नेत्रहीन स्त्री पुरुष उपदेश लेते है, तो उनके सामने भक्तिबोध पुस्तक से पढ़कर आरती करने में दिक्कत आयेगी, अतः उस स्थिति में उन अनपढ या नेत्रहीन आत्माओं के लिए आरती का वीडियो बनाया गया था, नाकि सभी भगत आत्माओं के लिए

आजकल मोबाइल में आरती की PDF पुस्तक उपलब्ध हो जाती है, क्या मोबाइल के माध्यम से भक्तिबोध पुस्तक को पढ़कर आरती की जा सकती है?

अवश्य, मोबाइल में PDF फाइल के द्वारा पढ़कर भी तीनो समय की आरती कर सकते है, हमने केवल शब्दो पर ध्यान रखकर आरती करनी होती है

बोलकर आरती करना जरुरी है या मन ही मन मे भी आरती कर सकते है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, पाठ का अर्थ होता है पढ़ना, अतः चाहे धीरे बोले, लेकिन शब्द उच्चारण करते हुए बोलकर ही आरती करना होता है, बोलकर आरती करने का अन्य दूसरा कारण गुरुदेव भगवान ने बताया कि, शब्द अखंड होता है उसका कभी भी नाश नही होता है, और जब हम बोलकर आरती करते है तो हमारे शब्द ब्रह्मांड में ऊपर जाते रहते है, ब्रह्मांड में पहले से ही जगत वालो के कुशब्द की एक परत बनी हुई है, और उन कुशब्दो का कुप्रभाव निरंतर नीचे लोगो को प्रभावित करता रहता है, जब लाखो की संख्या में भगत आत्माये हाथ मे भक्तिबोध पुस्तक लेकर तथा बोलकर आरती करेंगी, तो भक्तो के सुशब्द भी ऊपर ब्रह्मांड में जाकर, उन कुशब्दो के नीचे जमा होकर अपनी एक परत बना

लेते है, और इस तरह से जगत वालो के कुशब्दो का प्रभाव धीरे धीरे नीचे आकर लोगो को प्रभावित करना बंद कर देंगे, तथा धीरे धीरे वातावरण में तीनों गुणों का प्रभाव कम होता चला जायेगा

प्रथम मंत्र का जाप 108 बार ही करना है या ज्यादा भी कर सकते है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि - कम से कम 108 बार तो जाप करना ही करना है,यदि अधिक बार जाप करते हो तो इसमें फायदा ही है , लेकिन गुरुदेव ने यह भी बताया कि, सतनाम मंत्र (दो अक्षर का मंत्र) मिलने के बाद, सतनाम के जाप को अधीक महत्व देना है, अर्थात सतनाम मंत्र प्राप्त हो जाने के बाद, प्रथम मंत्र की भले एक माला **(108 मंत्र)** से ज्यादा जाप करो या ना करो, लेकिन सतनाम का अधिक से अधिक सुमरण करना है

चरणामृत विषय में जानकारी

उपदेश प्राप्त करने के बाद, पूज्य गुरुदेव भगवान अपने भगत को एक चरणामृत की छोटी सी बोतल, हाथ मे बांधने के लिए रक्षासूत्र, गले मे पहनने के लिए लॉकेट, व तीनो समय की आरती के लिए भक्तिबोध पुस्तक देते है

1) चरणामृत हमे प्रतिदिन पीने के लिए दिया जाता है, इसे आप सुबह उठते ही आरती से पहले या आरती के बाद पी सकते है

चरणामृत पीने की विधि क्या है ?

नाम उपदेश के समय आपको चरणामृत की एक बोतल मिलती है, उस बोतल में से मात्र एक ढक्कन या कुछ बूंद चरणामृत, किसी अन्य साफ बड़ी बोतल में डालकर उस बोतल को सादा पानी से भर ले, या फिर बाजार से 20 - 25 रुपये में एक पानी से भरी बोतल खरीदकर, उसमें कुछ बूंद या एक ढक्कन चरणामृत का डालकर दरबार मे रख ले ,

अब रोजाना सुबह उठते ही सबसे पहले गुरुदेव भगवान को दंडवत प्रणाम करे, उसके बाद एक छोटा कप या गिलास लेकर, उसमें 2 - 4 ढक्कन उस बड़ी बोतल से चरणामृत डाल लें, दरबार के आगे घुटने टेककर उस गिलास वाले चरणामृत को मुँह लगाकर एक बार मे पी ले, ऊपर से गिलास में थोड़ा सा मटके या अन्य जगह से सादा जल लेकर पुनः पिये, फिर दंडवत प्रणाम करें और उस गिलास को स्वयं अपने हाथों से साफ करके रख दे, **इस तरह भगत ने प्रतिदिन चरणामृत ग्रहण करना है**

नित्य नियम पाठ करते समय, पवित्र भक्तिबोध पुस्तक के पेज न. 23 पर हम प्रतिदिन पढ़ते भी है कि - **चरणामृत कदाचित पावै - चौरासी कटे लोक सिधावै,** अर्थात प्रतिदिन चरणामृत पीने से जीव के चौरासी के फंद कट जाते है ,

चरणामृत क्यो पिया जाता है ?

उपदेश के बाद गुरुदेव भगवान द्वारा अपने भगत को चरणामृत देने के पीछे का कारण है भगत के अंदर से जात पात को खत्म करना, अहंकार मिटाकर भक्ति के योग्य बनाना ,

जैसे मीराबाई को दीक्षा देने से पहले, कबीर परमात्मा ने दूसरा रूप रविदास जी का बनाया और कुछ दूरी पर जाकर बैठ गये , जब मीराबाई उपदेश लेने के लिए आई, तो परमात्मा ने कहा कि उधर रविदास जी बैठे है उनसे जाकर दीक्षा ले लो, **परमात्मा यह देखना चाहते थे, यदि मीराबाई भक्ति योग्य आत्मा है तो जाति के अभिमान को त्यागकर रविदास जी से उपदेश प्राप्त कर लेगी** रविदास जी चमार जाति से थे, और मीराबाई राजपूत जाति से थी, तथा उस समय जातिपाति का समाज मे बहुत ज्यादा प्रभाव था, **उपदेश से पहले रविदास रूप में कबीर परमात्मा ने कहा, की मीराबाई सोच समझकर उपदेश लेना, मैं चमार जाति से हूँ और आप ठाकुरों की लड़की हो, कल को समाज बहुत कुछ बात सुनायेगा, और यदि उपदेश लेने के बाद अपने गुरुजी के प्रति मन मे जरा सा भी दोष उत्पन्न हो गया, तो सारी भक्ति कमाई नष्ट हो जाती है,** मीराबाई ने कहा कि आज से आप मेरे पिता और मैं आपकी बेटी, भाड़ में जाये समाज, मुझे आत्मा कल्याण करवाना है, तब परमात्मा प्रसन्न हुए और मीराबाई जी को उपदेश दिया

ठीक इसी तरह भगत के अंदर से जातपात, पद पोस्ट व धन आदि के अहंकार को समाप्त करने व भगत की गुरुजी के प्रति श्रद्धा जांचने के लिए, **उपदेश के उपरांत गुरुदेव भगवान के चरणों के ऊपर से जल**

डालकर उसे एक बोतल में बंद करके भगत को प्रतिदिन पीने के लिए दिया जाता है यदि वह भक्ति के लिए अधिकारी जीव होगा, तो उस जल को अमृत समझकर रोजाना ग्रहण करके अपने आत्म कल्याण की तरफ आगे बढ़ेगा, **अन्यथा मन मे दोष पैदा करके, की मैं तो जाति से ब्राह्मण हूँ बनिया हूँ और गुरुजी जाट जाति से है, मैं श्रेष्ठ जाति में होकर एक जाट के चरणों का जल कैसे पी सकता हूँ, या फिर मन मे ऐसा कोई दोष भी रखता है और चरणामृत भी पिता है** तो ऐसा जीव जो गुरु को मानुष भी मानता है, और चरणामृत भी पी रहा है, वह कुत्ते की योनि प्राप्त करता है

आदरणीय गरीब जी महाराज कहते है कि - **गुरु को मानुष जो गिने और चरणामृत को पान - ते नर नरक में जाएंगे, जन्म जन्म बने स्वान,** अर्थात गुरु को मनुष्य समझकर उनका जन्म दिन भी मनाते है और चरणामृत भी पी रहे है, ऐसे शिष्य मरने के बाद स्वान की योनि प्राप्त करते है ,

प्रसाद कैसे ग्रहण करने का क्या तरीका है ?

उपदेश के बाद भगत को चरणामृत के साथ मखाना प्रसाद **(सफेद रंग के छोटे छोटे गोल गोल दाने)** मिलता है, जो सतगुरु के शब्द से मंत्रित होता है, अर्थात शब्द शक्ति युक्त होता है, वह प्रसाद भी प्रतिदिन थोड़ा थोड़ा, तीनो समय की आरती के उपरांत सभी भक्तो को लेना होता है, **ध्यान रहे, प्रसाद नीचे बैठकर या घुटने टेककर ही ले, अन्यथा प्रसाद का अनादर समझा जाता है**

☞ गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार प्रसाद व चरणामृत केवल उपदेशी भगत भाई बहन ही ले सकते है, अनुपदेशी को प्रसाद व चरणामृत नही देना है , **एक समय एक बहन ने अपने पड़ोसी के बच्चे को प्रसाद दे दिया, कुछ ही समय बाद बच्चा बेहोश होकर गिर गया, सभी लोग उस**

बहन को बुरा भला कहने लगे और साथ मे गुरुदेव को भी, कुछ समय बाद बच्चा होश में आ गया, आश्रम जाकर बहन ने गुरुदेव को यह घटना बताई, तो गुरुदेव ने समझाया, कि बेटा इस प्रसाद में परमात्मा की वाणियो से शब्द शक्ति प्रकट हो जाती है, जिस बच्चे को आपने यह प्रसाद खिलाया था, उसमें कोई प्रेत आत्मा विद्यमान थी, प्रसाद शरीर के अंदर जाते ही सूक्ष्म रूप में प्रेत के ऊपर शब्द की चोट पड़नी शुरू हो गई और वह बाहर निकलने का प्रयास करने लगा, इसी प्रक्रिया में बच्चा बेहोश हो गया था

उस दिन के बाद से गुरुदेव भगवान ने सभी संगत को यह आदेश दिया, कि प्रसाद और चरणामृत किसी भी अन उपदेशी को नही देना है, अन्यथा आप भी मुसबीत में आ जाओगे और आपके गुरुदेव को भी लोग भला बुरा कहेंगे

क्या भगत अपने छोटे बच्चो को प्रसाद और चरणामृत पिला सकते है ?

पूज्य गुरुदेव भगवान के ज्ञान आधार अनुसार, यदि आप उपदेशी है, **और आपका बच्चा या बच्ची 3 वर्ष की या उससे कम उम्र का है, तो प्रसाद व चरणामृत पिला सकते है,** जब बच्चा 3 वर्ष से ऊपर का हो जाये, तो गुरु आदेश अनुसार उसे तुरंत उपदेश दिलाकर ही चरणामृत और प्रसाद देना है अन्यथा नही

क्या उपदेशी माता पिता के छोटे छोटे अनुपदेशी बच्चे, मंत्र जाप कर सकते है ?

गुरुदेव के भक्ति विधान अनुसार, जब बच्चा तीन वर्ष का हो जाये तो उसे उपदेश दिलवा देना चाहिए, यदि बच्चा 3 वर्ष से कम उम्र का है, तो घर मे उपदेशी माता पिता, प्रथम मंत्र का उच्चारण बोलकर भी कर सकते है, साथ मे यदि तीन वर्ष से कम उम्र का बच्चा भी मंत्र उच्चारण करने लगता है तो आप उसे मना ना करे, **लेकिन अपनी तरफ से उस अन**

उपदेशी बालक को मंत्र जाप करने के लिए ना कहे, अन्यथा आपकी मर्यादा खंडित हो जायेगी, तीन वर्ष के बाद उसे नाम उपदेश / या संकल्प उपदेश दिलवाना अति आवश्यक होगा, ठीक इसी प्रकार 3 वर्ष या उससे कम उम्र के बच्चे को हाथ मे रक्षासूत्र व गले मे लॉकेट भी पहना सकते है

यदि रक्षासूत्र, चरणामृत और प्रसाद समाप्त हो जाये, तो क्या करे कहा से लाये ?

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार, रक्षासूत्र, चरणामृत व प्रसाद यदि समाप्त हो जाये, तो आपने कही से भी लाने की आवश्यकता नही है, गुरुदेव ने बताया **कि आपने जिस बोतल में चरणामृत डाल रखा है, जैसे ही उसमें थोड़ा सा चरणामृत बचे - उसी समय बोलत में ऊपर से सादा पानी डालकर भर ले, इस तरह से आप चरणामृत को बढ़ाते रहिये,**

ठीक इसी तरह प्रसाद जब थोड़ा सा रह जाये, तो बाजार से 200 या 500 ग्राम प्रसाद लाकर उसमें डाल दे, ऊपर से डाला गया प्रसाद, अंदर बचे थोड़े से प्रसाद के संपर्क में आते ही शब्द से चार्ज हो जाता है-**क्योंकि भक्तिमार्ग में जैसा गुरुदेव भगवान ने कह दिया वैसा ही हो जाता है**

इसी तरह जब रक्षासूत्र खत्म होने वाला हो, तो उससे पहले ही बाजार से रक्षासूत्र (मोली) खरीदकर, उसे पहले से बचे हुए रक्षा सूत्र से टच करके काम मे लेवे, **अर्थात नया वाला रक्षासूत्र - पुराने वाले रक्षासूत्र से टच करते ही शब्द शक्ति से चार्ज हो जाता है**, जिस तरह पारस के छोटे से टुकड़े से यदि 10 टन लोहा भी टच कर दिया जाये, तो वह सारा ही लोहा सोना बन जाता है, जबकि गुरुदेव भगवान का आदेश तो पारस से भी असंख्य गुना अधिक प्रभावी है

यदि रक्षासूत्र गल जाये, टूट जाये, या गुरुदेव की फोटो खराब हो जाये, गीली हो जाये या फट जाये, तो उनका क्या करे ?

गुरुदेव ने बताया कि ऐसी स्थिति में, आपने उस राक्षसूत्र, व फोटो को या तो किसी बहते हुए नहर आदि के पानी मे जल प्रवाह कर देना है, या घी लगाकर अग्नि में स्वाह कर देना है, स्वाह करने के बाद राख को किसी बहते हुए पानी मे डाल दे या जमीन में खड्डा खोदकर दबा दे, **अर्थात कही भी या कुड़े में फेककर उनका अनादर नही करना चाहिए**

घर पर दरबार साहेब मे क्या क्या वस्तु रखनी चाहिए ?

गुरुदेव कहते है - **गुरु को पूर्ण ब्रह्म कर जाने - और भाव कभू ना आने** अर्थात गुरुदेव ही भगवान है **(पूर्ण ब्रह्म)** है, इसके अलावा एक ज्ञानी भगत के मन मे दूसरा भाव भी नही आना चाहिए, की कोई अन्य और भी भगवान हो सकता है , **जैसे एक पतिव्रता औरत के सामने उसके पति से भी सुंदर चाहे सोने का पुरुष बनाकर क्यो ना खड़ा कर दिया जाये, लेकिन पतिव्रता औरत का उस तरफ पति रूप में भाव नहीं बन सकता,** अतः उपदेशी भगत ने अपने गुरु को ही गोविंद मानकर, दरबार मे अकेले उन्ही की फोटो रखकर पूजा करनी है, यदि आपके पास पहले से आश्रम या नामदान केन्द्रों से प्राप्त कोई ऐसी फोटो है, जिसमे गुरुदेव के अलावा,

☞ आदरणीय गरीब दास जी

☞ आदरणीय रामदेवानंद जी

☞ आदरणीय चितानंद जी

☞ **या कबीर साहेब की हाथ से बनाई हुई काल्पनिक फोटो है**, तो पतिव्रता भगत आत्मा ने दरबार साहेब से उन सभी फोटो को हटाकर, अकेले अपने गुरुदेव - सतगुरु रामपाल जी भगवान का ही एकमात्र फोटो पूजा के लिए रखना है क्योंकि पूजा केवल एक ही पति / पिता परमात्मा की करनी होती है, अन्य हटाई गई फोटो को हमने घी लगाकर स्वाह कर देना है या बहते हुए जल में प्रवाह कर देना है

उपदेश प्राप्त करने के बाद, पाठ प्रकाश, ज्योति हवन व 10 वे अंश का पैसा कहा देना चाहिए - थोड़ा प्रकाश डालिए ?

पूज्य गुरुदेव जी ने बताया कि, उपदेश प्राप्त करने के बाद भगत के लिए प्रतिदिन पांच यज्ञ करने का विधान है, **जिसमे एक धर्म यज्ञ होती है** धर्म यज्ञ का मतलब होता है अपनी कमाई से कुछ पैसा सतगुरु देव जी को दान करना - **सतगुरु देव जी को 4 प्रकार से दान किया जाता है**

1) **10 वां अंश देकर** - अर्थात उपदेश प्राप्त करने के बाद अपनी नेक कमाई का 10% (दस प्रतिशत) हिस्सा धर्म के निमित सतगुरु को दान करना चाहिये, यदि आप दिन में 100 रुपये कमातें है, तो उस हिसाब से उसका 10 वां हिस्सा 10 रुपये होता है, **जिसे 10 वा अंश कहा जाता है**

आप चाहे तो इससे अधिक भी दान कर सकते है, एक सत्संग में पूज्य गुरुदेव जी ने बताया कि, जब यह प्राणी माँ के ग्रभ में बहुत अधिक कष्ट में होता है, तो आत्मा रूप में परमात्मा से प्रार्थना करता है, की हे परमात्मा मुझे इस नरक से बाहर निकल दो, मैं बाहर आकर आपही का गुणगान करूंगा, और अपनी नेक कमाई का 50% हिस्सा धर्म मे लगाऊंगा , लेकिन जैसे ही प्राणी माँ के ग्रभ से बाहर आकर तीनो गुणों से प्रभावित होता है, तो पिछली सारे बातें भूलकर सांसारिक क्रियाओं में मग्न हो जाता है, ना गुरु बनाना याद रहता है और नाही धर्म करना, फिर वह दयालु परमात्मा पुनः गुरु रूप में आकर हमे वो बाते याद दिलाते है कि

भाई वो दिन करले याद ग्रभ में था डेरा
रोवै था के भजन करूंगा हर तेरा

2) **ज्योति हवन करवाना** - उपदेश प्राप्ति के बाद एक ज्योति हवन होता है, जो हम प्रतिदिन अपने घर पर करते है, **लेकिन एक हवन यज्ञ होता है, जो आपने सतगुरु से आदेश लेकर उन्ही के हाथों में पैसा देकर करवाना होता है**

2014 से पहले गुरुदेव के रहते सहते, सतलोक आश्रम बरवाला में 500 रुपये में हवन यज्ञ होता था, **अर्थात 500 रुपये लेकर गुरुदेव भगवान उस भगत के नाम से एक किलो देशी घी का हवन किया करते थे,** लेकिन आज गुरुदेव के जेल चले जाने के पश्चात, सतलोक आश्रम मैनेजमेंट ने मनमुखी होकर उस हवन यज्ञ की राशि 2100 रुपये निर्धारित कर रखी है, **जबकि ये लोग उस हवन यज्ञ को करने के अधिकारी भी नही है**

3) पाठ प्रकाश करवाना पाठ प्रकाश एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान होता है, जिसे करवाने के लिए भगत ने पहले सीधे तौर पर गुरुदेव से आज्ञा लेनी पड़ती है, **इस सृष्टि में यह पाठ प्रकाश करने के एकमात्र अधिकारी, स्वयं सतगुरु रामपाल जी भगवान है** क्योंकि गुरु आज्ञा बिना करवाया गया, या किया गया पाठ प्रकाश, लाभ की जगह हानि करता है, और यही कारण है कि 2014 बरवाला कांड के बाद, जब से मनमुखि होकर सतलोक आश्रम मैनेजमेंट ने पाठ प्रकाश करने शुरू किए है, तब से किसी को कोई आध्यात्मिक लाभ नही मिल रहे है, **संगत में आये दिन अकाल मौतों का कहर रुकने का नाम नही ले रहा है ,**

गुरुदेव भगवान का विधान है कि -

गुरु बिन माला फेरते और गुरु बिन देते दान - गुरु बिन दोनों निष्फल है चाहे पूछो वेद पुराण, अर्थात उपदेश लेने के बाद गुरुजी के हाथों में, या फिर गुरुजी से आदेश लेकर ही दान धर्म करने का विधान है, लेकिन यहाँ तो 2014 से सतलोक आश्रम मैनेजमेंट, स्वयं ही भोली संगत से दान करवाकर, अपने लिए भी नरक का रास्ता तैयार कर रहा है और संगत के लिए भी

पाठ प्रकाश तीन दिन तक लगातार चलता है, इस दौरान परमेश्वर

स्वरूप आदरणीय गरीब दास जी महाराज जी की वाणियो के संग्रह **ग्रंथ साहेब** का पाठ करना होता है , **गुरुदेव ने बताया कि उन वाणियो को स्वयं गुरूजी पढ़े, तभी साधको द्वारा करवाया गया पाठ प्रकाश सफल होता है,** या गुरुदेव भगवान अपना आशिर्वाद देकर किसी भगत को वाणी के पाठ के लिए बैठाते है, तब वह पाठ प्रकाश सफल होता है

2014 तक गुरुदेव भगवान ने पाठ प्रकाश की राशि 7 हजार रुपये निर्धारित कर रखी थी, **जबकि आज उनके जेल जाने के बाद मनमुखि होकर सतलोक आश्रम मैनेजमेंट ने 15 हजार रुपये कर दी है** जबकि वर्तमान में पाठ प्रकाश करने के लिए इन्हें गुरुदेव भगवान की तरफ से नाही कोई आदेश है और नाही आदेश हो सकता है , **क्योंकि इन्ही लोगो की मनमुखि हरकतों के चलते बरवाला कांड हुआ, 6 भक्तो की मौत हुई, और गुरुदेव को आजीवन कारावास की सजा हुई**

विशेष - **गुरुदेव भगवान की गैर हाजरी में पाठ प्रकाश व ज्योति हवन यज्ञ का संकल्प लेने का विधान है,** अर्थात घर पर दरबार साहेब के सामने दंडवत प्रणाम करते समय साल में एक बार या अनेक बार यह संकल्प करें कि - **हे गुरुदेव भगवान, आपका दास/ दासी आपजी के चरणों मे निष्काम व निस्वार्थ भाव से अपने आत्म कल्याण के लिए पाठ प्रकाश या ज्योति हवन का संकल्प लेता है - हे अंतर्यामा परमेश्वर इसे स्वीकार करने की कृपा करें, और जब आप आश्रम में आ जाएंगे, तो उस समय आप जो भी राशि पाठ प्रकाश के लिए निर्धारित करंगे, दास आपके चरणों मे भेंट कर देगा**

कहते है, **साधु भूखा भाव का और धन का भूखा नाही - जो कोई धन का भूखा वो साधु भी नाही,** इस तरह गुरु की गैर हाजरी में संकल्प करने से गुरुदेव प्रसन्न होकर, उस भगत आत्मा को उस पाठ प्रकाश / ज्योति हवन की बदौलत, आध्यात्मिक व भौतिक दोनों ही लाभ प्रदान करते है

☞ जबकि आज भगत समाज को अच्छे से पता है कि - आपके दान धर्म का करोड़ो रुपया वर्ष 2016 में सतलोक आश्रम मैनेजमेंट ने हरियाणा के जाट आरक्षण में चंदे के रूप में देकर बर्बाद किया, **कुपात्र को दिए गए उस दान का उल्टा प्रतिफल अकाल मौत के रूप में आज संगत भुगत भी रही है ,**

☞ वर्ष 2017 में आपके ज्योति पाठ का लाखो रुपया, पुलिस एनकाउंटर में मारे गए राजस्थान के एक गैंगस्टर आनंद पाल सिंह की जांच के समर्थन में, **AP सिंह वकील के माध्यम से सतलोक आश्रम मैनेजमेंट ने बर्बाद करवाया, क्योंकि AP सिंह वकील उस गैंगस्टर का भी वकील था** और इधर सतलोक आश्रम मैनेजमेंट का भी वकील था, कुपात्रों को आंख बंद करके दिए गये उस दान का परिणाम, संगत के सामने है, कहने की आवश्यकता नही है

4) इसके अलावा गुरुदेव भगवान के सामने जाकर व आदेश लेकर आश्रम के लिए जमीन दान करना, संगत के लिए गाड़ी दान करना, या अनाज / वस्त्र आदि दान किया जाता है, वर्तमान में जिन जिन भाई बहनों ने भावनाओ में बहकर, गुरुदेव से आमने सामने मिलकर आज्ञा लिए बिना जो जमीन आदि दान की है, उनका वह दान धर्म भी निष्फल है

गुरु बिन दान पुण्य जो करही मिथ्या होवै कभू ना फलही

अतः पूज्य गुरुदेव जी के हिसार जेल से किसी भी आश्रम में आने से पहले, आपजी भक्ति विधान अनुसार **पाठ व ज्योति का संकल्प कर ले, तथा पैसा चाहे तो निकालकर अलग से भी रख सकते है, या चाहे तो लिखकर रख ले, और गुरुदेव के आने के बाद उन्हें दान कर दे**

☞ इसी तरह अपने 10 वे अंश का पैसा भी लिखकर रख ले, और गुरुदेव के आने पर दान कर दे ,

अन्यथा, परमेश्वर ने आत्मा को कोई भी कर्म करने के लिए हमेशा स्वतंत्र रखा है , **सतलोक में आत्मा स्वतंत्र थी और इसी बात का फायदा उठाकर हमने काल पर आस्था लगाई और आज दुख उठा रहे है ,** आज भी परमात्मा ने हमे स्वतंत्र छोड़ रखा है, **अब हम जैसे भी भक्ति विरुद्ध कर्म कुकर्म करेंगे, तो भविष्य में परिणाम भी हम भी भोगेंगे,** अतः गुरुदेव भगवान के भक्ति विधान अनुसार दान हमेशा सुपात्र को दिया जाता है, कुपात्रों को नही, और एकमात्र सुपात्र स्वयं सतगुरु रामपाल जी भगवान है, **उनके अलावा यदि आप किसी भगत को दान करते है तो परिणाम भंयकर होंगे**

Note (साध संगति के माध्यम से हम सत् सेवक भाई बहन, **संगत को जगाने के लिए एक दूसरे को सहयोग राशि के तौर पर आर्थिक मदद करते है, नाकि दान कर रहे है ,**

गुरुदेव भगवान को दंडवत प्रणाम करने की सही विधि क्या है, कैसे करना चाहिए ?

गुरुदेव भगवान कहते है ,

अष्ट अंग से दंडवत प्रणामा - संध्या प्रातः करै निष्कामा, अर्थात अपने गुरुदेव भगवान को सुबह शाम या जितनी बार भी दंडवत प्रणाम करे, तो विशेष कसक और आधीनी के साथ करे, मर्यादा में रहकर किए गए एक दंडवत प्रणाम का एक अश्वमेध यज्ञ के तुल्य लाभ मिलता है

शरीर के अष्ट (8) अंग कौन कौन से है, दंडवत प्रणाम करते समय जिन्हें जमीन से स्पर्श करना पड़ता है ?

1 मस्तिष्क (माथा)
2 नाक
3 वक्ष (छाती)
4 पेट
5 पैरो के दोनों घुटने
6 हाथों की दोनों कोहनी
7 हाथों के दोनों पंजे
8 पैरो के दोनों पंजे

☞ गुरुदेव भगवान को निष्काम भाव से दंडवत प्रणाम करते समय, सबसे पहले जमीन पर घुटने टेककर हाथ जोडकर बैठ जाइये

☞ आपको जो भी मंत्र प्राप्त है **(प्रथम मंत्र या सतनाम मंत्र)** उस मंत्र का इच्छा अनुसार एक या दो जाप करें

☞ फिर खुली आँखो से गुरुदेव भगवान के सामने रखे स्वरूप के दर्शन करें

☞ फिर पेट के बल लेटकर दोनों हाथों को सामने सिर के ऊपर को फैलाकर, पैर आपस मे मिलाकर दाये पैर के पंजे पर बाये पैर का पंजा हल्का सा चढ़ाकर, डंडे की तरह सीधे लेटकर दंडवत प्रणाम किया जाता है,यदि इस विधि पूर्वक निष्काम भाव से गुरुदेव भगवान को अष्टांग दंडवत प्रणाम किया जायेगा, तो उस दंडवत प्रणाम का पूर्ण लाभ मिलता है

क्या दंडवत प्रणाम जमीन पर ही लेटकर करना अनिवार्य है ?

☞ गुरुदेव भगवान ने बताया कि, यदि आप घर पर है और सामान्य स्थिति में है तो दरबार साहेब के सामने जमीन (फर्स) पर लेटकर ही दंडवत प्रणाम करें ,

☞ दंडवत प्रणाम करने की जगह पर चद्दर या चटाई बिछा सकते है ,

☞ यदि मकान छोटा है और जमीन पर लेटकर दंडवत प्रणाम करने के लिए पर्याप्त जगह नही है, तो बेड (पलंग) पर भी दंडवत प्रणाम किया जा सकता है

☞ छत पर, बस या ट्रेन में कहीं जा रहे है, और दंडवत प्रणाम के लिए जगह है, तो वहां भी सीट पर या नीचे फर्स पर भी कपड़ा बिछाकर दंडवत प्रणाम कर सकते है, **(जब विशेष परिस्थिती में आप सीट पर पलंग पर या छत पर लेटकर दंडवत प्रणाम करते है, तो वह जमीन ही समझी जाती है)**

☞ यदि उपदेशी भाई बहन बीमार है, या अन्य किसी शारीरिक कारण से लेटकर दंडवत प्रणाम करने में दिक्कत है या माता बहने ग्रभ से है, तो ऐसी स्थिति में आप मन मे दंडवत प्रणाम का सच्चा भाव रखकर या आधा अधूरा दंडवत प्रणाम भी करते है, तो भी गुरुदेव भगवान को उतना ही स्वीकार्य होता है, और जब आप सामान्य स्थिति में आ जाये तो विधि पूर्वक दंडवत प्रणाम करना शुरू कर दे

☞ विशेष कारणवश यदि कभी दंडवत नही कर सके, ज्यादा ही

तबियत खराब है, हॉस्पिटल में है, या accident हुआ है, तो अपने मन मे सच्चा भाव रखकर किया गया मानसिक दंडवत प्रणाम भी गुरुदेव भगवान को उतना ही स्वीकार्य होता है

☞ मर्यादा तोड़कर किया गया दंडवत प्रणाम, गुरुदेव भगवान को स्वीकार्य नही होता है, चाहे दिन में सैकड़ो की संख्या में अष्टांग दंडवत प्रणाम क्यो ना करते रहे

क्या दोपहर में, असुर निकंदन रमैनी के समय दीपक जलाकर आरती करना जरूरी है ?

पुज़्य गुरुदेव जी के ज्ञान व भक्ति विधान अनुसार तीनो समय की आरती में ज्योति अवश्य प्रज्वलित करनी चाहिए, **लेकिन दोपहर के समय ज्यादातर भाई बहन अपने काम धंधे (मजदूरी) की वजह से घर से बाहर ही रहते है और आरती के समय ज्योति नही जला पाते है, अतः ऐसे भाई बहनों को गुरुदेव ने दोपहर की आरती के समय ज्योति ना जला पाने पर दोष मुक्त रखा है**

☞ यदि आप गृहणी है या आपका कामकाज अपने घर पर ही है या जहाँ आप मजदूरी करते है या आपका अपना ऑफिस है, **और आपको दोपहर की आरती के समय ज्योति जलाने में कोई दिक्कत नही है, तो आपजी अवश्य ज्योति लगाकर आरती कीजिए**

क्या नाम उपदेश लेने के बाद घर पर अखंड ज्योति जला सकते है?

ज्ञान को अच्छे से सुन व समझकर जब हम गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करते है तो उसी दिन से हमने प्रतिदिन घर पर पांच यज्ञ करने होते है - जिसमे एक यज्ञ हवन यज्ञ है अर्थात घर पर दरबार साहेब में गाय या भेंस के घी से रुई (कॉटन) की बत्ती बनाकर **(पूर्ण परमात्मा के आगे खड़ी ज्योत लगाने का विधान है)**

☞ गुरुदेव ने बताया कि आप रोजाना **100 ग्राम घी का हवन अवश्य करे, 100 ग्राम घी का मतलब है आपके घर मे 24 घंटे दीपक जलना**

☞ आप चाहे तो बड़े पात्र या दीपक में आधा या एक किलो घी डालकर भी दिन रात ज्योति जला सकते है **(यह आपकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है)** अन्यथा आपको सुबह और शाम की आरती के समय दीपक अवश्य जलाना है

☞ भगत ने अखंड ज्योति का संकल्प करके दीपक नही जलाना है, क्योंकि इस काललोक में, गुरुदेव व उनके मंत्रो के अलावा सब कुछ खंड होने वाला है, अखंड कुछ भी नही है (उदाहरण के लिए, **मान लीजिए आज आपने अखंड ज्योति का संकल्प करके ज्योत जला दी और कल को आंधी तूफान या भूकंप आया गया, तो आपका संकल्प तो खंडित हो गया)** अतः अखंड का संकल्प नही करना है, क्योंकि यह मनमाना आचरण हो जाता है, बाकी आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है तो आप दीपक में घी डालते हुए 24 घंटे ज्योत जला सकते है - **लेकिन अखंड का संकल्प ना करे**

घर पर दीपक (ज्योति) जलने के बाद, जो छोटी छोटी रुई की बत्तियां बच जाती है, उनका क्या करे ?

पूज्य गुरुदेव जी से नामदीक्षा प्राप्त करने के उपरांत, प्रत्येक भगत भाई बहन को अपने घर पर प्रतिदिन 5 यज्ञ करनी होती है, **जिसमे एक हवन यज्ञ है** अर्थात भगत ने अपने घर पर दरबार लगाकर, ईष्ट रूप में अपने गुरुदेव के स्वरूप (फोटो) को रखकर पूजा करनी होती है , और दरबार साहेब में गाय या भैंस के घी का, रुई की खड़ी बत्ती बनाकर दीपक जलाना होता है, **जिसे हवन यज्ञ कहते है ,** लगातार जलते रहने के कारण जब 4 - 5 दिन बाद रुई की बत्ती छोटी हो जाती है तो उसे बदलना पड़ता है, **उन जली हुई छोटी छोटी बत्तियों को एक डब्बे में जमा करते रहे, जब डिब्बा भर जाये तो किसी भी लोहे आदि के पात्र (थाल,**

परात, या तसला) में रखकर उन्हें अग्नि के साथ स्वाहा कर दे, स्वाहा होने के बाद जो राख बचती है उसे किसी बहते हुए पानी (नहर आदि) में जल प्रवाह कर दे) या जमीन में खड्डा खोदकर दबा दे, कहने का तात्पर्य है कि - उस राख को कही भी फेककर हमने अनादर नही करना है

नामखण्ड के विषय मे शंका का समाधान करे ?

परमात्मा कहते है ... **साहेब का नाम अखंड है और सकल सब खंड,** पूज्य गुरुदेव, सतगुरु रामपाल जी भगवान द्वारा दिया गया नाम अखंड है, वह किसी भी देश काल व परिस्थिती में खंडित नही होता है, **खंडित केवल मर्यादा होती है, अर्थात नामदीक्षा के समय हमें जो नियम निभाने के लिए बताये जाते है, वे नियम (मर्यादा) टूट जाने से ऑटोमेटिक भगत का कनेक्शन उस नाम से कट जाता है, और नाम जाप से मिलने वाला आध्यात्मिक व सांसारिक लाभ बंद हो जाता है** (यह अलग बात है कि मर्यादा से टूटने से पहले, मर्यादा में रहकर की गई सतभक्ति से आपको कुछ दिन, कुछ वर्ष या पूरा जीवन भी लाभ मिलते रह सकते है, लेकिन मोक्ष से तब तक वंचित ही रहेंगे, जब तक कि उस गलती के लिए गुरुदेव से हृदय से क्षमा याचना मांगकर वापस भक्ति शुरू नही करते है) **यदि गुरुदेव किसी आश्रम में है तो उन्ही के समक्ष जाकर हृदय से क्षमा याचना मांगी जाये, वर्तमान 2022 में गुरुदेव हिसार जेल में बैठे है, ऐसी स्थिति में या तो हिसार जेल में जाकर ही क्षमा याचना करने से नाम सुचारू होगा, या आपको ज्ञान और विश्वास है तो अपने घर पर दरबार साहिब के आगे उस गलती के लिए हृदय से क्षमा याचना करे और आगे भविष्य में कोई भी गलती नही करेंगे, इसके लिए आपने गुरुदेव को सच्ची अंतरात्मा से पुकार व प्रार्थना करके विश्वास दिलाना होगा,** अन्यथा अंतर्यामा गुरुदेव के आगे, फॉर्मेलिटी के लिए मन मे दोष रखकर की गई क्षमा याचना से नाम सुचारू नही होता है,

गुरुदेव ने बताया कि - जानबूझकर मर्यादा तोड़नी नही है, और

अनजाने में कोई मर्यादा खंडित होती है तो गुरुदेव क्षमा करते है, फिर भी किसी कारणवश मर्यादा खंडित हो भी जाती है, तो ह्रदय से घर पर ही गुरुदेव को दंडवत करके गलती की क्षमा याचना करे , **यदि पश्चाताप के साथ आत्मा से पुकार की जायेगी, तो गुरुदेव अवश्य क्षमा करते है** तथा मंत्रो का जाप करना, आरती करना व सत्संग सुनना ना छोड़े

लेकिन गुरुदेव तो सत्संग में कहते है कि
मर्यादा तोड़ोगे तो आपका नामखण्ड हो जायेगा ?

नामखण्ड का तात्पर्य है कि - मर्यादा टूट जाने से नाम जाप से मिलने वाले आध्यात्मिक लाभ बंद हो जाना, अर्थात गुरुदेव का पंजा उस भगत के सिर से, तब तक के लिए हट जाता है जब तक कि उपरोक्त विधि से क्षमा याचना करके वापस भक्ति शुरू नही करता है

जैसे स्कूल में एडमिशन हो जाने के उपरांत यदि विद्यार्थी कोई गलती करता है या अनुशासन में नही रहता है, तो टीचर उस बच्चे को कहता है कि यदि अबकी बार गलती की तो आपका स्कूल से नाम काट दिया जायेगा, ऐसा टीचर इसलिए कहता है ताकि बच्चे को भय बना रहे, बच्चा आगे से गलती ना करे और अनुशासन में रहकर पढ़ाई करे

परमेश्वर का नाम आदि अनादि है, इस नाम शक्ति (वचन) के सहारे परमात्मा ने सर्व सृष्टि की रचना की है, इसी शब्द शक्ति (नाम) से परमात्मा ने सूर्य चांद धरती आकाश ग्रह उपग्रहों की रचना की है व संचालन कर रहे है, अतः **जिस दिन परमात्मा का नाम खंड हो जायेगा उस दिन तो सृष्टि ही खण्डित हो जायेगी**

अतः पूज्य गुरुदेव द्वारा, हम नादान भक्तो को भक्तिमार्ग पर लगाए रखने के लिए बार बार सत्संगों में **नामखण्ड** शब्द बोलने के पीछे के उनके

भावार्थ को समझना चाहिए,

पांच यज्ञ क्या है, कैसे और कहाँ करनी होती है ?

सतभक्ति लेकर धरती पर प्रकट, पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी भगवान से उपदेश प्राप्त करने के बाद साधक को पांच यज्ञ करना अति आवश्यक है

यह पुस्तक 2022 में लिखी जा रही है और वर्तमान में गुरुदेव बरवाला कांड के कारण हिसार जेल में बैठे है, अतः जब तक गुरुदेव आश्रम में नही आते है, तब तक भगत भाई बहनों ने कस्तूरी वाले हिरण की तरह कही भी इधर उधर, गुरुदेव की आड़ में अपने धार्मिक धंधे के लिए सतलोक आश्रम मैनेजमेंट द्वारा खोले गए फर्जी आश्रमो या नामदान केन्द्रों पर भटकने की नही जरूरत नहीं है **बल्कि अपने अपने घर पर ही, जहाँ दरबार लगा रखा है, वहाँ गुरु भगवान को शब्द रूप में प्रकट मानकर, मर्यादा व विश्वास के साथ पांचों यज्ञ करने की जरूरत है**

1) **प्रथम ज्ञान यज्ञ -** पूज्य गुरुदेव जी का सत्संग सुनना, आरती करना, ज्ञान चर्चा करना, शब्द आदि सुनना ज्ञान यज्ञ में आता है

2) **दूसरा ध्यान यज्ञ -** सत्संग, सुमरण, आरती व ज्ञान चर्चा को ध्यान से सुनना ध्यान यज्ञ में आता है

3) **तीसरा हवन यज्ञ -** रोजाना घर पर जहां दरबार है, गाय या भैंस के देशी के साथ, रुई की बत्ती बनाकर खड़ी ज्योत लगाना हवन यज्ञ में आता है ज्योति लगाना आपकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है, आप चाहे तो 24 घंटे भी जला सकते है

4) **चौथा प्रणाम यज्ञ-** निष्काम भाव **(बिना किसी सांसारिक इच्छा)** से गुरुदेव को अष्ट अंग से दंडवत प्रणाम करना प्रणाम यज्ञ में आता है
शरीर के 8 अंग कौनसे है, जिन्हें दंडवत करते समय जमीन से स्पर्श करना होता है

सर्व प्रथम जमीन पर घुटनो के बल बैठकर, पहले 1 या 2 मंत्रो का जाप अवश्य करे, उसके बाद शरीर के आठ अंग जमीन से स्पर्श करते हुए गुरुदेव को दंडवत करे) आठ अंग है - माथा, नाक, छाती, पेट, दोनों घुटने, दोनों कोहनी, दोनों हाथों के पंजे और दाये पैर के पंजे पर हल्का सा बाये पैर का पंजा चढ़ाकर, दण्डवत् प्रमाण करे

5) **पांचवा धर्म यज्ञ -** धर्म भंडारे में पैसे से या अपनी श्रद्धा अनुसार आटा, दाल, चावल, घी आदि खाद्य सामग्री देकर सेवा लगाना व अपनी नेक कमाई का 10% या जितना आप चाहे, अपने गुरुदेव को दान करना धर्म यज्ञ में आता है

इसके अलावा ज्योति पाठ व 10 वे अंश का पैसा अपने सतगुरु देव जी के अलावा अन्य किसी भी भगत को नही देना चाहिए, क्योंकि पाठ करवाने के लिए भगत को अपने गुरुदेव से पहले आज्ञा लेनी पड़ती है, गुरु आज्ञा बिना करवाया गया पाठ लाभ की जगह हानि करता है, इसी वजह से आज गुरुदेव की गैर हाजरी में 90% भगत समाज, कुपात्र सतलोक आश्रम मैनेजमेंट हरियाणा को, ज्योति पाठ करवाते करवाते भी कष्ट उठा रहा है

क्योंकि गुरुदेव का विधान है .... **गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान गुरु बिन दोनों निष्फल है, चाहे पूछो वेद पुराण**

अतः गुरुदेव के बाहर आने तक सभी भाई बहन साध संगति से जुड़े रहे, वीडियो देखते रहे और विश्वास के साथ गुरुदेव को अपने साथ ही जानकर मर्यादा के साथ भक्ति करते रहे, तो कभी भी दुख नही होगा

नाम उपदेश प्राप्त करने के बाद,
हाथ में रक्षासूत्र व गले में लाकेट डालना जरुरी है या नही ?

पूज्य गुरुदेव जी ने बताया कि - **मासा घटे ना तिल बढ़े विधाता लिखे जो लेख - सच्चा सतगुरु मेटकर ऊपर मार दे मेख,** अर्थात परमात्मा के लिखे संस्कार को स्वयं परमात्मा ही मिटा सकता है, या फिर वह निर्गुण परमात्मा जब धरती पर सर्गुण रूप में सतगुरु बनकर प्रकट

होता है, तो अपनी यथार्थ भक्तिविधि देकर जीव के शुभ संस्कार बनवाता है, **इसके अलावा जीव के संस्कार या प्रारब्ध को, नाही तो हाथ मे बांधे जाने वाला रक्षासूत्र चेंज कर सकता है और नाही गले मे पहने जाने वाला लॉकेट**

पूर्ण सतगुरु से उपदेश प्राप्त कर लेने के बाद, साधक की रक्षा - रक्षासूत्र या लॉकेट नही बल्कि मर्यादा करती है, यदि प्राणी मर्यादा में रहता हुआ आजीवन भक्ति करता रहेगा तो गुरुदेव भगवान उसे कर्म का कोई कांटा नही लगने देता है

नामदीक्षा के समय दिये जाने वाले लॉकेट में उस पंथ के संचालक गुरु की फोटो होती है, **जिससे यह पहचान हो जाती है कि यह साधक किस संत का शिष्य है, तथा किस पंथ से जुड़ा हुआ है**
लॉकेट पहनने का दूसरा मतलब यह भी होता है की - **भगत को मर्यादा तोड़ने या कोई भी अनैतिक कर्म करने से पहले यह याद आ जाये कि, इस लॉकेट में विराजमान अंतर्यामी गुरुदेव भगवान मुझे पल पल देख रहे है - मेरी हर क्रिया व सोच पर पल पल उनकी नजर है,** ताकि साधक गलत काम करने से बचा रहे

उपदेश के बाद हाथ मे रक्षासूत्र बंधवाने का तीसरा कारण यह है - जैसे रक्षा बंधन आने पर लकीर के फकीर बनकर, बहन अपने भाई को रक्षासूत्र (राखी) बांधती है, राखी बंधवाने के बाद भाई उस बहन की मुसीबत में रक्षा के लिए बाध्य हो जाता है, **ठीक इसी तरह उपदेश प्राप्त करने के बाद जब हम आश्रम से या गुरुदेव से, हाथ मे रक्षासूत्र बंधवाते है - तो आजीवन सतगुरु देव जी को वचन देकर उनकी भक्ति करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो जाते है ,**

लेकिन ज्यादातर भगत समाज ने सिर्फ एक फॉर्मेलिटी के लिए ही लॉकेट व रक्षासूत्र पहन रखा है, उसके पहनने के पीछे के कारण का नही पता है

वास्तव में भगत की रक्षा मर्यादा करती है, गुरुदेव भगवान कहते है **संत शरण मे आने से आई टलै बला - जो मस्तिक में सूली हो, वो काँटे मैं टल जा,** अर्थात सतगुरु शरण मे आकर मर्यादित भक्ति करने वाले साधक के भाग्य में यदि मौत आनी हो, तो सतगुरु देव अपने आशिर्वाद से मौत को भी टाल देते है, उस दुःख को भगत के लिए हल्का कर देते है

सतगुरु शरणा छोड़कर चाहे लाख वर्ष जप कीन्ह -
इंद्री कर्म ना मोक्ष होवै फिर काल के आधीन

मर्यादा तोड़कर आप चाहे कितनी ही भक्ति करे, और चाहे हाथ में कितने ही रक्षासूत्र व गले मे कितने ही लॉकेट क्यो ना बांध लें, यदि आपके भाग्य में दुःख लिखा है तो वह सुख में परिवर्तित नही हो पायेगा

नामदीक्षा के शुरुआत में रक्षासूत्र व लॉकेट को ऐसे जाने, जैसे बच्चे को शांत करने या अपना कोई काम करवाने के लिए टॉफी देकर बहलाया जाता है, ताकि बच्चा उसके लालच में दादा का या पिताजी का वह कार्य कर दे , अन्यथा हम सब जानते है उस बच्चे का पेट उस टॉफी से नही बल्कि भोजन करने से या पेट भरकर दूध पीने से ही भरेगा

अतः ठीक इसी तरह भगत की रक्षा, रक्षासूत्र से नही बल्कि गुरु वचन में रहकर मर्यादा के साथ भक्ति करते रहने से गुरुदेव भगवान करेंगे

भगत समाज अच्छे से जानता है वर्ष 2018 में महाराष्ट्र के लातूर जिले से 2 मिनी बसों में लगभग 40 के आसपास भगत भाई बहन,

सतलोक आश्रम मैनेजमेंट हरियाणा के मनमाने आदेशो को गुरुदेव का आदेश समझकर, मनमुखि होकर हरियाणा के हिसार में पूज्य सतगुरु रामपाल जी भगवान की तारीख पर जा रहे थे, लेकिन उस मनमुखि कर्म का परिणाम यह निकला कि, सुबह 3 बजे राजस्थान के नागौर में उन बसों का एक्सीडेंट हुआ, जिसमे 13 भक्तो की दर्दनाक अकाल मौत हुई, इसके अलावा सैकड़ो भक्तो की अकाल मौत हिसार की तारीखों पर आते जाते समय अन्य तरीकों से भी हो चुकी है, **अब आप ही बताइए, क्या उन भक्तो ने अपने हाथ मे रक्षा सूत्र नही बांधा हुआ था ? या गले मे लॉकेट नही पहना हुआ था ?** उनके हाथों में रक्षासूत्र भी थे और गले मे लॉकेट भी थे **लेकिन मर्यादा में नही थे, जिस कारण गुरुदेव भगवान ने उनकी किसी तरह की कोई रक्षा नही की**

अतः आप रक्षासूत्र बांधे या ना बांधे, लॉकेट पहने या ना पहने, यह आपकी अपनी इच्छा पर निर्भर करता है, गुरुदेव की तरफ से बाध्यता नही है,**लेकिन रक्षा तो मर्यादा में रहकर की जा रही भक्ति से ही होगी**

बाकी, रक्षासूत्र बांधना या लॉकेट पहनना कोई बुरी बात नही है , आपजी चाहे तो पहन सकते है

कुछ दिनों के लिए मजबूरीवश या काम धंधे के चलते, घर से बाहर जाना पड़ जाये और ज्योति नही जला पाते है, तो क्या इसमें दोष लगता है ?

गुरुदेव कहते है ...

नर संसारी लगन मैं दुःख सह करोड़ा - परमार्थ के कारणे जितना सहै उतना थोड़ा , उपदेश प्राप्त होने के बाद, गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार प्रत्येक भगत भाई बहन को प्रतिदिन घर पर पाँच यज्ञ करना अनिवार्य होता है, जिसमे तीसरी यज्ञ हवन यज्ञ है , अर्थात घर मे गाय या भैंस के घी से ज्योति जलाना

यदि, उपदेशी भगत या बहन को कुछ दिनों के लिए किसी व्यापार या अन्य कारणवश घर से बाहर जाना पड़ जाये और ज्योति नही जला पाता है, तो ऐसी स्थिति में दोष नही लगता है लेकिन यज्ञ जरुर अधूरा रह जाता है, **उसके लिए भगत चाहें तो कुछ उपाय कर सकता है - जैसे**

☞ **यदि पीछे से परिवार में अन्य सदस्य उपदेशी है और ज्योत जलाते है, तो सामूहिक हवन यज्ञ होता रहता है**

☞या परिवार में कोई भी सदस्य उपदेशी नही है, तो भी आप किसी एक घर के सदस्य को ज्योति जलाने के लिए कह सकते है, जो किसी भी तरह का नशा व मांस आदि नही खाता हो, **ऐसा सदस्य स्वच्छता का ध्यान रखते हुए, हाथ पैर धोकर, दरबार साहेब में ज्योति जला सकता है**

☞ यदि कोई ऐसा सदस्य नही है, तो ज्योति ना जला पाने की मजबूरी के लिए गुरुदेव से क्षमा याचना अवश्य करे

☞ यदि माता बहन कभी कभार 2, 4 दिन के लिए पीहर चली जाती है, तो सर्व प्रथम मर्यादा का विशेष ध्यान रखे, और यदि पीहर में ज्योत जलाने की व्यवस्था हो जाये, तो कम से कम सुबह शाम की आरती के समय ज्योति अवश्य जलाये

घर में एक ही कमरा है, वही पर परमात्मा का दरबार लगा है, उस कमरे में पति पत्नी कर्म करने से मर्यादा खंड होती है या नही ?

गुरुदेव भगवान ने एक सत्संग में बताया कि, **यदि मंदिर में भगवान आ सकता है - तो क्या आपके घर पर नही आ सकता है**, जो शुध्दता और स्वच्छता मंदिर में होती है, वही शुध्दता यदि आप घर पर रखोगे तो भगवान घर पर भी आयेगा ,

इस सत्संग आधार से, यदि एक ही कमरा है और उसी में गुरुदेव का दरबार लगा रखा है, तथा जिस कमरे में नशा करने वाले व्यक्ति का प्रवेश भी वर्जित होता है, तो जाहिर सी बात है परमात्मा के दरबार वाले

कमरे में पति पत्नी व्यवहार की वर्जित है, **लेकिन मजबूरी वाली ऐसी स्थिति में कोई भी कर्म करने से पहले गुरुदेव भगवान को दंडवत प्रणाम करके क्षमा याचना अवश्य करे**

उपदेशी भगत पूजा पाठ में धूप या अगरबत्ती का उपयोग कर सकते हैं या नही ?

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार भगत द्वारा प्रतिदिन घर पर किए जाने वाले पांचों यज्ञ में धूप व अगरबत्ती का उपयोग नही करना है, क्योंकि धूप व अगरबत्ती जलाने से वातावरण भी प्रदुषित होता है व इनके धुंए से बहुत सारे सुक्ष्म जीव मरते है, धुँआ भगत के सुषमन द्वार को भी प्रभावित करता है **इसलिए गुरु आदेश अनुसार भगत ने केवल देशी घी का दीपक (ज्योति) ही जलानी है**

Note - गुरुदेव भगवान द्वारा पाठ प्रकाश करते समय धूप का प्रयोग किया जाता है, **लेकिन हम भक्तो को, घर पर प्रतिदिन किए जाने वाली साधना के लिए धूप व अगरबत्ती का प्रयोग करना मना है ,**

घर में शादी विवाह या अन्य कोई भक्ति नियमो के विरुद्ध कार्यक्रम होने पर, यदि परिवार वाले भगत से सलाह मांगते है तो क्या करे ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि - गलत काम करना और उसमें सहयोग देना, भक्तिमार्ग में दोनों ही कर्म पाप का भागी बनाता है, यदि उपदेशी भगत के घर मे शादी विवाह या अन्य कोई शास्त्रविरुद्ध कार्यक्रम होता है, और यदि घरवाले उससे जुड़ी किसी भी प्रकार की सलाह जैसे..

☞ फला काम कैसे करें

☞ यह क्रिया कैसे करनी होगी

☞ इस परंपरा में क्या करना होगा

☞ गहने कहा से बनवाये

☞ कितने कपड़े लगेंगे आदि, इस तरह की सलाह आपने बिल्कुल भी नहीं देनी है, क्योंकि आपके सलाह देने से उसमें आपका सहयोग हो जाता है जो मर्यादा खंड का कारण बनता है

ऐसी परिस्थिति में सलाह व सहयोग ना देने पर आपको भला बुरा भी सहना पड़ा सकता है, परिवार वाले नाराज भी हो सकते है, लेकिन ज्ञान हो जाने पर भक्ति चाहने वाली आत्मा के लिए सबसे ज्यादा महत्वता गुरुदेव की प्रसन्नता रखती है, नाकि घरवालों व दुनिया वालो की नाराजगी, गुरुदेव कहते है, जो संघर्ष इस भक्ति और भगवान के लिए आज से पहले महापुरुष करके चले गए है, यदि वर्तमान में हम उसका 5% भी कर लेंगे, तो भी परमात्मा बेड़ा पार लगा देगा, और वह 5% संघर्ष है वर्तमान में नाम उपदेश के बाद गुरुदेव द्वारा बताए जाने वाले नियम

गुरु की अनुपस्थिति (गैर हाजरी) में दर्शनों के लिए आश्रम में या तीर्थ धाम पर जाना चाहिए या नही?

गुरुदेव भगवान कहते है - **पर्वत पर्वत मैं फिरा कारण अपने राम - राम जैसे संत मिले, जिन सारे सब काम,** अर्थात पूर्ण गुरु की शरण मे आकर यह अनमोल तत्त्वज्ञान व अध्यात्म के विषय मे यथार्थ जानकारी होने से पहले, मैं उस परमात्मा की खोज में ना जाने कहाँ कहाँ भटका, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च, तीर्थ धाम पर, मेले में हर जगह भटका, लेकिन भगवान कही नही मिला, फिर मुझे स्वयं वह कबीर परमात्मा ही संत रूप में मिले, और मुझे वास्तविक ज्ञान दिया कि...

मोकूं कहा ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में ना तीर्थ में ना मूरत में ना एकान्त निवास में, ना मंदिर में ना मस्जिद में, ना काशी कैलाश में

नही प्राण में नही पिंड में, ना ब्रह्मांड आकाश में, ना मैं त्रिकुटी भवर गुफा में, सब स्वशन के स्वास में

खोजी होय तुरंत मिल जाऊ, एक पल ही कि तलाश में, कहै

कबीर सुनो भाई साधो, मैं तो हूँ विश्वास में

सर्व प्रथम तो सतगुरु से उपदेश व तत्त्वज्ञान लेने के उपरांत, ज्ञानी भगत को यह बात अच्छे से समझ मे आ जानी चाहिए की, वह परमात्मा जिसकी तलाश में पहले मैं, और अब दुनिया भटक रही है, वह कोई और नही बल्कि मेरे गुरुदेव भगवान स्वयं ही है, क्योंकि कबीर परमेश्वर की सतभक्ति में सतलोक का ज्ञान और समाधान संत रूप धारण करके वह कबीर परमात्मा स्वयं ही देता है, अन्यथा उस अमरलोक की जानकारी 21 ब्रह्मांड में सामान्य प्राणी तो छोड़िए, स्वयं ब्रह्मा विष्णु महेश दुर्गा और काल भी नही रखते है

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, अपने द्वारा रचित सृष्टि की यथार्थ जानकारी स्वयं कबीर परमात्मा ही आकर देते है, और तत्त्वज्ञान देने के लिए सत्संग भी वह परमात्मा स्वयं ही करते है

गरीब, निर्गुण सर्गुण एक है दूजा भ्रम विकार - निर्गुण साहेब आप है और सर्गुण संत विचार, अर्थात कबीर परमात्मा निर्गुण रूप में स्वयं ही सतलोक में सिंघासन पर विराजमान रहते है और सर्गुण रूप में संत रूप धारण करके स्वयं ही अपनी आत्माओं को यथार्थ ज्ञान देने के लिए काल लोक में प्रकट होते है , जैसे आज वर्तमान में स्वयं वह कबीर भगवान, 8 सितंबर 1951 से सर्गुण रूप में धरती पर प्रकट है

गुरुदेव भगवान अपनी अमृतवाणी में फरमाते है कि - **कबीरा वो नर अंध है जो गुरु को कहते और - हरि के रूठे ठौर है, पर गुरु रूठे नही ठौर,** अर्थात ज्ञान व उपदेश प्राप्त करने के उपरांत भी यदि साधक, अपने गुरु और भगवान में अंतर समझते हुए, भगवान और गुरु को अलग अलग मानता है तो वह कुत्ते (स्वान की) योनि प्राप्त करेगा

कहते है - **गुरु और गोविंद दो नही भाई - जो दो समझेगा वो दोजख (नरक) में जाही ,**
गुरु और गोविंद को दोई कर जानी - उसके घट में काल समानी,
अर्थात परमात्मा के भक्ति विधान अनुसार जो भगत या भगतमती, गुरु और भगवान को जब तक अलग अलग मानता है, तब तक उसके शरीर मे काल समाया रहेगा

अतः सर्व प्रथम तो हमारे दिलों दिमाग से यह भ्रमणा निकल जानी चाहिए कि,संत रामपाल जी स्वयं कबीर परमात्मा ना होकर एक सामान्य संत होंगे, यदि हम अपने घर या दरबार मे कबीर जी की समझे जाने वाली ढाढ़ी मूंछ वाली, हाथ से बनाई हुई काल्पनिक फोटो को भगवान का दर्जा देकर, दरबार मे या उस घर की दीवारों पर भगवान समझकर टांग रहे है, तो असली कबीर परमात्मा सतगुरु रामपाल जी भगवान उस घर और भगत से सैकड़ो कोस दूर है

और यह ज्ञान हो जाने के बाद नाही हमने उस दाढ़ी मूंछ वाली कबीर साहेब जी की समझे जाने वाली काल्पनिक फोटो का प्रकट दिवस मनाना है, और यदि अज्ञानता में कोई मनाता है तो हमने उस जगह शामिल भी नही होना है

आज 2014 बरवाला कांड के बाद भगत समाज को सतलोक आश्रम मैनेजमेंट हरियाणा द्वारा काल प्रेरणा से अज्ञानता की नींद में सुलाया जा रहा है, जबकि सतलोक आश्रम मैनेजमेंट हरियाणा व गुरुदेव के मुँह बोले बेटा बेटी पत्नी रिश्तेदार ज्ञान में हम भक्तो से काफी परिपक्व है, ऐसे में गुरुदेव के जेल जाने के बाद उनकी जिम्मेदारी बनती थी, कि हम नादान भक्तो को अपना छोटा भाई बहन समझकर, मर्यादा का पाठ पढ़ाते और सही से मार्ग दर्शन करते

लेकिन इन्होंने उल्टा संगत को अपने निहित स्वार्थ के चलते, ऐसे चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया, जहाँ से आगे का रास्ता ना उन्हें पता है और नाही झूठे आदेशो की गुलाम बेचारी भोली संगत को

इतिहास गवाह है,परमेश्वर कबीर जी के भक्तिमार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा उनके अपने (आस पास या साथ साथ रहने वाले) होते है, काल निरंजन उनके आसपास ही अपने दूत भेजता है
600 वर्ष पहले परमेश्वर कबीर जी ने, जिस मृत लड़के को जीवित करके कमाल नाम रखकर अपने पुत्र की तरह पाल पोषकर बड़ा किया, शिक्षा और दीक्षा दी अंत मे वही कमाल नाम का लड़का गुरुद्रोही बना और संगत को कबीर जी से दूर करने लगा

उसके बाद जब परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी के द्वारा अपने मार्ग को आगे बढ़ाने की युक्ति सोची, तो काल निरंजन ने धर्मदास जी के पुत्र नारायण दास के रूप में अपना मृत्यु अंध नाम से दूत भेज दिया,
ठीक इसी तरह आगे चलकर आदरणीय गरीब दास जी (गाँव छुड़ानी जिला झज्झर हरियाणा) के 12 वे पंथ में भी ज्ञान का अज्ञान करवा दिया, आज गरीब दास पंथी संत महंत, परमेश्वर कविर्देव देव जी को श्री कृष्ण का अवतार कहते है, उनकी स्वयं की पुस्तकों में वर्णित है

पुण्यात्माओं विचार कीजिये-फिर आज वह काल निरंजन कैसे चुप बैठ सकता है, क्योंकि आज तो स्वयँ वह कबीर परमात्मा 8 सितंबर 1951 को गाँव धनाना जिला सोनीपत हरियाणा में संत रामपाल जी महाराज जी के रूप में प्रकट होकर - आदरणीय गरीब दास जी की वाणी **12 वे पंथ हम ही चल आवै, सब पंथों को मिटाकर एक पंथ चलावै** के अनुसार 1994 से यथार्थ 13 वें कबीर पंथ के संचालक व शास्त्र अनुसार भक्ति प्रदान करके मोक्ष का मार्ग दिखा रहे है, तो चिंतित होकर काल निरंजन ने अपने सारे के सारे दूत, उन्ही के आसपास, परिवार व रिश्तेदारों के रूप में ही पैदा कर डाले

मुख्य दूत - संत जी का छोटा भाई महेंद्र - जो बरवाला कांड में अपने बड़े भाई के साथ गद्दारी करके, उन्हें मुसीबत में छोड़कर अकेला भाग निकला, और 2014 से 2022 तक भगोड़ा बनकर घूम रहा था, लेकिन अब पकड़ा जा चुका है, और पुलिस की गिरफ्त में है

दूसरे दूत - संत जी के चारो बेटा बेटी, पत्नी, रिश्तेदार, गाँव नगर में फर्जी आश्रम व फर्जी नामदान केंद्र खोलकर बैठे कोर्डिनेटर व नामदान संचालक है - जो कि महेन्द्र के भय से और संगत के दान का कुछ हिस्सा रखकर, गांधी जी के तीन बंदरो की तरह सच को सुनना, देखना और बोलना बिल्कुल भी पसंद नही करते है

रही बात संगत की, वह तो कुम्भकर्ण की भी नानी निकली, बेचारा कुम्भकर्ण, 6 महीने में एक बार तो नींद से अवश्य जाग जाता था, लेकिन यहाँ तो 2014 बरवाला कांड के बाद से ही संगत बेहोश पड़ी है

आज देश विदेश में लाखो की संख्या में, तत्त्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज जी के भगत है - लेकिन उनमें से 70% लोग तत्त्वज्ञान से कोसो दूर है

आंखों के सामने, संत जी के कलयुगी परिवार के द्वारा भक्ति विरुद्ध कर्म करवाकर, संगत की मर्यादा खंडित करवाई जा रही है, लेकिन ना जाने किस भय के चलते लोग मूक दर्शक बने हुए है

संत रामपाल जी महाराज जी का राजनीति से 36 का आंकड़ा है, लेकिन फिर भी संगत को उसी परमसंत का आदेश बताकर, उनसे राजनेताओं को वोट व सपोर्ट करवाया जाता है

संत रामपाल जी महाराज जी ने कभी भी किसी जाति विशेष का या समुदाय का समर्थन नही किया, लेकिन आज उन्ही का आदेश बताकर, भगत समाज को हरियाणा के जाट आरक्षण में बैठा दिया जाता है, संत रामपाल जी महाराज जी ने कभी भी, अपने भक्तो से रक्तदान व देहदान नही करवाया, लेकिन आज उन्ही का आदेश बताकर, सतलोक आश्रम मैनेजमेंट ने इसे अपना धंधा बना लिया है

संत रामपाल जी महाराज जी ने 27 वर्षों में, एक आश्रम के अलावा कही कोई दूसरा आश्रम या नामदीक्षा केंद्र नही खोला, लेकिन 2014 में उनके जेल जाते ही, उनके कलयुगी परिवार ने संगत के भोलेपन का फायदा उठाकर, अपने धार्मिक धंधे के लिए जगह जगह पर 600 से ज्यादा नामदीक्षा केंद्र व कई आश्रम खोल डाले, जहाँ आये दिन ज्योति व पाठ के नाम पर भगत समाज के साथ करोड़ो में ठगी की जा रही है... और भी अनेक भक्ति विरुद्ध कर्म करवाकर, संगत को धीरे धीरे काल बली की गोद मे बैठाया जा रहा है , और इसी के परिणाम स्वरूप आये दिन भगत समाज को अकाल मौतों का सामना करना पड़ रहा है

2014 बरवाला कांड के बाद से पूज्य गुरुदेव हिसार जेल में बैठे है, पीछे से उनके मार्ग को उन्ही के मुँह बोले भाई बंधुओ ने काल प्रेरित होकर व संगत की नादानी व भोलेपन का फायदा उठाकर, गुरु आदेश बिना जगह जगह नामदीक्षा केंद्र व आश्रम खोलकर धर्म को धंधे में बदल दिया है, भोली संगत को भी लगता है कि गुरुजी का असली आशिर्वाद,हमे या तो इन नामदान केन्द्रों पर मिलेगा या आश्रमो में, लेकिन यह संगत की अज्ञानता है जो ऐसा सोचती है

गुरुदेव भगवान कहते है -
घट ही मैं गंगा, घट ही मैं जमुना, घट ही मैं है जगदीश सतगुरु तारेंगे, अर्थात यह अनमोल तत्त्वज्ञान लेने के बाद भी यदि आप नाभि में व्याप्त कस्तूरी वाले हिरण की तरह, उस महक को प्राप्त करने के लिए इधर उधर (आश्रमो में) भटक रहे है, तो समझ लेना अभी तक आप सतगुरु से प्राप्त तत्त्वज्ञान को अपने ह्रदय में नही समा पाये है

गुरुदेव कहते है ... **नारी कहावै पीव की, रहै और संग सोय - तन सौप्या मन दिया नही, कभी ना सुहागन होय,** ऊपरी मन से तो गुरुजी

को भगवान कहते है और उनके चरण धोकर चरणामृत भी पी रहे है, दंडवत प्रणाम भी कर रहे है , लेकिन मन से फिर भी भगवान किसी और को (दाढ़ी मूंछ वाली फोटो) ही मान रहे है, ऐसी आत्मा कभी भी सुहागन अर्थात मोक्ष को प्राप्त नही हो सकती ,

ज्ञान सम्पूर्ण हुआ नही और हृदय नही समाये - देखादेखी भक्ति का, रंग नही ठहराये,यदि ज्ञान को आधार ना बनाकर, देखा देखी भीड़ का हिस्सा बनकर भक्तिमार्ग पर चलोगे, तो सफलता नही मिल पायेगी

यदि आपको लगता है कि गुरुदेव भगवान आश्रम में या नामदान केंद्र पर ही मिलेंगे, या वहां जाने से और चढ़ावा चढ़ाने से प्रसन्न होंगे, तो फिर यह सच मान लेना कि, आपके द्वारा अपने घर पर दरबार लगाकर, तीनो समय की आरती करना, दंडवत करना, मंत्र करना, ज्योति जलाना सिर्फ एक दिखावा है ढोंग है पाखंड है यदि आपको इतना ही विश्वास नही है कि - गुरुदेव भगवान स्वयं परमात्मा है, शब्द स्वरूपी राम है, अंतर्यामी व कण कण में व्याप्त है

गुरुदेव भगवान ने सत्संग में बताया की - उपदेश लेने के बाद भगत का घर एक मिनी आश्रम बन जाता है, जहाँ तीनो समय भगवान की आरती होती है, चर्चा होती है, सत्संग सुनते है भगवान के आगे ज्योति जलाई जाती है

गुरुदेव कहते है - **दिल अंदर दीदार दर्शन बाहर अंत ना जाइये - काया माया कहा बपुरी, तन मन शीश चढ़ाइये**, नाम उपदेश के बाद गुरु भगवान, भगत के साथ पल पल साये की तरह रहते है, वर्ना यह काल हमे एक पल भी मर्यादा में नही रहने दे, और ऐसे समर्थ भगवान को यदि हम पत्थरो से बने आश्रमो में ढूंढ रहे है, तो फिर हमारे और उन जगत वाले ज्ञानहीन लोगो मे रति भर भी अंतर नही है, जो भगवान को पत्थरो से बने मंदिर और मस्जिद में खोजते रहते है

यदि गुरुदेव भगवान साक्षात शरीर रूप में किसी आश्रम में विराजमान हो, तो उनके शारीरिक दर्शन करने के लिए हमारा उस आश्रम में जाना उचित है, और यदि गुरुदेव उन आश्रमो में विराजमान नही है, जैसे आज 2022 में हिसार जेल में बैठे है, तो ऐसी स्थिति में उन आश्रमो में जाना मूर्खता है इस मूर्खता में तो बाकी दुनिया भी धर्म कर्म के नाम पर लुट ही रही है

गुरुदेव कहते है -

स्वर्ग सात आसमान पर भटकत है मन मूढ़ - खालिक तो खोया नही, इसी महल में ढूंढ अर्थात हे नादान प्राणी, तू क्यों उस घट घट और घर घर मे विद्यमान गुरुदेव भगवान को अपने से दुसरी जगह ढूंढता हुआ फिर रहा है, जब तुझे गुरु रूप में परमात्मा मिल गया है, मोक्ष प्राप्ति का मंत्र और विधि बता दी है, फिर तू क्यों कस्तूरी वाले हिरण की तरह दान धर्म के नाम पर मंदिर मस्जिद और आश्रमो में धक्के खाता फिर रहा है, **खालिक तो खोया नही इसी महल में ढूंढ,** अर्थात वह परमात्मा (खालिक) गुम नही हुआ है, उसे इसी शरीर (महल) में खोज, अर्थात तुझे गुरुदेव भगवान ने जो सतनाम रूपी अनमोल मंत्र दिया है, मर्यादा में रहकर स्वास उस्वास के साथ उसकी साधना कर और उस शब्द रूपी गुरुदेव के दर्शन अपने दिल अर्थात शरीर मे कर, वो परमात्मा आपसे दूर नही है, यदि आपको उसके ज्ञान और मंत्रो पर विश्वास है तो?

मोकू कहा ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में - खोजी होय तुरंत मिल जाऊ एक पल ही कि तलाश में

अतः सभी भाई बहनों से प्रार्थना है, थोड़ा ज्ञान को आधार बनाओ, गुरुदेव भगवान की मेहनत और मिशन को सफल बनाओ, ज्ञान को आधार बनाये बिना हमारे में से कोई भी भगत यहां से पार नही हो पायेगा, इसी कारण इस बिचली पीढ़ी में गुरुदेव ने हमे पैदा किया है,

अक्षर ज्ञान देकर शिक्षित किया है, वर्ना इस शिक्षा की कोई भी आवश्यकता नही थी - यदि आज भी हम पहले की भांति अंध विश्वास और भावनाओं में बहकर ऐसे चलते रहेंगे तो.....

अतः जब तक गुरुदेव भगवान, हिसार जेल से किसी आश्रम में नही आ जाते है, तब तक अपने घर को ही असली आश्रम व भगवान का दरबार समझे, जो पांच यज्ञ हमे गुरुदेव ने करने के लिए दी है, उन पांचों यज्ञ को करते रहिए, और साध संगति से जुड़कर ज्ञान आधार बनाकर, दृढ़ता और विश्वास के साथ भक्तिमार्ग पर निर्भयता के साथ आगे बढ़ते रहिए

मेरा पति अनुपदेशी है, तथा वह नौकरी करता है, दान धर्म के लिए पैसे नही देता है, मैं 10 वे अंश या सेवा के लिए पैसे कैसे निकालूँ - कोई समाधान बताये ?

भगत सेऊ सम्मन व नेकी की कथा सुनाते समय गुरुदेव भगवान ने बताया कि, जब अपने गुरुदेव भगवान को भोजन करवाने के लिए कही से भी आटे का प्रबंध नही हुआ, तो नेकी ने कहा आप दोनों बाप बेटे किसी लालाजी की दुकान से जाकर गुरुजी के लिए एक किलो आटा चोरी करके ले आओ

छोटे बच्चे सेऊ ने कहा माता जी, गुरुदेव सत्संग में कहते है कि चोरी करना पाप है, जिस घर मे चोरी का आटा खाया जाता है उनका तो सत्यानाश हो जाता है

गरीब - सेऊ माता से कहै, चोरी आटा खाते नाही
माल बिराना मुसहरे, जिनका सब कुछ जाही

तभी बहन नेकी ने कहा -

माता पुत्र से कहै, सुन सेऊ सुर ज्ञान, या में नही अकाज है चोरी करि दे दान, बेटा यदि आज इस पापी नगरी से भोजन खाये बिना हमारे गुरु

भगवान भूखे चले गए, तो इस नगरी का सत्यानाश हो जायेगा, इस नगर को बचाने के लिए यदि मजबूरी में दान धर्म के लिए चोरी भी करनी पड़ जाए, तो पीछे मत हटना, और वैसे भी हम गुरुदेव और साथ मे आये दो भक्तो जितना ही आटा चोरी करेंगे, अपने लिए नही

इस तरह पिता पुत्र ने परमार्थ के लिए चोरी की , और गुरुदेव भगवान ने बताया कि उस चोरी से गुरुदेव भगवान नाराज नही बल्कि अखंड प्रसन्न हुए

ठीक इसी तरह, यदि किसी बहन का पति अनुपदेशी है, दान धर्म के लिए पैसे नही देता है तो ऐसी स्थिति में दान धर्म ना करने से माता बहनों को दोष नही लगता है, अंतर्यामी परमात्मा को आप ह्रदय से दंडवत प्रणाम करते हुए यदी दान धर्म का संकल्प भी कर लेंगी, **की हे गुरुदेव भगवान मुझ अभाग्न ने किसी जन्म में दान धर्म नही किया, जिस कारण आज घर मे धन होते हुए भी दान नही कर पा रही हूँ, मैं आपको दान का संकल्प करती हूँ, आप अपनी दासी के संकल्प को स्वीकार करे**

तो गुरुदेव भगवान कहते है...
साधु भूखा भाव का धन का भूखा नाही - जो कोई धन का भूखा वो साधु भी नाही, इस तरह भाव के भूखे दयालु गुरुदेव से यदि सच्ची अंतरात्मा से संकल्प किया जायेगा, तो अवश्य सुनते है

दूसरा तरीका है - आपको पति के द्वारा घर खर्च के लिए जो पैसा दिया जाता है, आप उसमें से थोड़ा थोड़ा करके दान धर्म व सेवा के लिए पैसा निकाल सकती है, दान चाहे 10 रुपया हो या 10 लाख का, गुरुदेव देने वाले भगत के भाव की कीमत देखते है, पैसों के वजन की कीमत नही, **बाकी - ज्ञान आधार कहता है,** सेऊ सम्मन के समय व परिस्थिति में तथा

वर्तमान के समय व परिस्थिति में काफी अंतर है, अतः वर्तमान में किसी भी बहन ने पति की सैलरी से चोरी करके या झूठ कहकर दान नही करना है, सच्ची नियत और मर्यादा में रहकर भक्ति करते रहेंगे, तो वह भी अपने आत्म कल्याण के लिए एक बहुत बड़ी सेवा है, जिससे परमात्मा का काम आसान होगा

घर में पत्नी या माता पिता के साथ थोड़ा बहुत मनमुटाव या झगड़ा होने पर मन करता है, घर त्यागकर कही और चले जाये, ऐसी स्थिति में क्या निर्णय ले ?

गुरुदेव भगवान कहते है ,

मन के मते ना चालिए, मन है पक्का दूत - ले डूबै दरिया मैं, फिर जावै हाथ से छूट, नाम उपदेश लेने के बाद भगत के ऊपर मन (काल) हर तरह से पूरी कोशिश करेगा कि, इस प्राणी को वापस अपने पिंजरे में डाला जाये लेकिन मर्यादा में रहकर भक्ति करते रहेंगे तो गुरुदेव भगवान के आशिर्वाद से मन की हर चाल असफल होती चली जायेगी

नाम उपदेश लेने के बाद परिवार के अन्य नाम रहित व्यक्तियो के साथ भक्तिमार्ग की क्रियाओं को लेकर थोड़ा बहुत मन मुटाव होना स्वाभाविक है, क्योंकि उपदेश के बाद उनकी क्रियाओं में और भगत की क्रियाओं में दिन रात का अंतर हो जाता है, ऐसी स्थिति में यह सोचकर ज्यादा समझदारी भगत ने ही दिखानी पड़ेगी, कि ये लोग आध्यात्मिक ज्ञान से अनजान व काल प्रेरित है, साथ ही उपदेश के बाद भगत की परीक्षा भी शुरू हो जाती है, कि भगत के अंदर भक्ति के पाँच गुणों (**शील संतोष विवेक दया क्षमा)** का कितना प्रवेश हो पाया है

ज्ञान आधार से मन मुटाव के ऐसे समय मे, भगत को गुरुदेव के सत्संग याद रहने चाहिए कि, ऐसी स्थिति पैदा करवाकर काल निरंजन मुझे अशांत व भक्ति से विचलित करने का प्रयास कर रहा है, गुरुदेव ने

बताया कि ऐसे समय मे भगत ने अपनी तरफ से उनके बराबर होकर या लड़ाई झगड़ा करके अपनी मर्यादा नही तोड़नी है, **जैसे पागल कुत्ते से सामना हो जाये तो उसे मारा नही करते बल्कि उससे बचने का जो भी तरीका है वह अपनाना चाहिए**

गुरुदेव भगवान, आपको भगत बनाकर उस घर मे आपके माध्यम से बाकी व्यक्तियो के भी भक्ति संस्कार मजबूत करके, अपनी शरण मे लेना चाहते है, लेकिन काल चाहता है कि इस घर मे लड़ाई झगड़ा करवाकर, इस भक्ति करने वाले व्यक्ति को यहां से बाहर निकाल दूँ , ताकि आज के बाद इस घर मे परमात्मा की आरती, सत्संग, सुमरण की आवाज ही नही रहेगी, तो बाकी लोग भी मेरे ही जाल में फंसे रहेंगे

अतः ऐसी स्थिति में उपदेशी भगत ने और अधिक दृढ़ हो जाना चाहिए, ताकि आपके द्वारा उस घर मे भक्ति प्रवेश रहेगी तो आज नही तो कल, बाकी सदस्य भी परमात्मा की शरण मे आने को मजबूर होंगे, अन्यथा जल्दबाजी में आकर यदि आपने घर त्यागने का निर्णय कर लिया, तो नाही आप सही से भक्ति कर पाएंगे, और नाही पिछे से काल निरंजन परिवार में सुख शांति रहने देगा

कुछ परिस्थितियों में भगत का परिवार में रहकर भक्ति करना बड़ा मुश्किल हो जाता है, जैसे आप और आपकी पत्नी दोनों उपदेशी है, और माता पिता ने निर्णय कर लिया कि, यदि यहाँ रहना है तो इस भक्ति को छोड़ना ही पड़ेगा वर्ना आप इस घर मे नही रह सकते है, ऐसी स्थिति में भगत ने गुरुदेव से प्रार्थना करके, उस परिवार को छोड़कर किसी अन्य जगह किराए पर रहकर अपना कोई भी काम या मजदूरी करके भक्ति करनी चाहिए (या जैसी भी व्यवस्था हो) अन्यथा सामान्य हल्के फुल्के मनमुटाव से परिवार त्यागना उचित नही होता है

क्या हर बार भोजन या नाश्ता करते समय अन्न देव की आरती करना जरूरी है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि उपदेशी भगत ने भोजन करने से पहले और बाद में अनन्देव की आरती अवश्य करनी चाहिए

क्या अन्न देव की आरती बोलकर करना जरूरी है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, अन्न देव की आरती बोलकर भी कर सकते है और मन ही मन मे (मानसिक) भी कर सकते है

भोजन करने से पहले अन्न देव की छोटी आरती कैसे करे ?

थाली में भोजन रखने के बाद, रोटी का एक टुकड़ा तोड़ ले, उस टुकड़े पर थाली में रखी समस्त सामग्री (सब्जी, चावल, सलाद) का थोड़ा थोड़ा अंश उस रोटी के टुकड़े पर रख दे , उसके बाद निम्न वाणियाँ बोलकर वे अन्न देव की छोटी आरती करके भोजन करना प्रारम्भ करे **हे प्रभु आपका बचा खुचा भोजन आपके दास / दासी को मिलता रहे, हमारे सर्व दुःखो का निवारण करे** (अन्न देव की छोटी आरती, भक्तिबोध पुस्तक के पेज न. 66 पर लिखी हुई है)

भोजन करने के बाद अन्न देव की बड़ी आरती कैसे करे ?

भोजन करने के बाद अंत मे, गुरुदेव को भोग लगाया हुआ रोटी का वह टुकड़ा खायें उसके बाद अन्न देव की बड़ी आरती करें (अन्न देव की बड़ी आरती, भक्तिबोध पुस्तक के पेज न. 67 पर लिखी हुई है)

दिन में 5 बार भोजन या नास्ता करते है, तो क्या हर बार अन्न देव की दोनों आरती करना जरूरी है ?

जी हाँ - दिन में जितनी बार भी भोजन या नास्ता करे, तो हर बार दोनों आरती करना जरूरी है

मैं अनपढ़ हूँ - अन्नदेव आरती कैसे करूँ ?

यदि आप अनपढ़ है तो भक्तिबोध पुस्तक अपने साथ रखे, जब भी भोजन या नाश्ता करे तो किसी अन्य उपदेशी या अनुपदेशी व्यक्ति से पढ़वा सकते है, या जब तक दोनों आरती आपको याद नही हो जाती है, तब तक गुरुदेव की आवाज में अन्न देव की आरती के वीडियो या ऑडियो का भी सहारा ले सकते है ,

लेकिन याद हो जाने के बाद स्वयं ही करे

यदि परिवार में सभी सदस्य उपदेशी है, तो प्रथम मंत्र का जाप एक साथ बैठकर, बोलकर कर सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार, प्रथम मंत्र का जाप दो तरह से, बोलकर या मानसिक रूप से कर सकते है, यदि सभी उपदेशी है तो प्रथम मंत्र का जाप एक साथ बोलकर भी कर सकते है, **लेकिन किसी अनुपदेशी व्यक्ति की उपस्थिति में बोलकर जाप करने का आदेश नही है**

घर मे छोटा बच्चा है और अनुपदेशी है, क्या उसके सामने प्रथम मंत्र का बोलकर जाप कर सकते है ?

यदि बच्चा उपदेशी भगत का है और उसकी आयु 3 वर्ष से कम है, तो प्रथम मंत्र का जाप उनकी उपस्थिति में भी बोलकर कर सकते है, लेकिन 3 वर्ष से बड़े बच्चे के सामने नही, 3 वर्ष के बाद बच्चे को उपदेश दिलवाना अनिवार्य है

यदि बच्चा किसी अनुपदेशी रिश्तेदार या भाई का है, तो उसके सामने मंत्र जाप कर सकते है या नही ?

किसी अन्य अनुपदेशी के बच्चो के सामने प्रथम मंत्र का बोलकर जाप नही करना है, चाहे बच्चा 3 वर्ष से कम उम्र का ही क्यो ना हो

उपदेशी भगत के बच्चे सरकारी स्कूल में खिलाए जाने वाला Mid day meal (दोपहर का खाना) खा सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान के तत्त्वज्ञान आधार से उपदेशी भगत के बच्चे, सरकारी स्कूल में mid day meal अर्थात दोपहर के समय सरकार की तरफ से मुफ़्त में खिलाये जाने वाला भोजन नही खा सकते है ,

मुफ्त का सरकारी राशन खाने से भगत के ऊपर तीन लोक का भार चढ़ता है, क्योंकि जनता के टैक्स से ही सरकार सारी सुविधा उपलब्ध करवाती है और टैक्स के रूप में सरकार के पास आने वाला 90% पैसा बेईमानी और 2 नंबर से धंधा करने वालो की काली कमाई से आता है, **और ऐसी कमाई का अन्न खाने वाला नरक का भागी होता है, और वैसे भी उस खाने में व बनाने में शुध्दता का ख्याल नही रखा जाता है,** अतः उपदेशी भक्तो को चाहिए कि अपने बच्चे को घर से खाना खिलाकर या टिफिन साथ मे देकर स्कूल भेजे, **और बच्चो को भी समझाकर स्कूल भेजे, की हम समर्थ सतगुरु के बच्चे है, दुनिया भूख से मर सकती है लेकिन समर्थ सतगुरु का मर्यादित भगत नही**

उपदेशी बच्चे स्कूल मे गायत्री मंत्र बोल सकते हैं या नही ?

गुरुदेव भगवान ने बताया की...

गायत्री मंत्र, यजुर्वेद अध्याय न. 36 का श्लोक न.3 है, जिसमे शुरुआत में ओम मंत्र नही है, अतः स्कूल में गायत्री मंत्र बोलते समय उपदेशी भगत के बच्चो ने शुरू में **'ओम'** नही बोलना है, बाकी मंत्र बोल सकते है

गायत्री मंत्र पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब की महिमा का श्लोक है, और ओम मंत्र काल निरंजन का है, **अतः पूर्ण परमात्मा की महिमा से पहले, ओम मंत्र बोलना पूर्ण परमात्मा की तौहीन है**

उपदेशी भगत किसी दूसरे अनुपदेशी व्यक्ति का झूठा खाना या उसके साथ भोजन कर सकता है या नही ?

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार उपदेशी भाई बहनों ने किसी भी अनुपदेशी व्यक्ति का झूठा भोजन नही खाना है, किसी अनुपदेशी रिश्तेदार आदि के साथ एक जगह बैठकर साथ मे भोजन अवश्य किया जा सकता है, लेकिन उसके साथ एक ही बर्तन में भोजन नही करना है ,

क्योंकि अनुपदेशी व्यक्ति काल उपासक होने के चलते 3 लोक का भार अपने ऊपर लेकर चलता है, उसका झूठा भोजन या अन्य वस्तु खाकर मर्यादा खंडित होती है

क्या किसी अनुपदेशी व्यक्ति के कपड़े प्रयोग कर सकते है ?

आवश्यकता पड़ने पर अनुपदेशी के कपड़े (वस्त्र) प्रयोग कर सकते है

मेरा बच्चा छोटा है, मेरे साथ खाना खाने की जिद्द करता है, उसके साथ खाना खाने से मर्यादा खंड होगी या नही ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, 3 वर्ष की उम्र के बाद बच्चे को परमात्मा के मार्ग से जोड़ देना चाहिए, क्योंकि 3 वर्ष के उपरांत बच्चा, चलना बोलना व समझना शुरू कर देता है , यदि आपका बच्चा 3 वर्ष से कम उम्र का है तो उपदेशी माता पिता के साथ भोजन कर सकता है, जब 3 वर्ष का पूरा हो जाये तो उसके बाद या तो उसे गुरुदेव से नामदीक्षा दिलवाये अन्यथा उसके साथ एक ही बर्तन में भोजन करना बंद करे, अन्यथा मर्यादा खंडित होगी

उपदेशी भगत, मीठी सुपारी व मीठा पान खा सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान के आदेश व ज्ञान आधार से उपदेशी भगत भाई बहनों व बच्चो ने मीठी सुपारी व मीठा पान भी प्रयोग नही करना है, भक्तिमार्ग में वर्जित है

क्या भगत कमीशन से संबंधित काम कर सकता है , भगत को कमीशन लेना चाहिए या नही ?

गुरुदेव ने बताया कि भक्तिमार्ग में हक हलाल की कमाई का बहुत बड़ा महत्व है , किसी की आत्मा दुखाकर या धोखा देकर रिश्वत, मिलावट आदि से की गई कमाई भक्तिमार्ग में जहर के समान है

एक सत्संग में पूज्य गुरुदेव जी ने बताया कि - जिसके घर मे अनैतिक तरीके से की गई कमाई का पैसा आता है - तो उस व्यक्ति ने अपने परिवार के सदस्यों को जहर देने की आवश्यकता नही पड़ेगी अर्थात वह कमाई ही जहर है, जो भविष्य में महादुःख का कारण बनेगी, किसी लाईलाज बीमारी या भयानक दुर्घटना के रूप में

अतः यदि किसी उपदेशी बहन का पति, पिता या ससुर, इस तरह की अनैतिक कमाई लाकर आपको देता है, तो गुरुदेव ने बताया कि उस पैसे को भगत भाई बहनों ने हाथ भी नही लगाना है

कमीशन की कमाई दो तरह की होती है,
एक जायज और दूसरी नाजायज!

जायज कमीशन या कमाई कौनसी है ?

यदि भगत अपने पास से कुछ पैसा लगाकर कोई काम धंधा शुरू करता है, जैसे किराने की दुकान, फल सब्जी की दुकान, टिकट काउंटर या अन्य कोई भी ईमानदारी का व्यापार, और उसमें जो भी मुनाफा होता है वह जायज है

नाजायज कमीशन या कमाई कौनसी है ?

यदि आप स्वयं की जेब पैसा ना लगाकर, दो पार्टियों के बीच एजेंट (दलाल) बनकर पैसा कमाते है तो वह कमाई नाजायज है जैसे दो व्यक्तियों के बीच कमीशन लेकर प्रॉपर्टी का सौदा करवाना

☞ Share मार्किट में पैसा इन्वेस्ट करना भी, भक्तिमार्ग में नाजायज कमाई के अंतर्गत आता है , क्योंकि Share मार्किट में पैसा लगाना एक जुआ है रिस्क है , Share मार्किट में अधिकतर लोग अपनी 2 नंबर की कमाई का पैसा इन्वेस्ट करते है , अतः ज्ञान आधार से यह कार्य भगत के लिए मानसिक परेशानी व हराम की कमाई के अंतर्गत आता है

☞ MLM मल्टी लेवल मार्केटिंग कंपनी में पैसा लगाने से पहले या वहाँ पर जॉब करने से पहले 100 बार विचार करे, इस तरह की ज्यादातर कंपनी कुछ समय तक आपको विशेष पैकेज, सैलरी, या इंसेंटिव देकर, आपके माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगो का पैसा इन्वेस्ट करवाती है, और कुछ दिन या वर्षों बाद पता चलता है कि वह कंपनी पब्लिक के करोड़ो रूपये लेकर फरार हो गई है, अतः पैसों के लालच में आकर इस तरह की कंपनी में काम करने व किसी परिचित का पैसा लगवाने से पहले भगत को बहुत विचार करना चाहिए - अन्यथा मानसिक तनाव व अवसाद के चलते आपकी भक्ति में बाधा उत्पन हो जायेगी

किसी भगत या जगत वाले भाई बहनों से पैसों का उधार लेन देन कर सकते है या नही ?

गुरुदेव ने बताया कि भगत अपने एक दूसरे भगत भाई बहनों से उधार रूप में मदद ले भी सकता है और किसी की मदद कर भी सकता है, **लेकिन निम्न मर्यादाओं को ध्यान में अवश्य रखना है**

1) यदि आप मदद करने में सक्षम है तो अवश्य मदद करे, लेकिन यह भी अच्छे से जांच ले कि उसकी जरूरत जायज है या नही

2) शराब, मांस, नशीले पदार्थ, राजनीति, मंदिर निर्माण या अन्य गलत कार्य में बिल्कुल भी मदद ना करे

3) उधार रूप में दिये गए पैसे पर ब्याज भूलकर भी ना ले, वह इसलिए क्योंकि उधार मदद मुसीबत के समय ली जाती है, ऐसे में ऊपर से ब्याज लेना उस आत्मा को और अधिक दुःखी करने के समान होता है, **अतः ब्याज का पैसा एक प्रकार से हराम की श्रेणी में आता है**

4) यदि भगत को मजबूरी में किसी जगत वाले भाई बहन या अनुपदेशी रिश्तेदार से उधार रूप में पैसा लेना पड़ जाये, तो हम ब्याज दे सकते है, लेकिन भगत ने किसी अन्य से ब्याज बिल्कुल भी लेना नही है

5) गुरुदेव ने बताया कि, पहले हम सतोगुण के प्रभाव से दयावान बनकर किसी की मदद तो कर देते है - लेकिन बाद में जब पैसा देने में देरी हो जाती है या मना कर दिया जाता है, तो तमोगुण के प्रभाव से लड़ाई झगड़ा कर बैठते है जो गलत है, इससे मानसिक तनाव के चलते भजन में भंग पड़ता है और सामने वाले कि आत्मा को भी चोट पहुँचती है

6) अतः गुरुदेव के आदेश अनुसार, यदि समय पर आपका पैसा नही लौटाया जाता है या मना कर दिया जाता है, तो लड़ाई झगड़ा या मन मुटाव बिल्कुल भी ना करे, इसके लिए भगत को चाहिए कि, पहले ही सोच समझकर मदद करे, यदि आपके अंदर धैर्य या सहनशीलता नही है तो मदद करने से बचे

7) उधार रूप में अपने किसी अनुपदेशी रिश्तेदार बहन बेटी या मित्र आदि की भी मदद कर सकते है, और जरूरत पड़ने पर उनसे आर्थिक मदद ले भी सकते है, लेकिन लेन देन के समय उपरोक्त मर्यादाओ का अवश्य ध्यान रखना है

यदि भगत ने अपने किसी भगत भाई से या जगत वाले भाई से पैसा उधार लिया, लेकिन उधार चुकाने से पहले ही मौत हो जाती है, तो क्या भगत के ऊपर भार चढ़ेगा ?

आपने किसी से उधार पैसा लिया है, तो मन मे कोई भी दोष ना रखते हुए, आपकी इच्छा वह पैसा चुकाने की होनी चाहिए, फिर भी किसी कारणवश मौत हो जाती है और आप कर्ज नही चुका पाते है, तो ऐसी स्थिति में गुरुदेव ने बताया कि परमात्मा आपकी भक्ति कमाई का कुछ

अंश, उस उधार मदद करने वाले को देकर, उसके व्यापार या शरीर मे फायदा पहुंचाकर अपने भगत का ऋण चुकता करवाता है

क्या अनाज, वस्त्र आदि देकर भी उधार मदद की जा सकती है ?

सामने वाले की परिस्थिती के अनुसार अनाज, वस्त्र, दवाई आदि देकर भी उधार मदद की जा सकती है

☞ बाद में अनाज के बदले अनाज या पैसा भी ले सकते है

☞ तथा वस्त्र व दवाई के बदले पैसे लेले

सरकार द्वारा मुफ्त में दिया जाने वाला राशन (गेहूँ चावल दाल शक्कर तेल) ले सकते है या नही ? भगत पैंसन ले सकता है या नही ?

मर्यादा में रहकर सच्चे मन से भक्ति करने वाले कबीर भगत के इतने बुरे दिन नही आ सकते है, कि उसे सरकारी राशन से अपना पेट भरना पड़े, कहते है - **पौ पाटी पगड़ा भया और जागी जीया जूण - सब काहू को देत है वो चौंच समाना चून,** अर्थात जो समर्थ परमेश्वर, सृष्टि में विद्यमान 84 लाख योनियों के प्राणियों का पेट भरता है, कीड़ी को कण और हाथी को मणभर खिला रहा है, क्या अपने भगत को अन्न के लिए किसी के आगे हाथ फैलाने देगा ? बिल्कुल भी नही फैलाने देना, यदि भगत मर्यादा में रहकर भक्ति कर रहा होगा तो

गुरुदेव कहते है

राजा राज रसातल जाही, कौम छतीसों डांडे
सभी अपावन कहिये भाई, योगी किस दर हांडे

अर्थात गुरुदेव ने बताया कि - सरकार मुक्त में राशन का वितरण जनता से टैक्स रूप में जमा किए गए पैसों से करती है, जोकि भगत के लिए जहर खाने के समान है

क्योंकि - सरकार के पास जनता से जो टैक्स आता है, उसमें शराब खाने

से लेकर, बूचड़खाने, कत्तलखाने, मादक पदार्थो की फैक्ट्री, चोर, जारी, रिश्वतखोर, मिलावटखोर व हजारों की संख्या में दो नम्बर के काम धंधे करने वालो की काली कमाई का हिस्सा भी शामिल होता है, और उस अन्न को यदि कोई भगत खायेगा, तो उसके विचार बिगड़ते है तथा भजन में भंग पड़ता है

कहते है - **जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन** जैसा पिओगे पाणी वैसी होगी वाणी अतः सतगुरु भगत को चाहिए कि, ऐसा फ्री वाला अन्न खाने से बचे, यदि सरकार की तरफ से बाटे जाने वाले अनाज की राशि तय कर रखी है तो उस अनाज को हम पैसा देकर ले सकते है ! जैसे कई जगह राशनकार्ड से 2 रुपये किलो गेहूँ , चावल, दाल चीनी आदि मिलती है, वह अन्न लेने से भगत दोषी नही बनता है, क्योंकि हम उस अन्न को सरकार द्वारा निर्धारित राशि देकर खरीद रहे है

यदि मुक्त का सरकारी राशन नही लेना है, तो भगत को सरकार की तरफ से दी जाने वाली पेंशन भी लेनी चाहिए या नही ?

पेंशन 2 तरह की होती है, एक व्यक्ति सरकारी नौकरी (पुलिस, आर्मी, टीचर, या अन्य सिविल सर्विस) से रिटायर होकर आता है तो सरकार उसे आजीवन पेंशन देती है इस तरह की पेंशन अवश्य ले सकते है, क्योंकि उस व्यक्ति ने अपने जीवन का अधिकांश समय देश सेवा में बिताया होता है, जो जायज है

इसके अलावा एक भगत को विधवा पेंशन, बुढापे की पेंशन, या अन्य मुक्त की पेंशन जो चुनावी सीजन या अपनी सरकार को बनाये रखने के लिए 500 या 1500 रुपये हर महीने दी जाती है, इस तरह की पेंशन कबीर भगत को नही लेनी चाहिए, तथा गुरुदेव पर विश्वास व मर्यादा में रहकर भक्ति करते हुए अपना कोई भी छोटा मोटा काम करके ही परिवार का पालन पोषण करे !

मैं परिवार में अकेली उपदेशी हूँ, घर के अन्य अनुपदेशी व्यक्तियों द्वारा देवी देवताओं को भोग लगाने के बाद बचा हुआ भोजन खा सकती हूँ या नही ?

यदि आप परिवार में अकेली उपदेशी है और परिवार वाले देवी देवताओं को भोग लगाने के लिए कुछ बनाते है तो गुरुदेव के आदेश अनुसार भगत ने उन देवी देवताओं को लगाये गये भोग को ग्रहण नही करना है बाकी बचे हुए भंडारे में से पहले गुरुदेव को भोग लगाकर या अन्न देव की आरती करके भोजन ग्रहण कर सकते है

इसके अलावा यदि परिवार वाले श्राद्ध निकालने या पित्र पूजने के लिए भोजन बनाने के लिये दबाव डालते है, तो यहाँ आपको ज्ञान आधार से संघर्ष करने की आवश्यकता होगी, यदि आप संघर्ष नही कर पाते है और उस दिन वह भोजन बना देती है तो यह कर्म मजबूरी वाली श्रेणी में आ जाता है, तथा मजबूरी या दबाव की स्थिति में गुरुदेव ने बताया है कि मर्यादा तो खंडित होती ही है और यदि उसी वक्त आपके संस्कार में कोई बड़ी दुर्घटना घटित होना लिखा है तो गुरुदेव उसे टाल तो नही पाएंगे, लेकिन उसे हल्का अवश्य कर देंगे क्योंकि वह कर्म आपने जानबूझकर नही बल्कि दबाव या मजबूरीवश किया है, लेकिन नुकसान तो फिर भी नुकसान हो है

कुछ जगह परमात्मा ने ग्यारस, अमावश्या आदि के दिन यदि अनुपदेशी परिवार वाले उन पूजा पाठ के लिए भोजन बनाने का दबाव डालते है तो गुरुदेव ने यह कहकर हल्की सी ढील दी है, की आप उस दिन भोजन बना सकते है लेकिन आपने उन देवी देवताओं को लगाया हुआ भोग नही खाना है बल्कि अलग से बचे हुए भोजन में से पहले अन्न देव की आरती करके खा सकते है, लेकिन यह ऑप्शन ज्ञान में कच्ची व संघर्ष करने में कमजोर आत्माओ के लिए दी है, नाकि सभी के लिए

बीमारी की हालत में उपदेशी भगत, आयुर्वेदिक एलोपैथिक या होमियोपैथिक दवा ले सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान का भक्ति विधान कहता है कि
परमात्मा अपने भगत की बड़ी से बड़ी बीमारी को ठीक कर सकता है,
मृत्यु देवता (यमराज) से अपने साधक को छुड़वाकर ला सकता है,

भगत की आयु शेष ना हो तो भी भक्ति के लिए 100 वर्ष की आयु दान कर सकता है, और भी ऐसे ऐसे हजारो कैंसर और एड्स तक के रोगियों को सतगुरु रामपाल जी भगवान ने अपने आशिर्वाद मात्र से भक्ति के लिए जीवन दान दिया है

उपदेश लेने के बाद यदि भगत पूर्णतया मर्यादा में रहकर भक्ति करता है, तो गुरुदेव भगवान ऐसा कोई भी भयंकर या लाईलाज रोग अपने साधक के समीप नही आने देते है, जो भक्ति में बाधक बनकर खड़ा हो जाये, ऐसा केवल उसी समय सम्भव है जब भगत मर्यादा तोड़ डालता है, बाकी इस पांच तत्त्व से निर्मित हाड़ मास के शरीर मे थोड़ी बहुत हल्की फुल्की परेशानियां भगत के संस्कार व उम्र अनुसार आती जाती रहेंगी

और ऐसी स्थिति में गुरुदेव भगवान ने, भगत को डॉक्टर की सलाह व दवा लेने से मना नही किया है , बाकी यह भगत के विश्वास पर निर्भर करता है कि वह दवा या इलाज लेना चाहता है या नही, यदि भगत पूर्णतया मर्यादा में है और गुरुदेव पर अटूट विश्वास है तो कोई भी बीमारी उसका बाल भी बांका नही कर सकती है

रही बात आयुर्वेदिक, एलोपैथिक व होमियोपैथिक दवा प्रयोग करने की - तो ध्यान रखे, उपदेश प्राप्त भगत ने उन दवाओं का बिल्कुल भी प्रयोग नही करना है, जिन दवाओ में जानवरों की हड्डी, चर्बी या सीरम

(खून से बनी वैक्सीन) का प्रयोग होता है, **बाकी अन्य दवा यदि भगत लेना चाहता है तो गुरुदेव भगवान ने मना नही किया है**

कहै कबीर सुनो भाई साधो - मैं तो हूँ विश्वास में, गुरुदेव ने बताया कि कुल्हाड़ी से लकड़ी काटते समय लकड़ी का छोटा सा टुकड़ा एक भगत के 10 वर्षीय बच्चे की आंख में जा लगा, बच्चे की आंख फुट गई खून बहने लगा, बच्चे की माताजी व पिताजी आश्रम में गुरुदेव के पास आये, **गुरुदेव ने कहा बेटा भक्ति करो - परमात्मा सब ठीक करेंगे** लेकिन उन्हें विश्वास नही हुआ कि बच्चे की आंख 90% खराब हो चुकी है और बिना दवा के कैसे ठीक हो जाएगी, और गुरुदेव ने डॉक्टर के पास जाने के लिए भी नही कहा

आश्रम में किसी अन्य भगत के कहने पर, दोनों पति पत्नी अपने बच्चे को इलाज के लिए, हिसार व अन्य जगह जाने माने हॉस्पिटल में इलाज के लिए लेकर गए, लेकिन बच्चे की हालत को देखकर उन्होंने मना कर दिया, फिर दोनों पति पत्नी आश्रम में वापस आये और गुरुदेव के पास गए - **गुरुदेव ने कहा बेटा भक्ति करो, परमात्मा सब ठीक करेंगे** लेकिन फिर भी उन्हें विश्वास नही हुआ, तो दूसरे दिन बच्चे को लेकर दोनों पति पत्नी PGI हॉस्पिटल चंडीगढ़ में डॉक्टर को दिखाया, लेकिन वहां भी डॉक्टर ने मना कर दिया कि बच्चे की आंख 90% खराब हो चुकी है, हम ऑपरेशन तो कर देंगे, 2 लाख रुपये खर्चा भी आयेगा, लेकिन आंख के ठीक होने की गारंटी नही दे सकते है , अंत मे थक हारकर फिर आश्रम में गुरुदेव भगवान के पास आये, **गुरुदेव में कहा बेटा अभी भी किसी डॉक्टर या हॉस्पिटल से उम्मीद है तो जाकर अपनी तस्सली कर ले- ये बन्दीछोड़ तो उस समय अपना काम शुरू करता है, जब भगत हर कही से आस्था और उम्मीद हटाकर इसके चरणों मे समर्पण कर देता है,** भगत जी ने कहा कि गुरुदेव मेरी नादानी थी जो मैं आपके वचन पर

विश्वास नही कर पाया, मुझ नीच को क्षमा करें और दया कीजिए , **15 दिन बाद बिना किसी दवा व इलाज के बच्चे की आंख गुरुदेव ने इस कदर ठीक कर डाली, कोई भी यह नही कह सकता था कि यह आंख कभी खराब भी हुई होगी**

सतगुरु जो चाहे सो करही, भ्रम पड़ो मत कोई
सेउ धड़ पर शीश चढ़ाया पाछै करी रसोई

पुण्यात्माओं, सतगुरु रामपाल जी के रूप में धरती पर आज भी वही कबीर परमात्मा लीला कर रहे है,

☞ जिन्होंने बिना किसी दवा और ऑपरेशन के 600 वर्ष पहले सिकंदर लोदी द्वारा पंडित रामानंद जी की तलवार से गर्दन काट देने के बाद भी वापस जोड़ दी, और उन्हें जीवित किया ,

☞ जिन्होंने बिना किसी दवा और इलाज के दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोदी के भयंकर जलन के रोग को आशिर्वाद मात्र से ही ठीक कर दिया था , जो इलाज उस समय देश विदेश में किसी भी वैध और धर्मगुरु के पास नही था

☞ जिन्होंने 1994 से लेकर आज 2022 तक, ना जाने हजारो भक्तो को कैंसर और अन्य लाईलाज बीमारियों से मुक्ति दिलाई है

☞ जिन्होंने हजारो भक्तो के संस्कार में लिखी मौत को मात देकर, भक्ति के लिए नया जीवनदान दिया है

☞ जिन्होंने शराब मांस व नशा छुड़वाकर लाखो परिवारों को बर्बाद होने से बचाकर, उन शराबियों को संत बना दिया है

☞ ऐसा समर्थ सतगुरु क्या नही कर सकता है , **जिसने प्रह्लाद को अग्नि से और मीरा को जहर से बचाया**

उपदेश लेने के बाद घर में अपने पूर्वजों की, देवी देवताओं या साधु संतों की फोटो दिवारो पर लगा सकते है या नही ?

नामदीक्षा देते वक्त गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार साधक ने अपने घर पर पूजा पाठ के लिए दरबार साहेब लगाना होता है , जिस कमरे में दरबार साहेब लगा है उस कमरे में और दरबार मे, अपने किसी शरीर त्याग चुके पूर्वज की, या वर्तमान के जीवित व्यक्तियों की या छोटे बच्चो की, किसी भी साधु संत महात्मा व देवी देवताओं की फोटो नही रखनी है

जब तक पतिव्रता पद पर रहकर हमारी आस्था हमारे एक सतगुरु भगवान में नही लगेगी, तब तक हम मोक्ष के अधिकारी नही बन पाएंगे

गुरुदेव भगवान ने बताया कि इराक में बलख शहर का राजा अब्राहिम सुल्तान, जिसने परमात्मा के लिए राज भी त्याग दिया था, वह अब्राहिम सुल्तान एक समय मक्का गया हुआ था, उसका उद्देश्य था कि भ्रमित मुसलमान श्रद्धालु मक्का में हज के लिए या वैसे भी आते रहते है, उनको समझाना था, उनको समझाने के लिए वहां कुछ दिन रहे, कुछ शिष्य भी बने

किसी हज यात्री ने बलख शहर में जाकर बताया कि इब्राहिम मक्का में रहता है, छोटे लड़के ने पिताजी के दर्शन करने की जिद्द की तो उसकी माता - लड़का व नगर के कुछ स्त्री पुरुष भी साथ चले और मक्का में जाकर इब्राहिम से मिले, इब्राहिम अपने शिष्यों को शिक्षा देता था कि बिना दाढ़ी मूंछ वाले लड़के तथा पर स्त्री की ओर अधिक देर, तक नही देखना चाहिए, ऐसा करने से उनके प्रति मोह हो जाता है

लेकिन अपने लड़के को देखकर इब्राहिम से रहा नही गया, एकटक बच्चे को देखता रहा, लड़के की आयु लगभग 13 वर्ष थी, शिष्यो ने कहा गुरुदेव आप हमें तो शिक्षा देते हो कि बिना दाढ़ी मूंछ वाले बच्चो की तरफ

अधिक देर तक नही देखना चाहिए और आप स्वयं देख रहे हो, इब्राहिम ने कहा पता नही मेरा आकर्षण इसकी तरफ कैसे हो रहा है, उसी समय एक वृद्ध ने कहा कि राजा जी - यह आपकी रानी है और यह आपका पुत्र है, आप जब राज्य त्यागकर आये थे उस समय यह माता के ग्रभ में था, आपसे मिलने आये है, उसी समय लड़का पिताजी के चरणों को छूकर गोद मे बैठ गया, इब्राहिम की आंखों में ममता के आंसू छलक आये, **परमेश्वर की और से आकाशवाणी हुई कि हे सुल्तानी - अब तेरे को मेरे से प्रेम नही रहा, अपने परिवार से प्रेम है, अपने घर चला जा,** उसी समय इब्राहिम को झटका लगा तथा आंखे बंद करके प्रार्थना की, हे परमात्मा मेरे वश से बाहर की बात है या तो मेरी मृत्यु कर दो या इस लड़के की

पुण्यात्माओं, इस कथा के माध्यम से गुरुदेव भगवान हमे समझाना चाहते है कि - घर मे दीवारों पर या अन्य जगह बच्चो की या पहले पूजे जाने वाले साधु संतों की फोटो देखकर, काल प्रेरणावश मोह ममता के चलते आप कभी भी प्रभावित हो सकते है, जैसे सब कुछ त्यागने के बाद भी बच्चे के माध्यम से काल ने इब्राहिम को ठग लिया था, इसलिए मोक्ष प्राप्ति के लिए गुरुदेव भगवान का आदेश भक्तिमार्ग में सबसे ऊपर रखकर चलना होगा

परिवार में शादी या अन्य किसी शास्त्र विरुद्ध कार्यक्रम में मदद या सहयोग कर सकते हैं या नही ?

गुरुदेव भगवान ने पवित्र गीता जी अध्याय न. 16 श्लोक न. 23 व 24 में बताया कि, शास्त्र विधि को त्यागकर जो भक्ति साधना या क्रिया की जाती है, उसके करने से नाही तो साधक को मुक्ति मिलती है, नाही उसके कार्य सिध्द होते है

पहले काफी शंकाओं के समाधान में यह बता दिया जा चुका है

कि, शादी विवाह में या अन्य शास्त्र विरुद्ध कार्यक्रमो में भगत ने नाही तो शामिल होना है और नाही सहयोग करना है , क्योंकि नामदीक्षा के समय गुरुदेव भगवान ने बताया कि, भगत ने नाही तो गलत काम करना है और नाही उसमें सहयोग करना है, क्योंकि आन उपासना व शास्त्र विरुद्ध धार्मिक अनुष्ठान **(जैसे जागरण, अन्य संतो के सत्संग, देवी देवताओं का भंडारा, श्राद निकालना)** सबसे बड़ा अपराध है, और किसी भी अपराध में सहयोग करना, अपराधी समान ही होता है

यदि भगत अकेला उपदेशी है और घर मे अन्य आन उपासको द्वारा कोई धार्मिक अनुष्ठान करवाया जाता है,तो क्या सावधानी बरतें ?

शास्त्र विरुद्ध धार्मिक अनुष्ठान चाहे घर मे हो या रिश्तेदारी में, उपदेशी भगत के लिए नियम एक जैसे ही रहेंगे, शास्त्र विरुद्ध धार्मिक अनुष्ठान रिश्तेदारी में या गाँव में कही भी हो, उपदेशी भगत के लिए गुरुदेव भगवान का सख्त आदेश है कि आपने उस दिन तो वहाँ जाना भी नही है, क्योंकि उस दिन वहाँ जाने से आपका सहयोग हो जाता है

यदि शास्त्र विरुद्ध धार्मिक अनुष्ठान घर मे ही है, तो किन विशेष बातों का ध्यान रखे ?

☞ आपने उस अनुष्ठान के लिए की जाने वाली पूजा पाठ में शामिल नही होना है

☞ नाही पूजा पाठ की सामग्री लाने में सहयोग करना है

☞ घर आये मेहमानों के साथ बैठकर परमात्मा की चर्चा कर सकते है

☞ घर आये मेहमान को खाना खिलाने, पानी पिलाने में मदद कर सकते है

☞ उस दिन आपने अपने लिए अलग से भोजन बनाकर खाना है

यदि किसी कारणवश अलग से भोजन बनाकर खाने में सक्षम नही है, तो ध्यान रखे **भंडारा बनाने के बाद - देवी देवताओं को जिस बर्तन में कुछ भंडारा डालकर भोग लगाया जाता है, आपने उस भोग वाले भंडारे को नही खाना है, बाकी बचे हुए भंडारे में एक थाल में डालकर पहले गुरुदेव को अन्न देव की आरती के साथ भोग लगाकर खा सकते है**

जरूरत पड़ने पर 10 वे अंश, ज्योति व पाठ के नाम से निकाले गये रुपयों को अन्य काम मे ले सकते है या नही ?

विशेष जरूरत पड़ने पर गुरुदेव भगवान को दंडवत प्रणाम करके, क्षमा याचना करते हुए 10 वे अंश, ज्योति व पाठ प्रकाश के नाम से निकाले गए पैसों को काम मे ले सकते है, कितने पैसे निकाले गए है उनको एक जगह लिखकर रखें व जब भी आप के पास पैसे हों जाएँ, तब आप निकाली गई राशि को वापस रख दे

रिश्तेदारी में, परिवार में, या पड़ोस में लड़की की शादी में पैसे कपड़ा, साड़ी, सूट या गिफ्ट आदि वस्तुएं दे सकते है या नही ?

व्यर्थ की सांसारिक परम्पराओ व रीति रिवाजों से बाहर निकलकर आये एक भगत की सोच के विषय मे बताते है कि..

डूबै थे पर ऊभरे, गुरु के ज्ञान चमक - बेड़ा देख्या जर्जरा, उतर चले फड़क अर्थात गहरे समुंदर मे नाव से यात्रा कर रहे व्यक्ति को पता चले कि इस नाव **(जहाज)** में छेद हो चुका, पानी अंदर आ रहा है और बचाव का कोई तरीका नही है, इतने में यदि कोई दूसरी नौका पास में आ जाये, तो वह व्यक्ति छेद वाली नाव से दूसरी नाव में तुरंत छलांग लगाकर चढ़ जाता है और प्राण बचाता है

इस उदाहरण से गुरुदेव भगवान ने हम नादान भक्तो को समझाया है कि - आज से पहले तुम जिस सामाजिक देखादेखी व भेड़चाल में, व्यर्थ की सामाजिक परम्पराओ व रीति रिवाज रूपी छेद वाली नौका में सफर

कर रहे थे, यदि समय पर आपको गुरुदेव भगवान की यह भक्ति रूपी मजबूत नौका नही मिलती, तो आज काल आपके कहाँ कहाँ कर्म फुड़वा रहा होता - एक बार गहनता से विचार करे

अब यदि तुम पुनः स्वयं की नादानी व मूर्खता के चलते, वापस उसी सांसारिक परम्पराओ व रीति रिवाजों से युक्त छेद वाली नौका **(शादी, विवाह, भात, छुछक, जन्म दिन)** में सफर करना चाहते हो, तो यह आपकी अपनी मर्जी होगी, मर्यादा टूटने के चलते भविष्य में महाकष्ट भी आप ही उठाओगे

उपदेश प्राप्त करके व यह गूढ़ तत्त्वज्ञान सुनकर भी, जब एक भगत वापस उन्ही सांसारिक चौचलो में रुचि दिखाता है, तो अपने भक्तो की ऐसी नादानी को देखकर गुरु भगवान अंदर ही अंदर बहुत दुःखी होते है, की देखो इन आत्माओं को ज्ञान से परिपूर्ण करने के लिए मैं इस काललोक में आकर कितना कष्ट उठाता हूँ, और फिर भी ये आत्माये, हलुवा त्यागकर गंदगी खाने में ही रुचि दिखाते है
कहते है, **जिन बातों से गुरु दुःख पावै - उन बातों (कार्यों) को दूर बहावै** अर्थात तत्त्वज्ञान लेने के बाद, गुरु वचन तोड़कर भक्ति विरुद्ध कर्म करने वाली आत्माये गुरु को दुःखी करके, असंख्य जन्मों तक मोक्ष से वंचित रह जाती है, और यदि इस बिचली पीढ़ी के अनमोल समय मे भी मोक्ष से वंचित रह गये, तो फिर हमसे बड़ी निरभागी आत्मा और कौन होगी

अतः जिस प्रकार एक शूगर के मरीज के लिए मीठा खाना मौत को दावत देने जैसा है, ठीक उसी तरह सतगुरु से दीक्षा और शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनके वचनों को तोड़कर, इन शादी समारोह में शामिल होना, नाचना, गाना, जन्म दिन मनाना, व्यर्थ के सामाजिक समारोह में शामिल होना, गुरु को दुःखी करके अपने लिए कब्र खोदने के समान है

गुरुदेव भगवान कहते है

कबीरा तहाँ जाइये रह संतन की प्रीति - इष्ट मिले और मन मिले, मिले सकल रस रीति अर्थात गुरुदेव कह रहे है कि, एक ज्ञानी भगत को सदैव अपने जैसे आध्यात्मिक विचारों वाले व्यक्तियों के साथ ही मिलना जुलना चाहिये , यदि हम अपने किसी भगत भाई बहन से मिलेंगे, तो हमारा ईष्ट (भगवान) भी एक ही होगा, मन भी मिलेगा क्योंकि दोनों भगवान की ही चर्चा करेंगे और सुनेंगे, अर्थात दोनों को हरी चर्चा करके लाभ ही मिलेगा

तो विचार करे - इसके विपरीत यदि हम किसी रिश्तेदारी में या गाँव मे कही शादी या अन्य समारोह में जाएंगे तो

☞ नाही उन भक्तिहीन सांसारिक लोगो से हमारे विचार मेल खाएंगे

☞ नाही भक्ति कर्म मिलेंगे

☞ नाही मर्यादा और नाही भगवान मेल खायेगा, हो सकता है ऐसी जगह पर काल प्रेरणावश किसी बात को लेकर कहासुनी भी हो सकती है,

इसलिए ज्ञानी भगत तो, लोकलाज को त्यागकर ऐसी जगहो पर, यह सोचकर जाने से बचेगा की कोई बात नही, कभी मिलेगा और शादी में ना आने के लिए बुरा भला कहेगा या बेइज्जती करेगा तो सुन लेंगे
गुरुदेव भगवान कहते है

लोकलाज मर्यादा जगत की, तिनके ज्यूँ तोड़ बगावै
जब कोई राम भगत गति पावै

लोकलाज ना कीजिए, निर्भय हो रहिए
जो मन चाहे राम को, तो दासातन धरिये

गुरु को रखिए शीश पर, चलिए आज्ञा माही
कहै कबीर उस भगत को, तीन लोक भय नाही

पुण्यात्माओं, हमे जो गुरुजी मिले है, इन्हें मात्र गुरु ही समझने की भूल ना करे यह वो अनमोल परमात्मा है, जिसके दर्शन मात्र प्राप्त करने के लिए ऋषि मुनि साधु संतों व तपस्वियों ने हजारों हजारों वर्ष कठिन साधना करके अपना शरीर तक मिट्टी बना दिया था - लेकिन उन्हें तो दर्शन भी नही हो पाये, क्योंकि भक्ति विधि गलत थी

और आज दर्शन तो छोड़ो, जब धरती पर साक्षात वो परमात्मा आकर खड़ा हो गया है, सन 1994 से प्रमाण दिखा दिखाकर साबित कर रहा है, कि **मैं हूँ वह अविनाशी कबीर भगवान, जिसकी तलाश में तुम असंख्य युगों से भटक रहे हो,** अब स्वयं सामने आ गया तो तुम पहचानने में भूल कर रहे हो, और यदि थोड़ा बहुत पहचाना है, तो इन व्यर्थ के शादी विवाह, जन्म दिन जैसे चौचलो में शामिल होकर, मर्यादा और भक्ति में गफलत कर रहे हो

☞ जिस सतलोक के लिए कुर्बानी देते हुए मंसूर भगत ने शरीर का अंग अंग कटवा डाला

☞ जिस सतलोक के लिए नरसी भगत ने 56 करोड़ की संपत्ति धर्म भंडारे में लगाकर, अपने सर्व सुखों की कुर्बानी दे दी

☞ जिस सतलोक के लिए मीराबाई ने समाज से संघर्ष करते हुए अपनी इज्जत तक कि कुर्बानी दे दी, कि चाहे गुंडी कहो या भुंडी, मेरी सूरत राम मैं लागी, तुझे उस सतलोक में ले जाने के लिए आज स्वयं वह सतलोक का राजा, दुनिया की ओछी मंदी गाली व मार सहन कर रहा है, दो दो बार की जेल काट रहा है और नादान प्राणी तू फिर भी आंख ना खोलकर, सतगुरु का भगत होकर, काल की गोद मे बैठकर वही भक्ति विरुद्द कर्मों **(शादी विवाह आदि)** में जाकर आनंद मना रहा है, 27 वर्षो से इतना ज्ञान यदि लगातार किसी जानवर को भी दिया जाता, तो वो भी बैकुण्ड जाने के लिए तैयार हो जाता, लेकिन सतगुरु भगत होकर हमारी आज भी नींद नही टूट रही है

पुण्यात्माओं, यदि आज आपके इन शादी विवाह में ना जाने से, कोई रिश्तेदार नाराज हो भी जाता है, तो हो जाने दो साल छः महीने में वो रिश्तेदार फिर खुश हो जायेगा, यदि नही हुआ तो भी कोई फर्क नही पड़ेगा लेकिन इन शादी विवाह में जाने के चक्कर में यदि एक बार यह गुरुदेव भगवान नाराज हो गया, तो ध्यान रखना इसे मनाने में असंख्य जन्म और युग बीत जाएंगे

इसलिए बार बार गुरुदेव भगवान कहते है **- यो सौदा फिर नाही रे संतो, यो सौदा फिर नाही - ये लोहे जैसा ताव जात है, काया ले सराही**

☞ सोचिए - मीराबाई यदि आप और हमारी तरह लोकलाज में आकर ऐसा सोचती की - रिश्तेदार क्या कहेंगे, शादी में तो जाना ही पड़ता है, शादी कोई बार बार थोड़े ना होती है, गुरुदेव कहते है यदि ऐसा सोचती तो कही कुतिया बनी फिरती

☞ भगत प्रह्लाद, भगत मंसूर, भगत धन्ना जी आदि महापुरुष यदि समाज की इन व्यर्थ की परम्पराओ व लोकलाज में आकर संघर्ष के बजाए, घुटने टेक देते, तो आज हर व्यक्ति की जुबान पर उनका नाम ना होता

☞ आज भगवान हमारे से नाही तो मंसूर भगत की तरह, शरीर के अंग कटवाकर, अंगों की कुर्बानी ले रहा है

☞ नाही नरसी भगत की तरह संपति व अब्राहिम सुल्तान की तरह राजपाट की कुर्बानी ले रहा है

☞ नाही सम्मन भगत की तरह बेटे के शीश की कुर्बानी ले रहा है

हमसे तो मात्र आज यह दयालु परमात्मा सिर्फ और सिर्फ, कुकर्म रूपी **(नशा चोरी जारी मांसाहार, राजनीति, आरक्षबाजी,)** और

बुराइयों रूपी **(शादी विवाह, जन्म दिन, भात छुछक, पार्टी बाजी)** आदि कुप्रथाओं की छोटी सी कुर्बानी की मांग रहा है और वह कुर्बानी देने से भी यदि हम पीछे हट रहे है, तो भला सतलोक क्या खाक जाएंगे

आज से पहले महापुरुषों ने ऐसे ही सतलोक प्राप्त नही किया था, उनकी कुर्बानी और बलिदान की कथा सुनाते सुनाते स्वयं सतगुरु भगवान भी सत्संगों में आंसू बहाने लगते है

कहते है, **जलाऊ भी तपाऊ भी और चिमटे से खाल उतारू - फिर भी जो ले नाम हमारा, उसको पार उतारू** अतः अबकी बार यदि किसी यारी रिश्तेदारी में शादी विवाह या अन्य समारोह में जाना हो, तो शांति से बैठकर, आप और हमारे लिए असहनीय संघर्ष करते हुए हिसार जेल में बैठे, सतगुरु की आंखों में - अपनी मन की आंखों को डालकर देखने की हिम्मत करके विचार करना, **की वह महापुरुष किसके लिए निस्वार्थ होकर परमार्थ के लिए इतना संघर्ष कर रहे है, और बाहर भक्ति करने के बजाय, हम क्या कर रहे है**

गुरुदेव भगवान कहते है

शीश उपाड़ै भूमि धरै और ऊपर राखै पाँव - कबीर का घर शिखर मैं तेरी गर्ज पड़ै तो आव अर्थात हे नादान प्राणी - इस अनमोल समय की नजाकत को समझने का प्रयास कर, जो तुझे सहज में मोक्ष मिलने जा रहा है, जिस मोक्ष को यह काल निरंजन 21 ब्रह्मांड कुर्बान करके भी प्राप्त नही कर सकता है

कहते है, **शीश उपाड़ै भूमि धरै - ऊपर राखै पाँव** यदि आज से पहले सतलोक के वास्ते मुझे खुश करने के लिए तू अपने हाथों से अपनी गर्दन उतारकर, अपने पाँव के नीचे रखता, तो भी मैं प्रसन्न नही होता और आज बिना किसी विशेष कुर्बानी के मैं तुझे सतलोक ले जाने के लिए खुश हूँ, तो भी तू गफलत कर रहा है

अनजाने में या मजबूरी में यदि कोई मर्यादा खंड हो जाती है तो क्या करें ?

गुरुदेव भगवान कहते है, **लोक लाज मर्यादा जगत की, तिनके ज्यूँ तोड़ बगावै - जब कोई राम भगत गति पावै**

पूर्ण मोक्ष हेतु भक्ति को सफल करने के लिए मर्यादा का होना अति आवश्यक है, उपदेश लेने के बाद जानबूझकर मर्यादा खंडित नही करनी है, यदि अनजाने में या ज्ञान की कमी के कारण कोई नियम भंग हो जाता है, तो ऐसी स्थिति में परमात्मा भगत पर विशेष आपत्ति नही आने देता है और नाही नाम पर कोई आंच आती है, लेकिन जब पता चल जाये, तो सबसे पहले गुरुदेव को दंडवत प्रणाम करके क्षमा याचना मांगनी है और आगे से विशेष ध्यान रखना है **(यदि गुरुदेव नही है तो घर पर दरबार के आगे हृदय से क्षमा याचना की जाये**) यदि गुरुदेव किसी आश्रम में है तो पता चलते ही पहले घर पर दंडवत करके क्षमा याचना करे, व आश्रम में जाने का मौका लगते ही, गुरुदेव के समक्ष भी अवश्य क्षमा याचना करना है

उदाहरण के लिए गुरुदेव भगवान ने बताया कि, एक माँ अपने बेटे को आश्रम में लेकर आई और कहा कि गुरुजी इसका नामखंड हो गया है, **गुरुदेव ने पूछा कि कैसे क्या हुआ**

माँ ने बताया कि, यह लड़का दोस्त की शादी में गया हुआ था, वहाँ इसको पेप्सी में बीयर डालकर पिला दी , तो गुरुदेव भगवान ने बताया कि - बेटा इस तरह धोखे से या छल बल से कोई चोट करता है, तो मर्यादा खंडित नही होती है क्योंकि वह कर्म आपकी इच्छा के विरुद्द धोखे से आपके साथ किया गया है, ऐसे में नामखण्ड या मर्यादा खंड नही होती है, लेकिन आगे से ऐसे व्यक्तियों की कुसंगति से बचकर रहना चाहिए

☞ यदि जानबूझकर कोई नियम भंग किया जायेगा, तो उसकी सजा अवश्य भगत को भुगतनी पड़ती है

☞ यदि दबाव में या मजबूरी में कोई मर्यादा खंड होती है, तो गुरुदेव ने बताया कि, सजा उसकी भी भुगतनी पड़ेगी, लेकिन मजबूरी में तोड़ी गई मर्यादा के चलते यदि संस्कार में मौत आनी होगी, तो आपका पैर ही कटकर रह जायेगा, अतः कोशिश करे यदि किसी काम को करे, तो पूरी लग्न और संघर्ष के साथ करे

उपदेशी माता बहन, अपने अन उपदेशी पति या परिवार के अत्याधिक दबाव के चलते, मजबूरीवश अन्य देवी देवता की पूजा या पूजा में सहयोग दे सकती है या नही ?

पूज्य गुरुदेव कहते है -

माई मसानी सेढ़ शीतला भैरव भूत हनुमंत
परमात्मा उनसे दूर है जो इनको पूजंत

सो वर्ष सतगुरु की पूजा, एक दिन आन उपासी -
वो अपराधी आत्मा फिर पड़ै काल की फांसी

पूज्य गुरुदेव जी ने, उपदेश प्राप्त करने के बाद, आन उपासना **(अन्य देवी देवता साधु संत महात्मा या परंपरागत पूजा पाठ)** को भगत के लिए सबसे बड़ी गलती बताया

जिस प्रकार विष को चाहे जानबूझकर खाया जाये या दबाव में, वह अपना असर करता ही है , इसी प्रकार आन उपासना को चाहे जानबुझकर करे या दबाव में आकर करे, मर्यादा अवश्य भंग होती ही है,

मर्यादा के बिना भक्ति नही चलती है, अतः मर्यादा तो किसी भी कीमत पर तोड़ने से बचना चाहिए, चाहे कितना ही संघर्ष क्यो न करना पड़े

पूज्य गुरुदेव जी बताया कि - 3 प्रकार से मर्यादा खंडित होती है

1) **प्रथम** - ज्ञान होने के बावजूद भी जानबूझकर मर्यादा तोड़ना - जिसकी सजा कमजोर संस्कार आने पर भगत को अवश्य भुगतनी पड़ती है, उस समय सतगुरु कोई भी सहायता भगत की नही करते है

2) **अनजाने में या धोखे से हुई गलती** - जिसके लिए गुरुदेव क्षमा करते है (उदाहरण के लिए आपके साथ धोखा करते हुए किसी ने शराब पिला दी या मांस खिला दिया, तो ऐसे में मर्यादा खंडित नही होती है - लेकिन पता चलते पर आगे से विशेष सावधानी रखकर चलना चाहिये)

3) **मजबूरी या दबाव में आकर मर्यादा तोड़ना** - गुरुदेव ने बताया कि यदि आपकी इच्छा, आन उपासना या अन्य भक्ति विरुध्द कर्म करने की नही है, लेकिन दबाववश ऐसा करवाया जाता है, तो उसकी भी सजा मिलती है - लेकिन ऐसी मजबूरी वाली स्थिति में यदि संस्कार में मौत लिखी हो, तो पैर टूटकर रह जायेगा

अतः भगत को चाहिए कि ज्ञान को आधार बनाकर, अपने आत्म कल्याण के लिए बहन मीराबाई व मंसूर भगत की तरह अपने सतगुरु पर विश्वास रखकर, उन परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करे, फिर ऐसी भगत आत्मा के साथ परमात्मा भी खड़ा हो जाता है

ज्ञानी भगत को यह विचार करना चाहिए कि - परमात्मा कबीर साहेब, स्वयं मेरे गुरुदेव भगवान के स्वरूप में हम आत्माओं से भक्ति करवाकर, सतलोक ले जाने के लिए असंख्य युगों से, सतलोक से आकर इस गंदे लोक में दुःख सहन कर रहे है, उसके बावजूद भी यदि हम अपने आत्म कल्याण के लिए प्रेम पूर्वक संघर्ष नही करते है, **तो यह कायरता वाला कर्म भी सतगुरु को दुःखी करने वाला है**

गुरुदेव कहते है -
जो तू चालै एक कदम, मैं चालू कदम साठ - जो तू होज्या काठ का, मैं हो जाऊं लोहे की लाठ, बस ज्ञान आधार अपनाकर, थोड़े से धैर्य और विश्वास की जरूरत है, बाकी गुरुदेव शब्द रूप में सदैव अपने मर्यादित भगत के आसपास ही रहते है

नाम उपदेश लेने के बाद, शादी समारोह, जन्म दिन, विदाई समारोह, धार्मिक अनुष्ठान या अन्य किसी अवसर पर गिफ्ट (उपहार) का लेनदेन, अपना सम्मान करवाना, या फूल माला देकर दूसरे का सम्मान कर सकते हैं या नही ?

सतगुरु से नाम उपदेश के बाद, भगत को बहुत सी बातों का ध्यान रखना होता है अन्यथा जानकारी के अभाव में मर्यादा टूटने की संभावना रहती है
पूज्य गुरुदेव जी ने बताया कि - भक्तिमार्ग में आने के बाद हमने शादी समारोह में जाने से बचना चाहिए, क्योंकि वहाँ पर होने वाले समस्त क्रियाकर्म भक्ति के विरुद्ध होते है, **ज्ञानी भगत तो ऐसे सांसारिक भक्ति विरुद्ध समारोह में जायेगा नही** और नादान भगत यदि जायेगा तो निश्चित ही अपनी मर्यादा खंडित करवाकर ही आयेगा

परमात्मा कहते है **बिना विचारे जो करे पाछे वो पछताय - काम बिगाड़े आपणा और जग में होत हँसाय,** अर्थात अपनी भक्ति का भी नाश कर बैठता है और जगत में भी हसी का पात्र बनता है, क्योंकि शादी या किसी समारोह में लोकलाज में आकर हम चले भी जाते है और वहाँ उनके अनुसार कोई भी क्रिया नही करते है, तो उनकी हंसी मजाक का ही पात्र बनेंगे, ज्ञानहीन व्यक्ति 10 बाते आपके विषय मे और 10 बाते गुरुदेव के विषय मे उल्टी सीधी बोलेंगे

इसलिए परमात्मा (गुरुदेव) कहते है

कबीरा तहाँ जाइये, रह संतन की प्रीति - ईष्ट मिले और मन मिले, मिले सकल रस रीति, अर्थात ज्ञानी भगत को हमेशा अपने ही भगत भाई बहनों से मिलते जुलते आध्यात्मिक विचारों वाले व्यक्ति के पास ही बैठना चाहिए, ताकि भक्ति भाव बना रहे

गुरुदेव कहते है **दुनिया सेती दोस्ती, पड़ै भजन मैं भंग - एका एकी राम से या साधु के संग** अर्थात यदि भगत होकर आप जगत वालो के साथ ज्यादा मेल मिलाप या उठना बैठना रखते है, तो अवश्य एक ना एक दिन उनकी बातों से आपकी भक्ति व विचारों में भंग पड़ना शुरू हो जायेगा ,
कहते है **मूर्ख की प्रीत बुरी, जुएँ की जीत बुरी, बुरे संग बैठ बुरा लागे ही लागे - काजल की कोठरी में कैसा भी यतन करो, काजल का दाग भाई लागे ही लागे,** इसलिए सतगुरु आदेश व ज्ञान आधार अनुसार एक भगत को ज्यादा से ज्यादा समय, परमात्मा की भक्ति साधना में या भगत भाई बहनों के संपर्क में रहकर ही बिताना चाहिए

1) हमने किसी भी अवसर पर गिफ्ट आदि का लेन देन नही करना चाहिए, ऐसा करने से हमारे ऊपर एक दूसरे का भार चढ़ता है और मर्यादा टूटती है, इन व्यर्थ के सांसारिक चौचलो व आपसी लेन देन के कारण ही यह काल हमे ऋण संबंधों में बांधकर रखता है, जगत को ज्ञान नही है इसलिए उन्होंने इस तरह के सामाजिक समारोह, अपने मनोरंजन, मान सम्मान व दिखावे के लिए बना रखे है, **लेकिन हमे ज्ञान हो गया है कि इस तरह के समारोह, भक्ति का नही बल्कि बकवाद का हिस्सा है, जहाँ जाने से व सहयोग करने से हमारी मर्यादा टूटती है**

जिस प्रकट शूगर (डाइबिटीज़) के मरीज को मिठाई से दूर रहने में ही फायदा है, वर्ना किसी के जबरदस्ती करने या ज्यादा ही प्रार्थना करने से मिठाई खा ली, **तो मौत भी हो सकती है,** ठीक इसी तरह व्यर्थ की सामाजिक परम्पराओ व समारोह में शामिल होना या गिफ्ट आदि का लेन

देन करना, एक भगत को शुगर के मरीज के सामने मिठाई की तरह समझना चाहिए

2) ज्ञानी भगत ने अपने बच्चो का जन्म दिन नही मनाना है और नाही किसी अन्य के जन्म दिन में शामिल होना है

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि, **बेटा जाया खुशी हुई, बहुत बजाये थाल - ये तो आना जाना लगा हुआ है, ज्यूँ कीड़ी का नाल**, अर्थात ज्ञान होने पर, जन्म दिन मनाकर भगत यहां किस बात की खुशी मनाये, इस गंदे लोक में जन्म प्राप्त करना एक श्राप है , और उस जन्म के उपलक्ष्य में जन्म दिन मनाना महामूर्खता है, आज जन्म दिन मनाकर झूठी खुशी में झूम रहे है और कल को अचानक मौत हो जाने पर आंखों से आंसू बहाते है

ज्ञान हो जाने पर भगत को केवल एक ही बात की खुशी होनी चाहिए, की गुरुदेव भगवान ने सतभक्ति देकर इस गंदे लोक से सदा सदा के लिए जन्म मरण का भयंकर रोग जड़ से समाप्त करने की भक्ति रूपी औषधि दे दी है, और डरना चाहिए यदि कोई मर्यादा टूट गई तो यह औषधि अपना काम नही करेगी और रोग इसी तरह बना रहेगा

यदि ज्ञान होने के उपरांत हम इन झूठी खुशी देने वाली प्रथाओं से पीछे हटेंगे, तो हमारे बच्चे भी इन प्रथाओं में नही फसेंगे, इससे हमारे समय, धन और मर्यादा सभी की रक्षा होगी और ऐसा करने से गुरुदेव भी भगत से प्रसन्न रहेंगे

3) किसी भी समारोह में भगत ने नाही तो किसी का फूल माला आदि देकर या पहनाकर झूठा सम्मान करना चाहिए, और नाही अपना सम्मान करवाना चाहिए, क्योंकि सम्मान करवाना पूजा में आता है - जोकि भगत के लिए विष के समान है, क्योंकि सृष्टि में पूजा के योग्य एकमात्र गुरुदेव भगवान है अन्य कोई नही

4) इसके अलावा, गुरुदेव के आदेश अनुसार भगत ने भूलकर भी किसी धार्मिक अनुष्ठान, जागरण, अन्य संत या आन उपासको के भंडारों में शामिल नही होना है

गुरदेव भगवान कहते है, **कबीर कथा करो करतार की, सुनो कथा करतार - आन कथा सुनिए नही, कहै कबीर विचार**, अर्थात सतगुरु से सृष्टि का यह उत्तम तत्त्वज्ञान लेने के बाद, हमे अन्य सभी देवी देवताओं, साधु संतों के आध्यात्मिक स्तर का पता चल जाता है, अतः उनके विचार (सत्संग) सुनना भी अपना समय व्यर्थ करने के समान है ,

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि - पतिव्रता स्त्री अपने पति के अलावा किसी भी गैर पुरुष की प्रसंशा नही सुन सकती है, ठीक इसी तरह एक पतिव्रता आत्मा अपने पति परमेश्वर (गुरु भगवान) के सत्संगों के अलावा, अन्य गैर तत्त्वज्ञान हीन संतो के सत्संग नही सुन सकती है, चाहे वे कितनी ही अटबट और मीठी मीठी बाते क्यो ना करे

गुरुदेव भगवान कहते है, **बीजक की बाता कहै और बीजक नाही हाथ - पृथ्वी डुबोवन उतरे ये कहकर मीठी बात**
अतः हर स्थिति में ज्ञानी साधक को ज्ञान आधार से चलते हुए अपनी भक्ति मर्यादाओं को बचाना है

शादी के उपरांत, घर पर आई बहन बेटी या बुआ को, जाते समय कपड़े पैसे आदि दे सकते है ना नही ?

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि भक्तिमार्ग में सामाजिक रीति रिवाज व लोकलाज एक बहुत बड़ा रोड़ा है , लेकिन एक भगत के लिए गुरु वचन की लाज, समाज की लोकलाज से असंख्य गुणा बढ़कर होती है
गुरुदेव कहते है, **लोकलाक ना कीजिए निर्भय हो रहिए - जो मन चावै मुक्ति को, तो दासातन धरिये**

गुरुदेव ने बताया कि... शादी के उपरांत यदि बहन बेटी मिलने के लिए घर आती है, तो उनको यथोचित प्यार सम्मान और इज्जत दे, अच्छा खाना खिलाये, लेकिन जाते समय कपड़े या पैसे आदि का लेनदेन बिल्कुल भी ना करे, ऐसा करने से एक दूजे पर ऋण **(भार)** चढ़ जाता है

परमात्मा (गुरुदेव) कहते है .. **एक लेवा एक देवा दूतम, कोई किसी का पिता नही पूतम - ऋण संबंध जुड़ा सब नाता, अंत समय सब बारह बाटा,** अर्थात, इन्ही ऋण संबंधों (लेन देन) के चलते आज हम एक दूसरे के रिश्तेदार बने बैठे है

☞ कोई बेटी और साथ मे दहेज देकर पिछला ऋण उतार रहा है

☞ तो कोई बेटी और दहेज लेकर, अगले जन्मों में, फिर उस दहेज देने वाले का गधा बैल या ऊँट बनकर, उस ऋण को उतारने की तैयारी कर रहा है

☞ गुरुदेव के आदेश अनुसार यदि आपकी बहन बेटी या बुआ नाम उपदेशी है और मिलने के लिए घर पर आती है, **तो विदा करते समय आपने भूलकर भी कपड़े या पैसे नही देने है**

☞ साथ मे उस बहन या बेटी का पति या ससुर है तो आपने उसकी जुहारी करना, पैसे देना या तिलक आदि कुछ नही करना है

☞ यदि बहन बेटी या बुआ अनुपदेशी है, तो भी ज्ञान आधारी भगत् ने किसी भी तरह का लेन देन नही करना है वर्ना गुरुदेव का वचन भंग जो जायेगा

सन 1994 के आसपास जब गुरुदेव ने भक्तिमार्ग की शुरुआत की थी, उस समय भगत आत्माये इस तत्त्वज्ञान को इतना गहराई से ना समझ

पाने की कमी के चलते, इन व्यर्थ की परम्पराओ व समाज से संघर्ष नही कर पा रही थी, इसलिए गुरुदेव ने उस समय, उन आत्माओं को हल्की सी छूट देते हुए कहा था कि.. यदि आपकी बहन बुआ और बेटी अनुपदेशी है और वे जिद्द करती है या आप लोकलाज व शर्माशर्मी के कारण उन्हें मना करने की हिम्मत नही कर पाते है, तो जाते समय उन्हें एक जोड़ी कपड़ा दे सकते है - **लेकिन पैसे बिल्कुल भी ना दे - क्योंकि आपके द्वारा दिये पैसे का यदि बीड़ी सिगरेट, तम्बाकू या शराब मास आदि में प्रयोग हुआ, तो उसका दोष सीधा सीधा पैसे देने वाले को लगता है**

(लेकिन पुण्यात्माओं - आज गुरुदेव के द्वारा इतना ज्ञान और समाधान देने के बावजूद भी यदि हम, उस 1994 वाले ऑप्शन का लाभ उठाते है, तो यह बात गुरुजी को दुःखी करने के समान है, अतः अनुपदेशी बहन बेटी को प्यार प्रेम से अपनी भक्ति व मर्यादा के विषय मे समझाना होगा, यदि वो नही मानती है तो फिर आपने भी उनकी जिद्द के आगे गुरु वचन को हरगिज नही तोड़ना चाहिए, चाहे वे नाराज हो या खुश हो

गुरुदेव कहते है **कुल करनी के कारणे हंसा गया बिगो - तब यो कुल के कर लेगा, जब तू चार पाया का हो** अर्थात यदि आज हम लोकलाज में आकर इन रिश्तेदारों की जिद्द व व्यर्थ की परम्पराओ के आगे झुककर, कल को मरने के बाद जब पशु बनकर कष्ट उठाएंगे, उस समय ये रिश्तेदार हमारे क्या काम आएंगे, काम तो सतगुरु देव जी ने ही आना था, लेकिन सतगुरु को हमने अपनी नासमझी और उन रिश्तेदारों की जिद्द के आगे मर्यादा तोड़कर नाराज कर डाला

☞ यदि अनुपदेशी बहन बेटी या रिश्तेदार, जब कभी मिलने आये और साथ मे कुछ फल या मिठाई लेकर आते है, तो प्रेम पूर्वक उन्हें अपनी भक्ति मर्यादाओं के विषय मे बताकर मना करे की आगे से आपने कुछ भी

लेकर नही आना है, और कहे कि आप मिलने आ गये है इसके बढ़कर मिठास किसी फल या मिठाई में नही है , और उन फल या मिठाई को सर्व प्रथम पूज्य गुरुदेव जी को भोग लगाये यदि शुध्द देशी घी से निर्मित है तो, अन्यथा अन्न देव की आरती करके खा सकते है और उन्हें भी खिला दे, साथ ही जितने पैसे के फल या मिठाई है, उतना पैसा अलग से निकालकर दरबार मे रख दे तथा गुरुदेव को आश्रम में दान कर दे, ताकि वह भार हमारे ऊपर ना रहे **(वैसे यह आपके ज्ञान आधार पर निर्भर करता है, आपने उन फल या मिठाईयों को खाना है की नही)** दास तो हरगिज नहीं खायेगा, चाहे पशुओं को ही क्यों ना खिलाना पड़े

☞ यह प्रक्रिया सिर्फ एक बार के लिए है, दूसरी बार यदि फल या मिठाई लाते है तो स्वीकार ही नही करना है , चाहे नाराज रहे या खुश रहे क्योंकि हमने वचन की पालना करके अंतर्यामी गुरुदेव को खुश रखना है नाकि रिश्तेदारों को

गुरुदेव ने बताया कि - अनुपदेशी के ऊपर तीन लोक का भार होता है - रिश्तेदार चाहे कितनी ही ईमानदारी से काम धंधा क्यो ना करता हो, चाहे नशा या मांस भी ना खाता हो, लेकिन सतगुरु की शरण मे आकर सच्चे नाम का जाप नही करता है, तो उसके ऊपर तीन लोक का भार चढ़ा ही रहेगा, अतः हमने किसी भी सुरत में भावनाओ में नही बहना है

दूसरी बात यह भी है कि - **जब तक हम मर्यादाओं को लेकर संघर्ष नही करंगे, तो रिश्तेदार भी अपनी हरकतों से बाज नही आएंगे, और हर बार हमें ऐसे ही दुःखी करते रहेंगे**

यदि बहन बेटी या कोई रिश्तेदार की आर्थिक स्थिति कमजोर है, तथा आपसे पैसे वस्त्र या अनाज आदि की मदद मांगता है, और यदि आप

सक्षम है तो गुरुदेव ने बताया कि आप उधार रूप में पैसे वस्त्र या अनाज देकर उनकी मदद कर सकते है, बदले में ब्याज आदि बिल्कुल भी नही लेना है, यदि रिश्तेदार किसी कारणवश आपका उधार का सामान या पैसा समय पर नही दे पा रहा है या मना कर देता है, तो आपने उनसे मन मुटाव या लड़ाई झगड़ा बिल्कुल भी नही करना है, ऐसा करने से भगत की मर्यादा टूटती है और मानसिक तनाव के चलते भजन में भंग पड़ता है, अतः यहाँ गुरुदेव ने यह भी बताया कि इन सभी बातों को सोच समझकर ही मदद करे, वर्ना प्रेम पूर्वक मना कर दे

यदि भगत अपनी किसी उपदेशी या अनुपदेशी बहन बेटी बुआ या रिश्तेदारी में जाता है, तो उनके लिए कुछ फल या देशी घी से निर्मित मिठाई लेकर जा सकता है

यदि मजबूरी वश आपको किसी रिश्तेदारी में जाना पड़ जाता है, और रात्रि में रुकना मजबूरी है, तो ध्यान रहे यदि उस घर मे कोई शराबी है या उस घर मे मांस बनता है, तो भूलकर भी अन्न जल ग्रहण ना करे, यदि कोई शराबी या मांसाहारी नही है तो ऐसी स्थिति में आपजी भोजन करने से पहले अन्न देव की छोटी आरती व भोजन के बाद में अन्न देव की बड़ी आरती करके ही भोजन ग्रहण करे, (यदि विशेष मजबूरी है तो)

रिश्तेदारी से वापस आते समय आपने बहन बेटी बुआ या किसी बालक के हाथ मे पैसे नही देना है, **यदि आपके द्वारा दिये गए पैसे का दुरुपयोग हुआ, तो उसमें आपको दोष लगता है और गुरुजी का वचन भंग होता है**

पुण्यात्माओं, हो सकता है आज इस संघर्ष की बदौलत आपको अपमान, भला बुरा या गाली भी खानी पड़े, लेकिन भविष्य में इसका फल बहुत ही मीठा होगा , क्योंकि कल को जब गुरुजी का ज्ञान घर घर मे हो जायेगा,

उस समय यही रिश्तेदार जो आज हो सकता है आपका अपमान कर रहे हो, लेकिन कल को संघर्ष के लिए सम्मान भी देंगे, अतः हर स्थिति में अपनी भक्ति मयादाओं को बनाये रखना है

नाम उपदेश प्राप्त करने के बाद, बड़े बुढ़ो के पैर छूना, दुसरे व्यक्ति को या भगत को Good morning, Good afternoon, Good night, Happy birthday, Happy New year, Good bye आदि बोल सकते है या नही ?

ज्ञानी भगत को पूज्य गुरुदेव जी ने बताया कि, **मन कर धीर बांध लेरे बावरे - छोड़ देना पिछलों की रीत - सतगुरु तारेंगे**, अर्थात आज से पहले हमारे पूर्वज आध्यात्मिक ज्ञानहीनता के चलते, जिन व्यर्थ की परम्पराओ व रीति रिवाजों में अपना धन, समय और स्वास बर्बाद कर रहे थे, अब सतगुरु से तत्वज्ञान प्राप्त होने के बाद भगत ने उन्हें छोड़ देना है

भक्तिमार्ग से अनजान व्यक्ति के लिए Good Morning, Good Evening, Good Afternoon, Happy Birthday या अन्य कई तरह की Wishes (बधाई) देना एक सामान्य बात है , **लेकिन तत्त्वज्ञान प्राप्त भगत को सतगुरु ने बताया कि ऐसा बोलने से भी हमारी भक्ति कमाई में पेंचर हो जाता है**

Good Morning का अर्थ होता है, आपकी सुबह बहुत अच्छी हो, आपको किसी दुःख तकलीफ का सामना ना हो, यह शब्द कहते ही आपकी भक्ति कमाई (पुण्य) खत्म होने शुरू हो जाते है

मान लीजिए , सामने वाले के पास पुण्य शेष नही है, और किसी पाप कर्म के चलते सुबह 8 बजे उसका एक्ससिडेंट होना है, लेकिन आपने 7 बजे ही Good Morning कहकर उसके लिए अच्छी सुबह की कामना कर दी, अब काल क्या करेगा, आपके कुछ पुण्य उसके खाते में डालकर कुछ

समय के लिए उसके एक्सीडेंट को भी रोक देगा और आपकी भक्ति कमाई भी खत्म करवा देन, लेकिन जब तक आपके पुण्य का सामने वाले पर प्रभाव रहेगा, तब तक हो सकता है उसका बचाव हो जाये, लेकिन कुछ दिन बाद जैसे आपके द्वारा Good Morning बोलकर उसको संकल्प किये गए पुण्य खत्म होंगे, फिर से उसके साथ वही दुर्घटना घटेगी

अर्थात उसके साथ तो पापकर्म के चलते वो घटना घटनी ही थी, पहले नही तो आज, लेकिन आपके मुख से Good Morning बुलवाकर काल ने आपके भी कुछ पुण्य (भक्ति कमाई) नष्ट करवा डाला ठीक इसी तरह Happy Birthday आदि को समझे

ठीक इसी तरह ज्ञानी भगत ने किसी भी व्यक्ति को दुआ या बद्दुआ या आशिर्वाद नही देना है, उससे भी हमारी भक्ति कमाई नष्ट होती है, जैसे अपनी गाड़ी के टायर से आधी हवा किसी दूसरे की गाड़ी के टायर में डालना समझदारी नही बल्कि मूर्खता है, ठीक इसी तरह किसी को आशिर्वाद देने का मतलब है, अपनी भक्ति कमाई को उसे संकल्प करना

गुरुदेव ने बताया कि हमने सतलोक जाना है, उसके लिए हमारे पास जबरदस्त भक्ति कमाई का संग्रह होना जरूरी है, अन्यथा हम काल का ऋण नही उतार पाएंगे , जैसे पर्याप्त हवा का प्रेशर ना होने पर गाड़ी के टायर में हवा प्रवेश नही कर पाती है - उसके लिए पहले मोटर या इंजन चलाकर टंकी में हवा डालकर प्रेशर बनाया जाता है फिर प्रेशर के साथ टायर में हवा डाली जाती है, उसके बाद रोड़ पर गाड़ी सैकड़ो टन वजन लेकर दौड़ती है

अतः हमने सतलोक जाना है, उसके लिए जबरदस्त पुण्य कमाई का प्रेशर चाहिए होगा, और यदि अज्ञानता में हम यही पर किसी को दुआ बद्दुआ,

आशिर्वाद या Good Morning आदि कहकर भक्ति खत्म करते रहेंगे, तो सतलोक नही जा सकेंगे, इसके लिए गुरु आदेश अनुसार ज्ञान को आधार बनाकर हमने इस तरह की गलतियां करने से बचना है

गुरुदेव भगवान ने बताया, यदि सामने वाला हमे Good Morning आदि बोलता है तो हमारे पास 2 ऑप्शन है

☞ पहला यह कि, हम उसे सत् साहेब कह दें

☞ यदि आप सत् साहेब कहने में शर्माते है या हिचकिचाते है तो GOOD MORNING की जगह GOD MORNING कह दे , अर्थात आज की सुबह परमात्मा की दया से हुई है, यदि हम सतभक्ति व शुभ कर्म करेंगे तो परमात्मा हमारी रक्षा करेंगे, इस तरह से हम भक्तो ने अपनी भक्ति व मर्यादाओं को बचाना है

गुरुदेव ने बताया, यदि आप भगत है तो आपने किसी के पैर नही छूने है और नाही छूने देना है, यदि अचानक या जानबूझकर कोई आपके पैर छूना चाहे तो आपजी भी उतना ही नीचे झुककर उसे अपने गले से लगा ले, तथा आगे से वह आपके पैर ना छुये, उसके लिए उन्हें अपनी भक्ति व मर्यादाओं के विषय से परिचित करवाये, हो सकता है उसे भी यह मार्ग समझ मे आ जाये और अपना आत्म कल्याण करवाले

Note - अधीक जानकारी के लिए, you tube पर सतगुरु रामपाल जी भगवान के सत्संग सुनते रहिए

उपदेशी माता बहनों व भाइयो को शरीर पर सोने (Gold) के आभूषण (चेन, अंगूठी, पाजेब, हार, नाक कानो में बालियां आदि) धारण करने चाहिए या नही ?

। गुरुदेव ने बताया कि - जिस प्रकार किसी भयंकर रोग से ग्रस्त व्यक्ति को स्वस्थ होने के लिए डॉक्टर द्वारा बताये गए प्रत्येक परहेज (नियम) को सावधानी से निभाये बिना, रोग का निवारण नही हो सकता है, ठीक इसी तरह हम 21 ब्रह्मांड के प्राणियों को जन्म व मरण का भयंकर रोग लगा हुआ है, यदि इस रोग से छुटकारा पाना है तो सच्चे सतगुरु की शरण प्राप्त करके, उनके द्वारा बताए गए प्रत्येक नियम (मर्यादा) को निभाना ही पड़ेगा

पूज्य गुरुदेव का आदेश है कि भगत भाई बहनों को सोना व चांदी (गोल्ड / सिल्वर) नाही तो शरीर पर धारण करना है और नाही अपने घर पर रखना है

सोने चांदी के आभूषण शरीर पर धारण ना करने के पीछे की क्या वजह है

गुरुदेव ने बताया कि कलयुग की शुरुआत से पहले धरती पर कुछ धार्मिकता शेष थी, लेकिन कलयुग में काल ने भिन्न भिन्न स्वरूप में स्वयं प्रकट होकर तांडव मचाना था, क्योंकि उसे पता है कि मेरे द्वारा मांगे गए वचन अनुसार वह पूर्ण परमात्मा कबीर देव, इस पृथ्वी पर पुनः धर्म की स्थापना व जीव आत्माओं को सच्चा ज्ञान व नाम देकर सतलोक ले जाने के लिए किसी भी संत रूप में प्रकट होंगे, अतः उस परमेश्वर के आने से पहले काल ने अपनी सूझबूझ व षड्यंत्र के माध्यम से सभी जीवों की मनोवृत्ति को गंदा करना था

द्वापर युग के अंत मे, महाभारत युध्द के बाद, काल निरंजन ने पांडवो के अंतिम वंशज राजा परीक्षित से उसके राज्य में रहने की जगह मांगी, तो राजा परीक्षित ने उसे चार जगह पर रहने की अनुमति दी थी

प्रथम - जहाँ जुआ खेला जाता हो
दूसरा - जहाँ शराब बनाई व बेची जाती हो अर्थात जहाँ मदपान होता हो
तीसरा - वैश्या खाना अर्थात जहाँ परस्त्री संग होता हो
चौथा - जहाँ हिंसा होती हो , क्योंकि इन जगहों पर, काम क्रोध मद, लोभ, निर्लज्जता व निर्दयता के साथ अधर्म का वास होता है, लेकिन काल ने फिर प्रार्थना की, हे राजन - ये चारों जगह मेरे लिए सीमित है, आप मुझे निवास करने के लिए कोई और जगह दे, जो असीमित हो

तब राजा परीक्षित ने कलयुग से कहा कि, धन में रजोगुण का वास होता है, अतः आप सोने में भी रह सकते हो उसी समय काल, राजा परीक्षित के सोने से बने मुकुट में प्रवेश करके उसकी बुद्धि को अपने वश कर लिया , और काल ने राजा परीक्षित से जंगल मे साधना कर रहे शमीक ऋषि के गले मे मरा हुआ सर्प डलवा दिया, ऋषि के पुत्र ने राजा परीक्षित को 7 वें दिन तक्षक सर्प द्वारा मृत्यु का श्राप दे दिया

अर्थात - कहने का तात्पर्य है कि - यदि राजा परीक्षित ने सोने से बना हुआ मुकट नही पहना होता तो काल सोने में प्रवेश करके, उसकी बुद्धि भ्रष्ट ना करता और नाही राजा परीक्षित क्रोधित होकर शमीक ऋषि के गले सर्प डालता, और नाही श्राप के कारण तक्षक सर्प के डसने से उसकी अकाल मौत होती

अतः इस सत्य कहानी से भी हम भगत भाई बहनों ने यह शिक्षा लेनी है कि, सोने में रजोगुण का वास होता है अतः शरीर पर सोना (आभूषण) धारण करते ही मान बड़ाई व अहंकार उत्पन्न हो जाना एक सामान्य बात है, क्योंकि शरीर पर सोना धारण करने का अर्थ है अपनी सुंदरता और धनी होने का दिखावा करना, जिससे मान बड़ाई व अहंकार उत्पन्न होता है ,

गुरुदेव कहते है कि - **मान बड़ाई से है दूर - आजिज के हरि सदा हजूर,** अर्थात मान बड़ाई व अहंकार से ग्रस्त भगत से भगवान बहुत दूरी बनाकर रहते है, तो मेरे प्यारे भाई बहनों, वह सोना किस काम का जो भगत को सबसे अनमोल वस्तु भगवान से दूर करता है

गुरुदेव कहते है - **साधु सोही जो सीधा चालै** अर्थात भगत को साधारण जीवन और उच्च विचारों के साथ भक्तिमार्ग पर चलते रहने से ही भगवान की प्राप्ति होती है

अतः पूज्य गुरुदेव के आदेश अनुसार यदि हमने भक्तिमार्ग पर सफल होना है, तो नाही शरीर पर सोने चांदी से बने आभूषण पहनने है, और नाही सोना चांदी अपने घर पर रखना है

मैं परिवार में अकेली उपदेशी हूँ, मैं सोना पहनना त्याग सकती हूँ लेकिन मेरी मजबूरी है कि घरवालों के विरोध के चलते सोना नही बेच सकती , ऐसा करने से गुरुजी के आदेश की अवहेलना होगी या नही ?

यदि आप परिवार में अकेली उपदेशी है और आपको ज्ञान हो गया है कि पूज्य गुरुदेव ने सोने चांदी या नकली आभूषण शरीर पर धारण करने से मना किया है, तो चाहे आपका घर मे विरोध हो या ना हो, आपने कोई भी आभूषण नही पहनना चाहिए, रही बात सोना चांदी के आभूषण बेचने की - यदि परिवार में आभूषण बेचने को लेकर आपका विरोध होता है तो ध्यान रहे, आपने नाही तो आभूषण पहनना है और नाही उस घर मे रखे आभूषण में आपकी कोई आसक्ति होनी चाहिए, यदि आप परिवार की मुखिया है आपका विरोध नही है, **तो आपजी सोने चांदी के उन आभूषणों को बेचकर, उस पैसे को अपने घर के कार्यों या दान धर्म मे**

प्रयोग करे

गुरु वचन से बढ़कर भगत के लिए दुनिया मे दूसरी कोई भी वस्तु अनमोल नही है, गुरुदेव ने सतलोक ले जाने के लिए हमारी इस गंदे लोक की प्रत्येक वस्तु सहित परिवार व संपत्ति से भी आस्था हटवानी है

गुरुदेव कहते है - **जहाँ आशा तहा वासा होई - मन कर्म वचन सुमरियो सोही**, अर्थात शरीर त्यागते समय यदि इस गंदे लोक की किसी भी वस्तु में हमारी इच्छा रही, तो परमेश्वर ने अपने विधान अनुसार फिर से भगत को यही 84 लाख योनियों में जन्म देना पड़ेगा, जो महादुःख का कारण होगा

अतः उस अंतिम समय में हमारी आस्था किसी भी सांसारिक वस्तु में ना बने, इसके लिए पूज्य गुरुदेव जी सोने चांदी के आभूषण उतरवाकर हमारी आस्था की परीक्षा लेते है, यदि हम इस परीक्षा में फेल हो जाते है तो यह साबित हो जाता है कि अभी हमारे भगत बनने में बहुत कमी है क्योंकि गुरु का आदेश ना मानना, गुरु के सिर में जूते मारने के समान होता है

उपदेशी माता बहने टिक्की, बिंदी, मांग, नेल पोलिस, लाल होठ करना आदि हार श्रृंगार कर सकती है या नही ?

पूज्य गुरुदेव जी ने बताया कि - भगवान ने हमे इतना सुंदर मानव शरीर दिया है, अतः और अधिक सुंदर दिखने की चाहत में इस शरीर पर बेवजह टिक्की, बिंदी, आभूषण, या अन्य श्रृंगार आदि करना **उस परमेश्वर की रचना को अधूरी साबित करना है**

यदि वास्तव में शरीर पर इन श्रृंगारों की आवश्यकता होती, या इस तरह के श्रृंगार करने से शरीर की सुंदरता बढ़ती है, तो परमेश्वर माँ के ग्रभ से ही शरीर पर इन सभी वस्तुओं को लगाकर जन्म देता, यह व्यर्थ के आडम्बर, इंसान ने तत्त्वज्ञान की कमी के चलते, देखा देखी व सुंदर

दिखने की चाहत में धारण करने शुरू किए है, अतः इन आडम्बरो की भक्तिमार्ग में कोई आवश्यकता नही है

माता बहने मुख्यतः दो ही कारणों से हार श्रृंगार करती है

1) प्रथम तो तत्त्वज्ञान की कमी के चलते, एक दूसरे की देखादेखी में हार श्रृंगार करना **(जैसे नेल पोलिस करना, होठ लाल करना, मेहंदी लगाना, टिक्की लगाना, मांग भरना आदि)** यदि भगत बनने से पहले तत्त्वज्ञान की कमी के चलते हार श्रृंगार करने शुरू किए थे, तो आज पूज्य गुरुदेव जी ने 27 वर्षों से सत्संग करके उस कमी को भी पूरा कर दिया है, भगत ने दुनिया को देखकर उनकी रीस (बराबरी) नही करनी बल्कि अपने गुरुदेव के वचन अनुसार चलना चाहिए

2) दूसरा, यदि माता बहने अपने पति को खुश करने के लिए हार श्रृंगार करती है, तो नामदीक्षा लेने के बाद यह ज्ञान हो जाना चाहिए कि, अब हमने शरीर के पति को नही बल्कि आत्मा के पति गुरुदेव भगवान को प्रसन्न करना है , और गुरु भगवान की प्रसनन्ता इस नकली हार श्रृंगार में नही बल्कि उनके वचन में रहकर भक्ति करते रहने से है

हमने नकली शारीरिक श्रृंगार से अधिक, आत्मिक श्रृंगार **(शील, संतोष, विवेक, दया, क्षमा)** रूपी असली गहनों को धारण करना है, जिससे हमारे गुरुदेव भगवान प्रसन्न होकर हमे भक्ति का आशिर्वाद दे

जब तक हम इन झूठे हार श्रृंगार व नकली गहनों का त्याग नही करेंगे, तब तक हम असली आत्मिक श्रृंगार **(शील, संतोष, विवेक, दया, क्षमा)** को धारण करने योग्य नही बन सकते है, और इन असली आत्मिक गहनों को धारण किये बिना, हम मोक्ष के अधिकार नही बन पाएंगे

और वैसे भी ज्ञानहीन प्राणी इस शरीर पर नकली हार श्रृंगार तब तक ही

करता है, जब तक वह युवा है, बुढ़ापे में भयंकर रोग हो जाने पर या किसी प्रिय की मौत हो जाने के उपरांत, यदि कोई आपको कहे कि चलो 16 श्रृंगार करते है, डिस्को में चलते है, उस दुःख की घड़ी में व्यक्ति की, किसी भी हार श्रृंगार व मौज मस्ती के साधन में रुचि नही बनती है, सब कुछ फीका लगता है

दुनिया को दुःख या संकट की घड़ी में यह सब हार श्रृंगार फीके लगते है - लेकिन भगत को, गुरुदेव भगवान ने तत्त्वज्ञान देकर ज्ञान वाली आंखों से इस गंदे लोक के झूठे सुखों से अवगत करवाकर, पहले ही सबकुछ दिखा दिया है कि यहां सबकुछ फीका व झुठा है, अतः ज्ञान आधार से माता बहनों या भाइयो की, इस भक्तिमार्ग में बाधक झूठे हार श्रंगार (**आभूषण, टिक्की, बिंदी, मांग भरना, नेल पोलिस करना, होठ लाल करना, मेकअप करना,)** आदि से दूर रहकर, गुरु भगवान को मोक्ष के लिए प्रसन्न करने का ही प्रयास करते रहना चाहिए

हम अपने पड़ोसी, या रिश्तेदार के घर शादी विवाह के समारोह में जा सकते है या नही? किसी मजबूरीवश जाना भी पड़ जाये, तो क्या क्या सावधानी रखनी है ?

पूज्य गुरुदेव जी ने बताया कि, नाम उपदेश लेने के बाद, सामाजिक प्रथाओं, परम्पराओ, रीति विवाज आदि को लेकर भगत व जगत में विचारों को लेकर 36 का आंकड़ा हो जाता है, शादी विवाह में व्यर्थ का लेनदेन करना, भात भरना, घोड़ी, बैंड बाजा, आदि ड्रामेबाजी करना व उसमें सहयोग करना, भक्ति मार्ग में भगतो के लिए विष तुल्य है, तीन लोक की सृष्टि ब्रह्मा विष्णु महेश जी से शुरू होती है, और जब इन तीनो देवताओं की शादी दुर्गा जी ने समुद्र मंथन के समय की थी

☞ तो नाही सात फेरे दिलवाने कोई पंडित जी आया था

☞ ना कोई भाती और बाराती था
☞ ना कोई बैंड बाजा या DJ बजाने वाला था
☞ ना कोई मिठाई बनाने वाला था

वर्तमान में उपरोक्त सब आडंबर एक दूसरे की देखादेखी में शुरू हुए है, जो आज 90% समाज के लिए दुख व कर्ज का मूल कारण है, अतः गुरुदेव ने स्पष्ट तौर पर ऐसे सामाजिक आडम्बरो को करने या उनमें सहयोग देने के लिए मना किया है, अतः गुरुदेव के सत्संगों के माध्यम से इन सब बातों से परिचित होकर भी, यदि हम ऐसे किसी शादी या समारोह में शामिल होते है, तो वह सहयोग करने की श्रेणी में आता है, और भगत होकर यदि हम सहयोग करते है, तो भला आम समाज से इन परम्पराओ के समाप्त करने की हम क्या उम्मीद कर सकते है, साथ ही ज्ञान हो जाने पर ऐसा करने या सहयोग देने से गुरु मर्यादा भी टूटती है और हमे आध्यात्मिक लाभ होना बंद हो जाएंगे

यदि शादी विवाह में मजबूरीवश जाना भी पड़ जाये, तो क्या क्या सावधानी रखें ?

यदि आपने गुरुदेव के सत्संगों को ध्यान से सुना और समझा होगा, तो यह **'मजबूरी'** शब्द आपकी जुबान पर नही आ सकता है, मजबूरी तब तक ही हो सकती है, जब तक कि आपको ज्ञान ना हो

और ज्ञान ना होने की स्थिति में गुरुदेव ने बताया कि, यदि आपको जाना भी पड़ जाये, तो वहाँ किसी भी आडंबर, लेन देन व पूजा पाठ में नाही शामिल होना है और नाही सहयोग करना है, एकांत में बैठकर अपना भजन कीजिए या किसी रिश्तेदार के साथ परमेश्वर की चर्चा कीजिए, लेकिन हम सब जानते है की, पाखंड की दुकान पर जाकर यदि हम साधु बनने की कोशिश करेंगे, तो हंसी के पात्र ही बनेंगे अतः ज्ञान आधार

कहता है कि ऐसी जगह जाने से बचना चाहिए - क्योंकि आप कितना भी प्रयास करे लेकिन आपके अंदर ज्ञान व दृढ़ता की कमी के चलते, किसी न किसी जगह मर्यादा अवश्य खंडित होगी

कहते है, **मूर्ख की प्रीत बुरी, जुएँ की जीत बुरी, बुरे संग बैठ चैन भागे ही भागे - काजल की कोठरी में कैसा भी यत्न करो, काजल का दाग भाई लागे ही लागे**

गुरुदेव ने बताया कि - 3 तरीको से मर्यादा खंडित होती है

☞ **पहला तरीका है अनजाने में मर्यादा खंडित होना** (अनजाने में यदि मर्यादा खंडित होती है तो गुरुदेव क्षमा करते है

☞ **जान बूझकर मर्यादा खंडित करना** (जानबूझकर मर्यादा खंडित करने पर वह भगत नाम रहित हो जाता है, उसके बाद उसे संस्कारवश, लाभ है तो लाभ और हानि है तो हानि ही उठानी पड़ेगी, गुरुजी की तरफ से कोई सहारा नही मिलेगा)

☞ **तीसरा है दबाव या मजबूरी में आकर मर्यादा तोड़ना** (दबाव या मजबूरी में मर्यादा तोड़ने पर भी भगत को हानि उठानी पड़ेगी - यदि मौत होनी है तो पैर टूटकर रह जायेगा - लेकिन सजा अवश्य है)

अतः भक्ति और मर्यादा बचाकर, सतगुरु को खुश करके, इसी जन्म में अपना मोक्ष करवाना है, तो ज्ञान को आधार बनाकर संघर्ष करते हुए, ऐसे आडम्बर स्वयं करने से भी बचे और उनमें सहयोग भी ना दे

बच्चो की (शादी) रमैनी कैसे करे व किन किन बातों व मर्यादाओं का ध्यान रखे ? यदि बच्चो ने पहले से ही एक दूसरे को पसंद कर रखा है तो माता पिता को क्या करना चाहिए ?

बच्चो का विवाह संस्कार, परमात्मा (गुरुदेव) द्वारा उनके जन्म से पहले ही निर्धारित कर दिया गया होता है, उपदेश प्राप्त करने के बाद भगत को

अधिक चिंता अपनी भक्ति व मर्यादाओं की होनी चाहिए, नाकि बच्चो के विवाह की

यदि बच्चे अन उपदेशी है तो उन्हें उनका संस्कार ही मिलेगा, यदि उपदेशी है तो उनकी डोर परमात्मा (गुरुदेव) के हाथ मे आ जाती है, उसके बाद उनकी भलाई शादी में है या शादी ना करने में है, इसका फैसला परमात्मा (गुरुदेव भगवान) पर छोड़ देना चाहिए

शादी के लायक उपदेशी भाई बहनों को, गुरुदेव का विधान और मिशन सदा याद रखना चाहिए , शादी से पहले आपने किसी भी लड़की या लड़के को अपने होने वाले पति या पत्नी की नजर से नही देखना है, नाही किसी सत्संग या सेवा में रहते हुए, आपसी सहमति से लड़के या लड़की ने शादी की बात करनी है

यदि आप गुरु भगत है और आपको ज्ञान है, तो आपने अपने माता पिता की अनुमति व जानकारी के बिना किसी भी लड़के या लड़की से शादी से पहले नाही तो किसी भी तरह का संबंध स्थापित करना है, और नाही शादी से संबंधित बातचीत करनी है

आपको विश्वास है कि, परमात्मा ने यदि मेरे भाग्य में शादी वाला संस्कार लिखा हुआ है, तो समय आने पर मेरी कोशिश के बिना ही वह संस्कार अवश्य जुड़ जायेगा, उसके लिए चाहे माता पिता निमित बने या कोई रिश्तेदार या अन्य भगत भाई बहन

मैं उपदेशी हूँ और माता पिता अन उपदेशी है , उनकी जानकारी के बिना एक लड़की को पसंद कर रखा है, हम दोनों शादी करना चाहते है - क्या करे ?

यदि गलती से उपदेशी लड़का लड़की ने आपसी सुखबूझ या

अज्ञानता में एक दूसरे को पसंद भी कर रखा है, तो शादी से पहले भूलकर भी पति पत्नी कर्म ना करे , शादी से पूर्व भाई बहन वाला रिश्ता कायम रखे , तथा भले ही आपके माता पिता अन उपदेशी है, फिर भी आपका कर्तव्य बनता है कि आप दोनों अपने अपने माता पिता के सामने शादी का प्रस्ताव रखे , यदि दोनों पक्ष से माता पिता शादी के लिए अनुमति दे देते है, तो आपजी मर्यादा में रहकर 16 मिनट की असुर निकंदन रमैनी द्वारा साधारण तरीके से ही शादी करे

यदि एक पक्ष या दोनों पक्ष के माता पिता, रमैनी के द्वारा या शादी के प्रस्ताव से सहमत नही है, तो भी माता पिता की आज्ञा व सहमति के बिना शादी (रमैनी) करना उचित नही है , यदि फिर भी आप जबरदस्ती संस्कार जोड़ना चाहते है, तो यह आपकी अपनी मर्जी होगी

मैं उपदेशी हूँ तथा माता पिता अन उपदेशी है - लेकिन माता पिता अपनी पसंद की लड़की/ लड़का से मेरी शादी करना चाहते है - ऐसी स्थिति में क्या करे ?

यदि अन उपदेशी माता पिता अपनी पसंद की लड़की या रिश्तेदारी में आपकी शादी करना चाहते है, तो आपको इसमें कोई दिक्कत नही होनी चाहिए, माता पिता कभी भी अपने बच्चो का बुरा नही सोचते है, लेकिन ऐसी स्थिति में आपका अधिकार व कर्तव्य बनता है कि आप लड़की के माता पिता के सामने अपनी भक्ति मर्यादाओं व दहेज तथा आडम्बर रहित रमैनी से शादी का प्रस्ताव खुलकर रखे, यदि उन्हें आपकी शर्त मंजूर है तो आपजी शादी के लिए हाँ कर दे, अन्यथा आपको शादी का प्रस्ताव ठुकराने का पूरा अधिकार है, चाहे आपके माता पिता राजी रहे या नाराज, क्योंकि आत्मा कल्याण व मर्यादाओं को लेकर किसी भी कीमत पर समझौता नही किया जा सकता है

मैं उपदेशी हूँ, दोनों पक्ष रमैनी व मेरी मर्यादाओं के अंतर्गत शादी करने को भी तैयार है, लेकिन लड़की अन उपदेशी है क्या अन उपदेशी लड़की से मेरा शादी करना उचित होगा ?

कोई भी व्यक्ति जगत से ही भगत बनता है , आपजी शादी से पहले लड़की के सामने अपनी भक्ति विधि व मर्यादाओं को लेकर खुलकर चर्चा करें, यदि लड़की शादी के उपरांत आपकी भक्ति में बाधा उत्पन्न ना करने का वचन देती है तो आपजी शादी कर सकते है, और कोशिश करे कि उस आत्मा को भी ज्ञान समझाकर तथा अपने व्यवहार से प्रभावित करके, गुरुदेव से नाम उपदेश दिलवाने का प्रयास करे

भक्तिमार्ग में कोर्ट मैरिज करना उचित है या अनुचित ?

कोर्ट मैरिज अक्सर जगत वाले वे लोग करते है, जो शादी को लेकर अपने माता पिता के फैसले से नाखुश होते है या उनके माता पिता उन बच्चों के फैसले से नाखुश होते है, यदि भक्तिमार्ग में कोर्ट मैरिज करना उचित होता, तो सतगुरु रामपाल जी भगवान ने रमैनी पद्दति से शादी करवाने की आवश्यकता नही पड़ती, अतः जल्दबाजी में, अज्ञानता में या भावनाओ में बहकर इस तरह के फैसले करना भविष्य में दुःख का कारण बनते है

पूज्य गुरुदेव जी हम आत्माओं को ज्ञान व भक्ति देकर कलयुग में सतयुग जैसा माहौल लाना चाहते है,

☞ जहाँ बच्चे अपने माता पिता व गुरु को, मन कर्म वचन से भी चोट ना पहुचायें

☞ जहाँ बच्चे सदा यह सोचकर माता पिता व गुरुजनों की प्रत्येक उस आज्ञा का पालन करते है , जो उनके भक्तिमार्ग में लाभ पहुचाने वाली हो / की माता पिता व गुरु कभी भी अपने बच्चो का बुरा नही चाहते है

☞ यदि हम माता पिता व गुरु के भक्ति विधान के विपरीत जाकर, कोर्ट

मैरिज करते है, तो यह सभी को दुःखी करने जैसा कर्म है, और यह भी सत्य है कि माता पिता व गुरु की आत्मा को चोट पहुचाकर किया गया कोई भी कर्म सफलता की सीढ़ी नही चढ़ पाता है
अतः भगत को सीधे व साधारण तरीके से ही कर्म करते हुए, भक्तिमार्ग पर आगे बढ़ते रहना चाहिए

Note - सन 2014 बरवाला कांड के उपरांत, साध संगति के अभाव में आज संगत में होने वाली 50% रमेणियाँ साल छः महीने के अंदर ही टूटती जा रही है , सैकड़ो बहनों का जीवन नरक बन चुका है

अतः साध संगति से जुड़कर, सोच समझकर कदम उठाए, तथा रमैनी को रामायण बनाकर पूज्य गुरुदेव जी की बदनामी का कारण बनने से बचे

रमैनी में क्या क्या सावधानी रखनी है ?

☞ यदि पूज्य गुरुदेव भगवान आश्रम में है, तो उनसे रमैनी की आज्ञा लेकर ही रमैनी करे, सम्भव हो तो गुरुदेव से आदेश लेकर उनकी उपस्थिति में आश्रम में ही रमैनी करे

☞ आज वर्तमान 2022 में पूज्य गुरुदेव जी हिसार जेल में बैठे है, अतः ऐसी स्थिति में ज्ञान को आधार बनाकर, मैरिज हाल या टेंट आदि के अनावश्यक खर्चों से बचते हुए, दोनों पक्षों में से किसी एक के घर पर 15 से 20 व्यक्तियों की मौजूदगी में साधारण तरीके से ही करे

☞ रमैनी में घर पर प्रतिदिन बनने वाले साधारण भोजन की तरह ही व्यवस्था करे, ज्यादा से ज्यादा मिठाई के रूप में खीर को शामिल कर सकते है

☞ पंडित, भाती, बाराती, दहेज के लेनदेन, मुहूर्त , जेवरात आदि के चक्कर मे बिल्कुल नही पड़ना है

☞ रमैनी में दुल्हा दुल्हन साधारण कपड़ों में ही बैठे, विशेष पोशाख या तड़क भड़क वाले वस्त्र ना पहनें

☞ हाथों में मेहंदी, मेकअप, सोने चांदी या किसी भी तरह का नकली आभूषण भी धारण ना करे

☞ बेटी को विदा करते समय रोने धोने का नाटक नही करना है, सभी की बेटियां एक दिन पराई होती है, बेटी को 2 चार जोड़ी कपड़े दे सकते है , लेकिन लड़के को या लड़के के पिता को या आये हुए 5, 10 रिश्तेदारों को किसी भी प्रकार का टीका, तिलक, जुहारी या घड़ी, चेन पैसा नही देना है, और नाही लड़के वाले पक्ष की से किसी भी वस्तु की इच्छा या डिमांड करनी है, यदि ऐसा कुछ किया तो मर्यादा रहित हो जाओगे

☞ रमैनी के कुछ दिन बाद, या कभी भी अपने रिश्तेदारों या यार दोस्तो को पार्टी आदि नही देना है, नाही कोई प्रोग्राम रखना है

ध्यान रखे - काल प्रेरणावश इस दौरान आपके समाज या रिश्तेदारों की तरफ से यदि किसी बात को लेकर संघर्ष का सामना करना पड़े, तो गुरुदेव भगवान पर विश्वास रखते हुए, उन्हें अज्ञानी बालक समझकर लड़ाई झगड़ा या क्रोध करने से बचना है, यदि आप चुप रहेंगे, तो कुछ समय उपरांत वे खुद ही शांत हो जाएंगे ,

यदि कोई भगत सेल्स (Sales and marketing) या अन्य कोई ऐसी नौकरी करता है, तथा उस नौकरी में उसे झूठ बोलना पड़ता है तो क्या करे ?

☞ ग्राहक को गलत जानकारी देना या किसी वस्तु (Product) को बेचते वक्त झुठ बोलकर उसे बढ़ा चढ़ाकर बताना मर्यादाओं के खिलाफ है

☞ ग्राहक को ऐसा झुठ बोलना, जिसका पता चलने पर बाद में उसकी आत्मा दुखी हो , वह कर्म भी मर्यादाओं के खिलाफ है,

☞ कोई भी ऐसा झुठ नहीं बोलना है, जिससे की सामने वाले व्यक्ति

की आत्मा दुखी हो ,

गुरुदेव कहते है

कबीरा आप ठगाइये और ना ठगिये कोय
आप ठगाये सुख होत है, और ठगे दुःख हो

गुरुदेव ने बताया कि - आप एक ही परमात्मा की संतान है, काल ने तुम्हे अलग अलग जाति, धर्म व देश मे बांटकर एक दूसरे से अनजान बना रखा है, इस काल ने पहले से ही हम सबको इतना दुःखी कर रखा है, ऊपर से यदि हम अपने स्वार्थवश एक दूसरे को और दुःखी करते है, तो भगत का यह कर्म सतगुरु को दुःखी करने वाला होगा

अतः जहाँ भी काम करे, चाहे अपना या नौकरी, ईमानदारी और सच्ची नियत के साथ करे, गुरुदेव की नजर हर क्षण भगत के ऊपर बनी रहती है, वे हमारे हर कर्म व सुख दुख से भली भांति परिचित रहते है

ज्यूँ बछडा गऊ की नजर में, यूँ सतगुरु को संत
भक्तो के पीछे फिरै वो भगत वत्सल भगवंत

जो गुरुदेव भगवान, तीनो लोको में प्रवेश करके सबका पालन पोषण करते है, वह समर्थ सतगुरु अपने मर्यादित भगत का भी ख्याल रखते है, कभी कभार अपने भगत के शील संतोष विवेक व धैर्य की परीक्षा के लिए परिणाम में देरी कर देते है, अतः ऐसी स्थिति में हमने सच्ची नियत रखकर, विश्वास के साथ अपना भक्ति कर्म व सांसारिक कर्म करते रहना चाहिए, टूटने से पहले ही परमात्मा अपने भगत को संभाल लेता है, इस दयालु परमात्मा से अपने भक्तो का दुःख देखा नही जाता है, **यदि वास्तव में कोई भगत है तो**

गुरुदेव कहते है

कल्पे कारण कौन है तू कर सेवा निष्काम
मन इच्छा फल देऊँगा, तब पड़ेगा धणी से काम

यदि पालतू पशु को चीचड़ लग जाये,
या शरीर के किसी हिस्से में कीड़े पड़ जाये, तो क्या करे ?

गुरुदेव भगवान ने एक शब्द में बताया कि -

धणी बिहुना पशु रहै वो दर दर धक्के खावै
भूख प्यास और गर्मी सर्दी मैं कष्ट पै कष्ट उठावै
जब वो पशु धणी का रे होजा,सब चिंता मिट जावै
बड़भागी आवै गुरु की शरण मैं, वो जामण मरण मिटाता
रे हरि को गुरु विहीन नही भाता रे हरि को...

पालतू पशु (गाय भैंस बैल ऊंट बकरी) किसान के आधीन होते है, अतः सर्दी गर्मी धूप बरसात व बीमारी की हालत में उनकी चिंता व जिम्मेदारी किसान की ही होती है, यदि किसी कारण पशु को चीचड़ लग जाते है तो एक बर्तन में पानी डालकर, हाथ से चीचड़ तोड़कर उन्हें पानी मे डालकर कही दूर फेंक सकते है

यदि पशु को कीड़े पड़ जाते है या बीमार हो जाता है, तो उपदेशी किसान भगत भाई, डॉक्टरी उपचार करवा सकते है

परमात्मा कहते है

जो अपने सो और के -एकै पीड़ पिछान, यदि परिवार के किसी व्यक्ति को चोट लगने के बाद असावधानी बरतने के कारण चोट वाली जगह जीव (कीड़े) पड़ जाये, तो हम डॉक्टर से उपचार करवाएंगे , इसी तरह पशु भी किसान का मित्र होता है जो खेती बाड़ी में उसकी मदद करता है, गाय भैंस बकरी दूध देती है, अतः ज्ञान आधार से ऐसी

परिस्थिति में पशुओं के लिए डॉक्टर की मदद लेना गलत नही है

उपदेशी भगत को जीन्स (jeans) या छोटे-छोटे तड़क भड़क व फैशन वाले वस्त्र पहनने चाहिए या नही ?

गुरुदेव भगवान कहते है

दास भाव नजदीक नही और नाम धरावै दास
पानी के पिए बिना कैसे बुझेगी प्यास

अर्थात उपदेश लेने के बाद जब तक भगत अपने रहन सहन - आचार विचार - खान पान और पहनावे में बदलाव लेकर नही आयेगा, तब तक भगत की श्रेणी में नही गिना जाता है

एक सत्संग में गुरुदेव जी ने बताया, की बच्चो - जब तक दुनिया वाले तुम भक्तो के जीवन मे आये बदलाव से प्रभावित होकर भक्तिमार्ग से नही जुड़ेंगे, तब तक मुझे वो प्रसन्नता नही मिलेगी जो मिलनी चाहिए, अतः गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार माता बहनों व भगत भाई बहनों ने अपने पहनावे को लेकर भी बहुत सतर्क रहना चाहिए

☞ उपदेशी भगत को जगत की देखादेखी व फैशन की दौड़ में तंग (टाइट) कपड़े (जीन्स (jeans) आदि नाही तो स्वयं ने पहनना है और नाही बच्चो को लाकर देना है

☞ माता बहनों के कमीज कुर्ता व ब्लाऊज की बाजू का कपड़ा कोहनी से नीचे तक होना चाहिए

☞ तड़क भड़क और अधीक चमकीले कपड़े नही पहनना है

☞ माता बहनों ने पेट या कमर दिखाई देने वाले कपड़े नही पहनने है

☞ यदि उपदेशी माता बहनों की नासमझी के चलते, छोटे छोटे, टाइट व अभद्र कपड़े पहनने के चलते, यदि किसी के मन मे विकार उत्पन होते है

, तो उसमें वह माता बहन भी उतनी ही दोषी मानी जाती है, और अंतर्यामी गुरुदेव भगवान भी नाराज होते है

☞ सत्संग,समागम या घर से बाहर निकलते समय ढीले ढाले व सभ्य कपड़े पहनकर माता बहने भी एक अच्छी भगत होने का परिचय दे और बच्चो को भी सभ्य कपड़े पहनाकर ही साथ लेकर चले , यदि सत्संगी भाई बहन भी दुनिया की देखादेखी में ज्ञान से हटकर चलेंगे - तो समाज सुधार की उम्मीद कैसे की जा सकती है

☞ ठीक इसी तरह भगत भाइयो ने भी सत्संग, समागम या रिश्तेदारी आदि जगह जाते समय टाइट जीन्स व अन्य अभद्र, असभ्य कपड़े पहनने से बचना चाहिए

घर में अगर चींटी या काक्रोच हो जाए, तो लक्ष्मण रेखा या अन्य कोई कीड़े मकोड़े मारने का स्प्रे या हिट का प्रयोग कर सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान कहते है

जो अपने सो और के एकै पीड़ पिछान, अर्थात जैसा दर्द और परेशानी अपने को होती है वैसा ही दूसरे प्राणियों को भी होता है, ऐसा समझना चाहिए

दर्द बंद दरवेश है - बे दर्द कसाई अर्थात जिसके दिल मे दयाभाव नही है ऐसा व्यक्ति भगत होकर भी कसाई के समान है , अतः घर मे कॉकरोच या कही से चींटियां आ जाती है, तो उन्हें किसी भी तरीके से मारना नही है, उन्हें वहां से नुकसान पहुँचाये बिना दूर भगाने का कोई अन्य सरल तरीका हो तो अपनाये

☞ ज्यादातर, घर मे कॉकरोच व चींटियां मीठी वस्तुओं के बर्तन को खुला छोड़ने या गंदगी से आती है, अतः ऐसी स्थिति में हमे भी साफ सफाई व सावधानी बरतनी चाहिए

यदि फिर भी चींटियों का आना कम नही हो रहा है तो गुरुदेव भगवान से प्रार्थना करते हुए ज्योति हवन का संकल्प कर ले , लेकिन जीव हत्या नही करना है

क्या घर के बाथरूम में फिनायल आदि डाल सकते है उसमें भी तो जीव मरते है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि

सत्तर ब्राह्मण की है हत्या - जो चौका तुम देते नित्या, घर में फर्स पर माता बहने जो चौका या पोंचा मारती है उसमें भी जीव हत्या होती है, **(क्योंकि यहां का विधान है जैसा कर्म जीव करता है उसका फल भोगना पड़ता है)** अतः जीव हत्या तो पोंचा लगाने में भी होती है

लेकिन गुरुदेव भगवान ने बताया कि कुछ जरूरी कर्म करने भी आवश्यक होते है, लेकिन उस कर्म को काटने के लिए आपको जो भक्ति मंत्र मिला है उसे मर्यादा में रहकर जाप करते रहने से परमात्मा उस कर्म के दोष को कटवा देते है

ठीक इसी तरह घर मे स्वच्छता के लिए बाथरूम में फिनायल डालना भी जरुरी है, अन्यथा हानिकारक बैक्टीरिया हमे बीमार बना देंगे तो भक्ति में बाधा बनेगी, लेकिन मर्यादा में रहकर सतनाम रूपी साबुन प्रयोग करते रहने से हमारे कर्म रूपी कपड़ो को परमात्मा साफ करते रहते है, **अतः हमें प्रत्येक कार्य ज्ञान को आधार बनाकर बहुत सावधानी से करना है**

उपदेशी भगत, सिर में मेहंदी, बालो में कलर या डाई करवा सकता है या नही ?

गुरुदेव भगवान कहते है

गुरु वचन निश्चय कर माने, पूरे गुरु की सेवा ठाने - जिन बातों से गुरु दुःख पावै उन बातों को दूर बहावै , अतः बालो में मेहंदी लगाने के पीछे दो कारण हो सकते है

☞ यदि उपदेशी भगत को सिर से संबंधित कोई बीमारी या गर्मी से सिर में परेशानी होती है, तो डॉक्टर की सलाह पर मात्र बीमारी के उपचार के लिए बालो में या शरीर के किसी भी हिस्से पर मेहंदी लगा सकता है

☞ यदि उपदेशी भगत (स्त्री पुरुष) अपने सफेद बालों को छिपाने के लिए या सुंदर व युवा दिखने की चाहत में बालों में मेहंदी या कलर (डाई) करवाते है, तो यह कर्म गुरुजी के नियमो को तोड़कर जहर खाने के समान है - और जहर कोई मंदबुद्धि ही खा सकता है समझदार नही

☞ सुंदर दिखने या अपनी उम्र छुपाने के मकसद से बालों को डाई या मेहंदी करना, काल प्रेरणा से मान बड़ाई का प्रतीक होती है - और गुरुदेव भगवान कहते है

मान बड़ाई से है दूर - आजिज के हरि सदा हजूर
आधीनी के पास है पूर्ण ब्रह्म दयाल
मान बड़ाई मारियो बे- अदबी सिर काल

मान बड़ाई का और गुरुदेव भगवान का तो खड़ा Accident है, अतः माता बहनों व भगत भाइयो से प्रार्थना है, यह मिट्टी का शरीर है इसकी उपयोगिता परमात्मा की भक्ति करके आत्मा कल्याण करवाने में है

मैं उपदेशी हूँ मेरी बाल काटने की दुकान है, लोग बालो में डाई करवाने आते है, मुझे क्या करना चाहिए ?

गुरुदेव कहते है - गलत काम करना और उसमें सहयोग करना, दोनों ही भगत को दोषी बनाते है, अब गुरु आदेश के बाद अब यह आपकी समझ व ज्ञान आधार पर निर्भर करता है, की गुरु वचन पर विश्वास करते हुए स्वार्थ को त्यागकर आप इस कर्म से पीछे हटते है या करते है

किन्ही कारणों से यदि तुरंत उस कर्म को बंद न करना आपकी मजबूरी है, तो ऐसी स्थिति में वह कार्य करने की आपके अंदर से रुची नही बननी चाहिए, और जब तक कोई अन्य कार्य सेट नही होता है, तब तक गुरुजी से क्षमा याचना करते रहना चाहिए

यदि हम गुरु वचन पर चलेंगे, तो परमात्मा हमे साधारण दाढ़ी बाल कटिंग में भी पहले से कही ज्यादा कमाई देगा, इतना विश्वास होना चाहिए, कमाई अधिक ना मिले तो भी भगत ने गुरु वचन को ही प्रथम रखकर चलना चाहिए

मेरी नाई की दुकान है, किसी की मौत हो जाने पर मुंडन के लिए सिर के बाल काटने जा सकता हूँ या नही ?

हजाम (नाई) होने के कारण बाल काटना आपका सांसारिक कर्म है, यदि किसी की मौत हो जाती है और आपको घर पर या शमशान घाट पर बाल कटवाने (मुंडन) के लिए बुलाते है, तो आपने स्पष्ट मना कर देना है, यदि आपकी दुकान पर आकर मुंडन करवाते है, तो आपजी अपना सांसारिक कर्म जानकर उनका मुंडन या बाल काट सकते है

उपदेशी के घर बच्चा उत्पन्न होने पर या ट्रेन में हिजड़े (किन्नर) पैसे मांगते है या किसी त्यौहार पर लोग चांदी आदि मांगने आ जाते है, उन्हें पैसे दे सकते है या नही ?

यदि ट्रेन में या घर पर हिजड़े (किन्नर) पैसे या कपड़े मांगते है तो उन्हें प्रेम पूर्वक स्पष्ट मना कर देना है चाहे वे कितना ही दबाव या अभद्रता क्यो ना दिखाये, साथ ही गुरुदेव से प्रार्थना करते हुए नाम का सुमरण जारी रखे, कुछ देर बाद अपने आप ही वहां से चले जायेंगे

यदि घर या दुकान पर कोई होली, दीवाली, गणपति विसर्जन या गौशाला आदि के लिए चंदा या पैसा मांगते है या रसीद काटते है, तो उन्हें अपनी भक्ति व मर्यादाओं के विषय मे समझाते हुए प्रेम पूर्वक मना कर देना है, ऐसी स्थिति में आपको उन काल प्रेरित व्यक्तियों द्वारा हो सकता है अपमान भी सहन करना पड़े, लेकिन हर हाल में हाथ जोड़ते हुए मर्यादा को बनाये रखना है

हाल ही 2022 में गणपति विसर्जन के समय गुजरात में एक भगत भाई की दुकान पर आसपास के कुछ लोग चंदा मांगने के लिए आये, लेकिन भगत जी ने आधीनी और प्रेम पूर्वक उन्हें मना कर दिया, अंत मे चंदा मांगने वालों ने कहा कि मात्र दस (10) रुपये ही दे दीजिए हमारी भी बात रह जायेगी, लेकिन भगत भाई ने 10 पैसे देने से भी मना कर दिया

चंदा मांगने वालों ने भगत भाई के शर्ट का कॉलर पकड़ लिया और मारने पर उतारू हो गए, फिर भी भगत भाई ने उन्हें गुरु वचन तोड़कर चंदा देना स्वीकार नही किया, तो उन लोगो ने दुकान मालिक पर दबाव बनाकर भगत भाई की दुकान खाली करवादी, भगत भाई ने अपनी दुकान कही और किराए पर लेकर काम शुरू किया
गुरुदेव भगवान कहते है ,

सिर साटे की भक्ति है और कछू नही बात
सिर के साटे पाइयो अवगत अलख अनाथ

अर्थात ज्ञान देकर गुरु अपने शिष्य की परीक्षा भी लेता है, अतः वो दिन उस भगत भाई की परीक्षा का था, यदि फेल हो जाता तो कही नरक में जाता, लेकिन संघर्ष किया तो सतगुरु की कृपा का पात्र बना, और ऐसी आत्माओं के लिए ही गुरुदेव भगवान ने कहा है की....**कल्पे कारण कौन है कर सेवा निष्काम - मन इच्छा फल देउँगा जब पड़ेगा मेरे से काम**

अर्थात ऐसी आत्माओं पर जब कभी कर्म की आंच आती है, तो परमात्मा उस पतिव्रता आत्मा की बलाये अपने सिर ले लेता है, और भगत को महसूस भी नही होता है की कुछ हुआ भी था

क्या सामाजिक कार्यों के लिए चंदा दे सकते है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि उन सामाजिक कार्यों में, जिनका उपयोग आप भी करते है, अपने हिस्से का पैसा देकर सहयोग कर सकते है - जैसे

☞ गाँव मे पशुओं को पानी व स्वयं के पानी पीने के लिए कुआँ, टंकी या ट्यूबवेल लगवाना

☞ गाँव या कॉलोनी में रास्ता बनवाना

☞ गाँव मे कोई धर्मशाला या प्याऊ आदि बनवाना

☞ और भी कुछ इस तरह के सामाजिक कार्य, जहाँ आपको पूरी जानकारी हो, की यहाँ सहयोग करने से मेरे पैसे का दुरुपयोग नही हो सकेगा, बहुत सोच समझकर पैसा देना है

उपदेशी भगत ने, किसी धर्म, जाति या समुदाय विशेष के धरनो रैलियों या अन्य तरीकों से समर्थन करना चाहिए या नही ?

पूज्य गुरुदेव - सतगुरु रामपाल जी भगवान का नारा है कि

जीव हमारी जाति है मानव धर्म हमारा - हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नही कोई न्यारा, समस्त विश्व के मानव शरीरधारी प्राणी (स्त्री पुरुष) एक ही परमात्मा की संतान है

अपने स्वार्थवश काल निरंजन ने हमे भिन्न भिन्न धर्मों व जातियों में बांट रखा है, शुरुआत में वर्ण व्यवस्था के तहत समाज को चार भागों में (शूद्र - क्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण) में बांटा गया था, आगे चलकर कर्म आधार से जाति व धर्मों में बाटने का काम हमारे ज्ञानहीन धर्मगुरुओं ने कर डाला, और आज नादानी में हम एक ही परमपिता की संतान होकर भिन्न भिन्न जाति, धर्मों व समुदायों में बटकर एक दूसरे के शत्रु बने बैठे है

इसी अज्ञानता के चलते व सतभक्ति से वचिंत रहकर भगवान से मिलने वाले सुखो से दूर होकर, किसी जाति विशेष के लोग यदि सरकार से आरक्षण या नौकरी आदि में अधिक हिस्से की मांग करने के लिए धरने, रैलियां या जुलूस निकालते है, तो भूलकर भी सतगुरु भगत ने उनकी मांग के समर्थन में नही उतरना चाहिए, उपदेशी के लिए यह कर्म गुरु वचन तोड़ना होगा

तत्त्वज्ञान प्राप्त होने के बाद उपदेशी भगत नकली सरकार से इस गंदे लोक में नही बल्कि असली सरकार सतगुरु से, सतलोक में मोक्ष रूपी असली आरक्षण व नौकरी की इच्छा से मर्यादा में रहकर भक्ति को अधिक महत्व देगा

अतः कुछ ज्ञानहीन भगत यदि इस तरह के जातिगत संगठनों का अपनी अज्ञानता या स्वार्थों के वशीभूत होकर समर्थन करते है, तो यह उनकी नालायकी है, और किसी की नालायकी का हिस्सा बनकर ज्ञानी भगत ने गुरु वचन तोड़कर अपने कर्म बिगाड़ने से बचना चाहिए ,

उपदेशी भगत का बैंक में FD / LIC या बीमा आदि करवाना उचित है या नही ?

गुरुदेव भगवान कहते है

साई इतना दीजिए जिसमे कुटुम समाव - हम भी भूखे ना रहे साधु ना भूखा जाये, यदि गुरुदेव के इस वचन पर चलेंगे, तो हमें बैंक में जाकर FD और LIC करवाने की जरूरत ही नही पड़ेगी, यदि फिर भी आपके संस्कारवश गुरुदेव जी ने आपको धन धान्य से परिपूर्ण कर रखा है तो उस धन का प्रयोग उन्ही के चरणों मे दान धर्म करके सदुपयोग करे

गुरुदेव भगवान के ज्ञान आधार अनुसार उपदेशी भगत बैंक के द्वारा लेनदेन अवश्य कर सकता है, लेकिन बैंक में FD या LIC जैसी

स्कीम जिनके माध्यम से आपको कुछ दिनों या वर्षों बाद ब्याज के साथ या मूल रकम से ज्यादा पैसे मिलते हो, ऐसी स्कीम से दूर रहना है, क्योंकि भक्तिमार्ग में ऐसा करने से भगत को दो तरफा नुकसान उठाना पड़ता है

☞ यदि आप FD या अन्य स्कीम के तहत बैंक में लंबे समय के लिए पैसा जमा करवाते है, तो बैंक आपके उस पैसे को अन्य सभी तरह के कार्यों में अन्य व्यक्तियों को ब्याज पर देता है, अर्थात आपका पैसा बैंक से एक शराब की फैक्ट्री खोलने वाला भी ब्याज पर लेगा, कत्लखाने खोलने वाला, बीड़ी गुटखा आदि की फैक्ट्री वाले भी बैंक से ब्याज पर पैसा लेते है, अर्थात इस तरह से बैंक में जमा आपकी संपत्ति को बैंक द्वारा कुकर्मों में लगवाया जायेगा, जिसका नुकसान उस संपत्ति के अनुपात में आपको भी उठाना पड़ेगा

☞ इसी प्रकार यदि दो या 5 वर्ष बाद जब आपको FD या LIC का रकम के साथ एक्स्ट्रा पैसा मिलेगा, वह पैसा ब्याज रूप में बैंक आपको देगा और वह पैसा बैंक आपको किसी अन्य व्यक्ति के जमा पैसों का हिस्सा ही निकालकर देगा, अन्य व्यक्तियों की कमाई ईमानदारी की होगी या छल कपट व झूठ की, यह आप अच्छे से जानते है, यदि ऐसा पैसा भगत के घर मे आयेगा तो अवश्य भक्ति में बाधक होगा

यदि आपने, दुर्घटना या मरने के बाद पैसे मिलने वाला या अन्य चोरी आदि का बीमा करवा रखा है तो उसे भी खत्म कर दे, अर्थात FD और LIC तुड़वा सकतें हैं

यदि हम सतगुरु शरण मे आकर सतभक्ति का बीमा करवा चुके है, और मर्यादा के साथ भक्ति करते हुए पांचों यज्ञ व 10 वे अंश रूपी किस्त समय पर भर रहे है, तो आवश्यकता पड़ने पर उस भगत की चोरी, दुर्घटना या अकाल मौत से गुरुदेव भगवान रक्षा करेंगे

अतः ज्ञान आधार कहता है कि उपदेश प्राप्त भगत ने बैंक से कोई भी अनावश्यक लाभ नही लेना चाहिए, जिससे कि ब्याज रूप में अन्य व्यक्तियो का पैसा हमारे घर मे आये

उपदेशी भगत को शारीरिक योग व मानसिक ध्यान (meditation) करना चाहिए या नही ?

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार उपदेश प्राप्त करने के बाद शारीरिक योग आसन करने की आवश्यकता नही है, योग प्रायः किसी बीमारी से स्वस्थ होने के लिए, या भविष्य में कोई बीमारी ना हो इसलिए किये जाते है, लेकिन नाम उपदेश लेकर यदि मर्यादा में रहकर सतभक्ति करते रहेंगे तो दोनों ही स्थिति में साधक को लाभ मिलेगा, जो बीमारी लाखो रुपये बर्बाद करके व योग आसन करने के बावजूद भी खत्म नही हो रही थी, वह भी ठीक होगी, और भविष्य में कर्म आधार से आने वाली बीमारियों से भी परमात्मा अपने साधक की रक्षा करता है, अतः दोनों ही स्थिति में भगत को योग की आवश्यकता नही होती है

क्या आध्यात्मिक मार्ग में शारीरिक योग व मानसिक ध्यान (meditaion) भगत के लिए नुकसान पहुचाने वाले है ?

उपदेश प्राप्त हो जाने के बाद साधक ने अपना समय और स्वासो का ज्यादातर हिस्सा परमात्मा की भक्ति साधना व चर्चा में बिताना चाहिए, जबकि योग करने से हमारी स्वास और समय दोनों का ही दुरुपयोग होता है! ज्ञानहीन प्राणी, भगवान से लाभ प्राप्त करने की विधि से वंचित होने के चलते चाहे योग करे या व्यायाम, उन्हें देखकर भक्तो को विचलित नही होना चाहिए

अतः योग चाहे शारीरिक हो या मानसिक (meditation) दोनों ही नही करना है, भगत के लिए असली meditation गुरुदेव भगवान द्वारा बताई

गई विधि है,

☞ गुरु आदेश अनुसार यदि हम प्रथम मंत्र को (सूरत, निरत व मन लगाकर करते है)

☞ सतनाम मंत्र को (सूरत, निरत, मन, व पवन के साथ) शब्द पर ध्यान लगाकर जाप करते है, तो यह भगत का असली meditaion है

☞ सत्संग/ आरती यदि हम ध्यान से सुनते है और बाद में उन वचनों पर चिंतन करते है, तो यह भगत का असली meditation है

इसके अलावा जितने भी शारीरिक व मानसिक ध्यान लगाने वाले योग है, सब के सब हमारे स्वास और समय की बर्बादी के अतिरिक्त कुछ भी नही है, और गुरु आदेश अनुसार भगत के लिए वर्जित है

उपदेशी भगत ने चमड़े से बनी वस्तु जैसे बेल्ट, पर्स, जूते, जैकेट, कोट आदि वस्तुओ का उपयोग करना चाहिए या नही ?

उपदेश प्राप्त करने के उपरांत भगत ने अपने गुरुदेव भगवान के प्रत्येक सत्संग रूपी वचन (आदेश) को सिरधड़ की बाजी लगाकर निभाना पड़ेगा, **यदि वर्तमान समय की बिचली पीढ़ी में पूर्ण मोक्ष प्राप्त करना है तो ?**

गुरुदेव ने बताया कि - पहले के समय मे चर्मकार, मरे हुए पशुओं की खाल उतारकर फिर उससे जूते चप्पल बेल्ट या अन्य वस्तु बनाकर बेचते थे, लेकिन वर्तमान समय मे चमड़े से बनी वस्तुओं ने एक बड़े व्यापार का रूप ले लिया है, जिसके चलते जीवित पशुओं के शरीर पर एक विशेष केमिकल डालकर उनकी खाल उतारी जाती है, इस प्रक्रिया में पशु असहनीय कष्ट उठाता हुआ प्राण त्याग देता है, जो एक क्रूरता वाला कर्म है

इसलिए उपदेशी भाई बहनों ने गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार, चमड़े से बनी किसी भी वस्तु का भूलकर भी प्रयोग नही करना है, वर्ना

परमात्मा के दोषी बनेंगे

यदि कोई आर्मी पुलिस या अन्य ऐसी नौकरी में कार्य करता हो, जहाँ चमड़े से बने बेल्ट जूते आदि का प्रयोग जरूरी है, ऐसे में क्या करना चाहिए ?

परमात्मा के भक्ति विधान की पूर्ण जानकारी हो जाने के बाद, ज्ञानी भगत को गुरु वचन और मर्यादा के लिए अपने स्वार्थों को एक तरफ रखकर, गुरु द्वारा आदेश करने पर शीश तक दान करने के लिए तैयार रहना चाहिए

गुरुदेव कहते है

महिमा कीजे संत की, तन मन धन सब देय
सिर मांगे टाला नही, मोरध्वज लख लेय

गरीब - गुरु से ज्ञान जो लिजिए शीश दीजिए दान
बहुतक भोंदू बह गए राख जीव अभिमान

परमात्मा का विधान अटल है की, भक्तिमार्ग में ज्ञानी आत्माओं के लिए किसी भी नियम में कोई छूट नही होती है, ज्ञानी भगत गुरु वचन के लिए सर्वस्व न्योछावर करने से भी पीछे नही हटता है

अब्राहिम सुल्तान को ज्ञान हुआ तो राजपाट तक को ठोकर मार दी, यदि आज कोई भगत फौज पुलिस की नौकरी में है और पता चलने के बाद भी चमड़े से बनी वस्तुओं का भी प्रयोग करता है, तो वह अपने आपको गुरुदेव भगवान की पूर्ण शरण मे ना समझे, बाकी जैसी भी भक्ति कर रहा है उसका फल अवश्य मिलेगा, लेकिन नौकरी करते करते शरीर छूट गया तो मोक्ष नही होने वाला **(इस वहम में ना रहना, की एक सत्संग में गुरुजी ने चमड़े से बनी वस्तुओं के लिए फौज पुलिस की नौकरी**

करने वालो को छूट दे रखी है) उस सत्संग में फौज व पुलिस वाले भक्तो को छूट देने के पीछे गुरुदेव भगवान का एक मकसद था - अंतर्यामी गुरुदेव को पता था कि इस तरह के व्यक्ति ज्ञान होने के बाद भी, चंद पैसों की नौकरी के लालच में चमड़े के जूते बेल्ट पहनकर गुरु वचन को तोड़ेंगे और नामदीक्षा भी नही लेंगे, अतः कुछ भी भक्ति ना करे - **इससे अच्छा हैं की, नाम लेकर कम से कम कुछ तो टूटी फूटी भक्ति करते रहंगे,** और यदि बीच मे ज्ञान पूर्णतया समझ मे आ जायेगा, तो नौकरी क्या चीज है - राजाओं ने तो परमात्मा के लिए राजपाट को भी ठोकर मार दी थी **(उदाहरण के लिए राजा पीपा जी व अब्राहिम सुल्तान)**

☞ ज्ञान समझ मे आया तो लगभग 300 वर्ष पहले नरसी भगत ने 56 करोड़ की संपत्ति परमात्मा के चरणों मे लुटा दा, और ऐसी आत्माओं का ही भक्ति इतिहास में जिक्र हुआ करता है, जिन्होंने ज्ञान होने के बाद अपने प्रत्येक भक्ति बाधक कर्म व स्वार्थों की परमात्मा के चरणों मे बलि चढ़ा दी, फिर ऐसी आत्माओं की रोजी रोटी की जिम्मेदारी परमात्मा की चिंता हो जाती है, नाकि उस भगत की

☞ मर्यादा में रहकर भक्ति करने वाली आत्माओं को यह दृढ़ विश्वास हो जाना चाहिए, जिस गुरुदेव भगवान ने करने के लिए भजन दिया है - तो खाने के लिए भोजन भी अवश्य देगा

कहते है - **पौ पाटी पगड़ा भया जागी जीया जूण - सब काहू को देत है वो चोंच समाना चून**, जो परमात्मा सृष्टि में सबका पालन पोषण करते हुए चींटी को उसकी जरूरत अनुसार कणभर और हाथी को उसकी जरूरत अनुसार मणभर खिलाकर पेट भर रहा है - अतः ऐसे समर्थ गुरुदेव भगवान के वचन की लाज रखने के लिए 30, 40 हजार की नौकरी तो क्या, यदि मंसूर भगत की तरह शरीर का अंग अंग भी काट कर चरणों मे भेंट चढ़ा दी जाये, तो भी सस्ता सौदा है

गुरुदेव कहते है
कामी क्रोधी लालची इसने भक्ति ना हो
भक्ति करे कोई सूरमा जाति वर्ण कुल खो अतः ऐसी हिम्मत कोई शूरवीर आत्मा ही कर सकती है, जिसे हर प्रकार से यह ज्ञान और भगवान समझ मे आ गया होगा

गुरुदेव भगवान कहते है ,
नर संसारी लग्न में दुःख सहै करोड़ा
परमार्थ के कारण जितना सहै उतना थोड़ा

दीवाली क्यो मनाई जाती है ?

गुरुदेव ने बताया कि - 14 वर्ष के वनवास के उपरांत, जब दशरथ पुत्र श्री रामचन्द्र जी, 10 वर्ष से रावण की कैद में गिरफ्त अपनी पत्नी सीता जी को युध्द में करोड़ो लोग मरवाकर, वापस अयोध्या ला रहे थे, उन दिनों अमावश्या (काली रात) का समय था, अयोध्यावासियों ने सोचा आज वर्षों बाद श्री रामचन्द्र जी अपनी पत्नी सहित स्वदेश लौट रहे है, इसलिए उनके स्वागत के लिए पूरी अयोध्या नगरी को हर जगह घी के दीपक जलाकर रोशन किया गया था, लेकिन श्री रामचन्द्र जी के चले जाने के हजारों वर्षों बाद, आज लोगो ने दीवाली को एक परम्परा के तहत अपने मनोरंजन का साधन बना लिया है जबकि आज के समय मे दीवाली मनाने का कोई अर्थ ही नही निकलता है, सिवाय समय, पैसे और वातावरण को बारूद से प्रदूषित करके, **अतः उपदेशी भाई बहनों ने इस दिन अपने आपको ब बच्चो को कोई भी बकवाद करने से बचाना चाहिए**

आज दीवाली समाज मे एक कुप्रथा है, जगह जगह भद्दे गाने और शराब पीकर लोग बकवाद अधिक करते है, बारूद से ना जाने कितने बच्चो के हाथ जल जाते है, किसी का घर जल जाता है, चाहे बच्चे कितनी ही जिद्द

क्यो ना करे, उन्हें पटाखे आदि खरीदकर नही देना है, अपने नादान बच्चो के आंसुओं की तरफ देखकर, भावुकता में यदि आपकी आत्मा दुःखी होती है, तो समझ लेना अभी ज्ञान आधार से आपमे भी बहुत कमी है, और ऐसी कमी एक न एक दिन परेशानी का कारण बन सकती है, अतः बच्चे को गुरुदेव के सत्संगों का हवाला देकर इस कुप्रथा के नुकसान के विषय में समझाये, यदि नही मानते है तो आपने उनकी जिद्द और आंसुओ के आगे अपनी मर्यादा हरगिज नही तोड़नी है

मिठाई खाने की इच्छा हो तो किसी और दिन बनाकर खाले, त्यौहार के दिन तो नाही मिठाई बनानी है और नाही बाजार से लेकर खानी है, क्योंकि ज्ञान हो जाने के उपरांत यदि हम भगत भाई बहन भी इन बुराइयों में सहयोग करना नही छोड़ेंगे, तो जगत से क्या उम्मीद की जा सकती है

गुरुदेव कहते है

मर्द गर्द में मिल गये रावण से रणधीर
कंस केसी चानौर से, हिरणाकुश बलबीर
तेरी क्या औकात है तू जीव जन्म धर लेत
गरीब दास हरि नाम बिना, तेरा खाली रह जा खेत

अतः दीवाली जैसी कुप्रथा आने पर हमें यह शिक्षा लेकर भक्तिमार्ग में और अधिक दृढ हो जाना चाहिए कि, हम ऐसे गंदे लोक में रह रहे है, जहां तीन लोक के स्वामी श्री रामचन्द्र जैसे भी आजीवन सुख का सांस नही ले सके, यदि भक्ति नही की, तो हमारा क्या होगा - हम तो वैसे ही जीव संज्ञा के प्राणी है

उपदेशी भगत ने तीज त्यौहार, होली,
दीवाली व अन्य त्यौहार मनाने है या नहीं ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि यात्री यदि यात्रा करते समय कम से

कम सामान (वजन) लेकर चलेगा तो लंबी व सुखद यात्रा कर पायेगा, अन्यथा आधे रास्ते ही घुटने टूट लेंगे, इसी तरह जितने भी त्यौहार है, भक्तिमार्ग में इनको मनाना उपदेशी के लिए कमर पर गधे की तरह व्यर्थ का वजन ढोने के समान है

ज्ञान आधार से, यदि हम इन त्यौहारों को मनाये जाने के पीछे की हकीकत को जान लेंगे, तो शायद फिर कभी नहीं जायेंगे

होली क्यो मनाई जाती है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, जब भगत प्रह्लाद जी ने अपने पिता हिरण्यकशिपु को भगवान मानने से इंकार कर दिया था, तो उसने भगत प्रह्लाद जी को मरवाने के लिए बहुत सारे हथकंडे अपनाते हुए 84 कष्ट दिए थे, उनमें एक घटिया हथकंडा अपनी बहन होलिका को माध्यम बनाकर भगत प्रह्लाद जी को मरवाना था

होलिका, हिरण्यकशिपु की बहन थी, अपने भाई हिरण्यकशिपु की आज्ञा से चिता के ऊपर प्रह्लाद जी को गोद में (गोडों में) लेकर बैठ गई, होलिका के पास एक चद्दर थी , उसको ओढ़कर यदि अग्नि में प्रवेश कर जाए तो जलता नही था, उस चद्दर को ओढ़कर अपने को पूरा ढ़ककर प्रह्लाद को उससे बाहर गोडों में बैठा लिया , कहा बेटा - देख मैं भी तो बैठी हूँ, कुछ नही होगा तेरे को, अग्नि लगा दी गई, परमात्मा ने शीतल पवन (हवा) चलाई, तेज आंधी आई, होलिका के शरीर से चद्दर उड़कर प्रह्लाद भगत को पूरा ढक लिया, होलिका जलकर राख हो गई, भगत को आंच भी नही आई, प्रह्लाद जी का विश्वास बढ़ता चला गया, ऐसे ऐसे चौरासी (84) कष्ट भगत को दिए गए, परंतु परमात्मा ने भगत के विश्वास को देखकर उसकी दृढ़ता से प्रसन्न होकर उसके पतिव्रता धर्म से प्रभावित होकर प्रत्येक संकट में सहायता की

अब आप स्वयं ही विचार करे, ना आज हिरणकशिपु है, नाही होलिका और प्रह्लाद जी, दुनिया केवल लकीर की फकीर बनी हुई है, जबकि शास्त्रों में पढ़कर, इस घटना से यह शिक्षा लेकर भक्तिमार्ग से जुड़कर परमात्मा को प्रसन्न करके हर संकट में उसकी दया और रहम के लायक बनने का प्रयास करना चाहिए, जैसे प्रह्लाद भगत ने अपनी भक्ति और विश्वास के बलबूते पर कबीर परमात्मा जी से प्राप्त की

नाकि प्रतिवर्ष इस होली वाली परंपरा के आदि बनकर, दुनिया भर की लकडीयाँ जलाकर वातावरण में धुंआ फैलाकर करोड़ो सूक्ष्म जीवों की हत्या का दोषी बनना चाहिए, और नाही रंग आदि लगाकर शरीर को खराब करना चाहिए

अतः उपदेशी भगत आत्माओं को इस तरह की भक्ति में बाधक परम्पराओ से हटकर, ज्ञान को आधार बनाकर आगे बढ़ना चाहिए, हमने इन परम्पराओ को निभाने में किसी का सहयोग करने से भी बचना है

इसी प्रकार अन्य त्यौहार व उत्सव जाने, जिनको मनाने का वर्तमान समय में और भक्तिमार्ग में कोई औचित्य नही है, सिवाए समय और धन की बर्बादी के, यदि फिर भी हम इन त्योहारों को मनाते है या मनाने में सहयोग करते है, तो गुरु का वचन टूटने के चलते उपदेशी भगत को हानि होगी

नाम उपदेश के बाद, मकान बनवाने, ट्यूबवेल लगवाने या नया काम धंधा शुरू करने से पहले मुहूर्त या उद्घाटन कर सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान कहते है

मासा घटे ना तिल बढ़े, विधाता लिखे जो लेख - साँचा सतगुरु मेटकर, ऊपर मार दे मेख, अर्थात जब तक हम सच्चे सतगुरु की शरण मे आकर सतभक्ति की शुरुआत नही करते है, तब तक हमारे भाग्य में लिखा हुआ लेख, तीनो लोको के स्वामी ब्रह्मा विष्णु महेश भी घटा और बढा नही सकते है, उस समय तक विधाता के द्वारा जो लेख (संस्कार) लिखा जा चुका है वही मिलेगा, चाहे मुहूर्त निकलवाकर कोई काम शुरू करो या बिना उद्घाटन करके

गुरुदेव भगवान कहते है

वशिष्ठ मुनि जैसे त्रिवेता ज्ञानी, सोधकर लग्न धरै - सीता हरण मरण दशरथ का, वो बण बण राम फिरै, अर्थात आज के कलयुगी पंडित, ब्राह्मणों या ज्योतिषों की तो अध्यात्म में औकात ही क्या है, जब त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र जी के गुरु वशिष्ठ जी, जो वर्तमान और भूत भविष्य की जानने वाले थे, उन्होंने यह कहकर श्री रामचन्द्र जी की शादी का मुहूर्त , निश्चित समय से तीन दिन आगे का रख दिया, की अभी ग्रहों के हिसाब से शुभ मुहूर्त नही है, और मैंने जो शादी के मुहूर्त का समय रखा है, उसके बाद श्री राम और सीता जी के जीवन मे कभी भी दुख नही आयेगा, और आज पूरी दुनिया जानती है कि जितने दुःख और परेशानियां शादी के बाद श्री रामचन्द्र जी और सीता जी को उठानी पड़ी थी, उतने दुःख तो आज एक आम व्यक्ति के जीवन मे भी देखने को नही मिलेगा

☞ शादी के बाद, युवराज बनने का समय आया, तो 14 वर्ष के लिए जंगल मे वनवास हो गया, (उस समय का वनवास आज की जेल से भी कष्टदाई था)

☞ श्री रामचन्द्र जी की पत्नी का, श्री लंका का राजा रावण अपहरण करके ले गया, 10 वर्ष तक सीता जी और रामचंद्र जी एक दूसरे से दूर रहे

☞ करोड़ो लोग युध्द में मारे गए तब कही जाकर सीता जी को वापस अयोध्या लेकर आये, और कुछ ही दिनों बाद पुनः एक धोबी के व्यंग करने पर, श्री रामचन्द्र जी ने अपनी ग्रभवती पत्नी सीता जी को अयोध्या से निष्कासित कर दिया, आजीवन श्री रामचन्द्र जी और सीता जी अलग अलग रहे

☞ श्री रामचन्द्र जी को अपने ही पुत्रो के साथ युध्द में आमना सामना करना पड़ा

☞ अंत मे दुःखी होकर, श्री रामचन्द्र जी ने अपनी जीवन लीला सरयू नदी में छलांग मारकर (डूबकर) समाप्त करनी पड़ी

अर्थात गुरुदेव भगवान हम उपदेशी भक्तो को समझाना चाहते है कि, इन आजकल के विकारी और व्यभिचारी ज्योतिषों, पंडितों और हाथ या पतड़ा (जन्म कुंडली) देखकर मुहूर्त और उद्घाटन का उल्टा सीधा समय बताकर अपना पेट भरने वाले अज्ञानियों की तो औकात ही क्या है, जब त्रेतायुग में तीनों लोकों के सबसे बड़े जोतिष वशिष्ठ मुनि, अर्थात श्री रामचन्द्र जी के गुरु के द्वारा निकाला गया शुभ मुहूर्त भी, श्री राम और सीता जी के जीवन मे विधाता द्वारा लिखे संस्कार में कोई परिवर्तन नही कर सका

अतः उपदेश प्राप्त करने के बाद, इन उदाहरणों को ध्यान में रखते हुए, भगत भाई बहनों ने चाहे कैसी भी स्थिति हो

नाही तो किसी ज्योतिष को हाथ दिखाकर भले बुरे की जानकारी लेनी है नाही घर मे कोई पूजा पाठ या धार्मिक अनुष्ठान करवाना है, और नाही परिवार के अन्य अनउपदेशी सदस्यो द्वारा करवाये जा रहे अनुष्ठान या पूजा पाठ में सहयोग करना है

नाही किसी पंडित से कोई मुहूर्त या बुलवाकर उद्घाटन करवाना है

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार उपदेशी भगत जब भी कोई नया कार्य शुरू करता है **(चाहे मकान या दुकान बनाना, या काम धंधा शुरू करना, खेत मे ट्यूबवेल लगवाना या अन्य)** तो सबसे पहले मंगलाचरण बोल दे - क्योंकि मंगलाचरण का अर्थ है मंगल ही मंगल होना , चाहे तो अपना कोई भी कार्य शुरू करने से पहले गुरुदेव भगवान को ज्योति हवन यज्ञ का संकल्प भी कर सकते है

इसके अलावा नाही मुहूर्त निकलवाना है और नाही किसी पंडित आदि को बुलवाकर उद्घाटन करवाना है, नाही उस अवसर पर बाजार से मिठाई लाकर किसी को बांटना है, और नाही लोगो व रिश्तेदारों की भीड़ इकट्ठा करनी है ऐसा करने से गुरुदेव भगवान का आदेश रूपी वचन टूट जायेगा, और लाभ की जगह हानि अधिक उठानी पड़ेगी

गुरुदेव भगवान ने बताया कि ..

☞ जन्म और मृत्यु किसी पंडित और ज्योतिषी के मुहूर्त बिना ही आती है, तथा प्रत्येक आत्मा को स्वीकार्य भी है, फिर भला जन्म और मृत्यु के बीच जीवन मे शुभ अशुभ के चक्कर मे मुहूर्त और उद्घाटन को लेकर, उपदेशी भगत के लिए इतने पाखंड उचित नही है

☞ गुरुदेव भगवान ने बताया कि - एक समय द्वापर युग मे जब दुर्वासा ऋषि ने 56 करोड़ यादवों को उनके कुलनाश का श्राप दिया, तो समाज के कुछ लोग श्री कृष्ण जी के पास गये और अपनी चिंता का कारण बताया, उस समय श्री कृष्ण जी ने समाधान बताते हुए मुहूर्त निकाला था, की सभी यादव सुबह सुबह ब्रह्म मुहूर्त में यमुना जी के किनारे जाकर स्नान करेंगे, तो दुर्वासा ऋषि का श्राप कट जायेगा लेकिन दुर्वासा ऋषि के श्राप के बजाय

उल्टे 56 करोड़ यादव आपस मे लड़ झगड़कर कट गये, अतः उपदेशी भगत को मुहूर्त या उद्दघाटन से पहले विचार करना चाहिए कि, फिर आज के पंडित और ज्योतिष - क्या भगवान श्री कृष्ण से बढ़कर समाधान बताने वाले है, जब द्वापर युग मे श्री कृष्ण जी द्वारा निकाला गया मुहूर्त भी फेल हो गया

गुरुदेव भगवान ने बताया कि - जब दुर्गा ने समुंदर मंथन के दौरान, अपने ही तीन रूप बनाकर ब्रह्मा विष्णु महेश की शादी की थी, उस समय नाही तो किसी पंडित से मुहूर्त निकलवाया गया था, नाही ज्योतिष को बुलवाया गया था और नाही कोई आडम्बर किया गया था, अतः उपदेशी भगत ने भी आप ने गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करते हुए इन आडम्बरो से हटकर ही भक्तिमार्ग पर चलना होगा

यदि मुहूर्त निकलवाकर ही शादी विवाह या अन्य कामकाज शुरू करने से लाभ मिलना होता, तो आज उन पंडितों व ज्योतिषियों की बहन बेटियाँ विधवा होकर निराशा में जीवन नही जी रही होती, जो पंडित लोग शादी विवाह का मुहूर्त निकालकर दुनिया की बहन बेटियों को अखंड सौभाग्यवती रहने का आशिर्वाद देते है

गुरुदेव भगवान कहते है
राहु केतु रोके ना घाटा - सतगुरु खोले बज्र कपाटा - नौ ग्रह नाद समोये नासा, अबिगत नाम नीरालम्भ जाना अर्थात नाम उपदेश प्राप्त हो जाने के बाद परमात्मा हर प्रकार से अपने भगत की रक्षा करता है, भगत कोई भी शुभ कार्य करने जा रहा होगा, तो गुरुदेव भगवान के आशिर्वाद से, राहु और केतु नाम के राक्षस व ग्रहों की गति भी, ऐसे मर्यादित सतभक्ति करने वाले भगत के मार्ग में विघ्न पैदा नही कर सकते है,
अतः ज्ञान में कमजोर भगत भाई बहन यदि काल प्रेरणावश, मुहूर्त या

ज्योतिषी के पास जाने की सोचते है, तो उन्हें थोड़ा विचार करना चाहिए, की हम उस समर्थ सतगुरु की शरण में है जिसके आगे जम जोरा (काल और मौत भी) हाथ जोड़े खड़ी रहती है

गरीब - जम जौरा जासे डरे, मिटे कर्म के लेख
अदली असल कबीर है, कुल का सतगुरु एक

गरीब - काल जो पीसै पीसना, जोरा है पनिहार
ये दोनों असल मजदूर है मेरे साहेब के दरबार

क्या उपदेशी भगत चुनाव के समय वोट डाल सकता है? क्या राजनैतिक पद पर पंच, पार्षद, सरपंच या MLA आदि का चुनाव लड़ सकता है?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि राजनीति और परमात्मा का तो 36 का आंकड़ा है, राजनीति को बन्दी छोड़ बिल्कुल भी पसंद नही करते है

वर्तमान की राजनीति में धर्मनीति का समावेश नही है, और नाही राजाओ को सही सलाह देने वाले उनके पास धर्मगुरु है, जिस कारण हर राजनैतिक व्यक्ति चाहे मंत्रीपद पर हो या प्रधानमंत्री पद पर, उसके अपने स्वार्थ सर्वोपरि रहते है, ऐसा व्यक्ति निर्भय होकर न्याय करने में सक्षम नही होता है , जबकि राजा का धर्म होता है दुःखी प्रजा को सुखी करे, गलती यदि उसका अपना पुत्र भी करता है तो उसे बराबर सजा दे

एक सत्संग में ज्ञानी आत्माओं को संकेत करते हुए, गुरुदेव भगवान ने बताया कि, वोट डालने से पहले उमीदवार (मेंबर) अवश्य देख लेना चाहिए अर्थात - गुरुदेव के कहने का अर्थ है जो व्यक्ति चुनाव लड़ रहा है वह

तत्त्वदर्शी संत की शरण मे है या नही ? यदि नही है, तो वोट नही डालना है क्योंकि ऐसा व्यक्ति नाही तो निजी स्वार्थों से दूर हट सकता है, नाही धार्मिकता को प्रधानता दे सकता है

वर्तमान की राजनीति में न्याय और धर्म के लिए कोई स्थान नही है , राजा अपने स्वार्थ और कुर्सी के लिए हजारों लोगों की हत्या के पाप से भी पीछे नही हटता है

आप जिस व्यक्ति को वोट डालकर MP - MLA या मंत्री प्रधानमंत्री बनाते है, और जब तक वह व्यक्ति मंत्री पद पर रहते हुए अच्छे बुरे जितने भी काम करेगा, उन सभी कार्यों में आपकी भी उसी अनुपात में भागेदारी गिनी जायेगी, क्योंकि वह व्यक्ति आपके द्वारा डाले गए वोट के सहयोग से मंत्री/सरपंच बना है

अब यदि ऐसा व्यक्ति, राजा या मंत्री बनकर शराब के ठेके खुलवाता है, बीड़ी सिगरेट या अन्य मादक पदार्थों की दुकानों/ फैक्ट्रियों को लाइसेन्स देता है, अफीम भांग और तम्बाकु की खेती के लिए लाइसेंस देता है या पशु कत्तलखाने खुलवाता है, तो उन सभी कुकर्मों में आपका भी सहयोग गिना जायेगा, क्योंकि आपने वोट डालकर उसे वह सब कुकर्म करने के लायक बनाया है, **इसलिए गुरुदेव भगवान ने एक भगत को, वर्तमान के अधर्मी व अन्यायी शासक चुनने के लिए मना किया है, ताकि हमारे कर्म बिगड़ने से बचे**

अतः ज्ञानी भगत इन सावधानियों को अपनाकर अपने कर्म बिगाड़ने से बचायेगा, और अज्ञानी व्यक्ति उपदेश लेकर भी काल जाल में फसता ही चला जायेगा

उपदेशी भगत जिम (Gym) में कसरत करने के लिए जा सकते हैं या नही ?

पूज्य गुरुदेव भगवान ने बताया कि मानव शरीर की आयु - परमात्मा द्वारा गिनकर दी गई स्वासो पर आधारित होती है , स्वासो का चाहे पूर्ण सतगुरु की शरण मे आकर सतनाम का मर्यादा में रहकर जाप करते हुए सदुपयोग कर लीजिए या चाहे अज्ञानता में पहलवानी के चक्कर मे Gym (जिम) आदि में जाकर कठिन कसरत करते हुए स्वासो को नष्ट करते हुए बर्बाद कर लिजिये

Gym जाकर कसरत करने के दो ही कारण हो सकते है

प्रथम तो - नादानी में हट्टा कट्टा शरीर बनाकर, किसी को प्रभावित करने के लिए या शरीर को स्वस्थ रखने के लिए

यदि आप उपदेशी है, तो ज्ञान आधार कहता है कि इन दोनों ही स्थिति में आपने Gym जाकर फालतू में शरीर तोड़ने की जरूरत नही है क्योंकि सत्संग सुनकर, इस नश्वर शरीर (मिट्टी) को कसरत करके हट्टा कट्टा या सुंदर सुडौल बनाने की चाहत रखने वाला भगत अभी मंदबुद्धि व नादानों की श्रेणी में है, शरीर की सुंदरता परमात्मा की भक्ति और दान धर्म में होती है

ज्ञान को आधार ना बनाकर, Gym में घंटोभर कठिन मेहनत करके पसीने बहाकर सुंदर शरीर बनाने की चाहत वाले व्यक्ति को अगले जन्मों में तेली का बैल बना दिया जाता है, और उसे सारा दिन कोल्हू में चलाकर, मजबूत शरीर बनाने वाली चाहत को पूरा करवाया जाता है, अतः ज्ञानी भगत इस तरह की बकवाद में नही पड़ता है

विशेष परिस्थिती में यदि शरीर पर अधिक चर्बी हो जाने की वजह से कुछ कठिनाई आ रही है, तो Gym में या किसी अन्य जगह जाकर व्यायाम या उपचार से राहत मिलती है तो जा सकते है

भगत यदि किसान या मजदूरी का कार्य करता है, तो जाहिर सी बात है, खेत मे काम करते समय काफी कसरत हो जाती है, उसे अलग से व्यायाम की जरूरत नही पड़ती है ,

यदि आप किसी नौकरी या ऐसी जगह रहते है जहाँ शारीरिक कार्य ज्यादा नही होता है, तो ऐसी स्थिति में चाहे उपदेशी हो या अनुपदेशी वह सुबह शाम जब भी समय मिले, थोड़ा बहुत हल्का फुल्का व्यायाम कर सकता है, और उस समय भी परमात्मा का नाम सुमरण करना नही भूलना चाहिए, वर्ना स्वास व्यर्थ चली जाएंगी

उपदेशी भगत को मान बड़ाई या सुंदर दिखने के लिए भूलकर भी व्यायाम या कसरत नही करनी चाहिए, क्योंकि यह शरीर मिट्टी है, और इस मिट्टी से सोना केवल परमात्मा की सतभक्ति करके ही बनाया जा सकता है, अन्य तरीकों से नही

गुरुदेव भगवान ने बताया कि
नाम जपत कोढ़ी भलो, चू चू पड़ै जो चाम - वो सुंदर महल किस काम का जहाँ भक्ति नही भगवान

कबीरा - यह तन जायेगा, सके तो ठाहर ला - एक सेवा कर साधु की, या सतगुरु के गुण गा

कबीर - यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अम्रत की खान - शीश दिये जो

गुरु मिले, तो भी सस्ता जान

आज मजनू बनकर, बॉडी बनाने में समय और स्वास बर्बाद कर रहा है, चार दिन बार किसी दुर्घटना मे टांग टूट गई, हाथ टूट गया, या शरीर मिट गया, तो क्या काम आई वो Gym. यदि मर्यादा में रहकर इन बकवादों से दूरी बनाकर परमात्मा की भक्ति करता, तो वह दयालु मालिक आने वाली आपत्ति और दुर्घटनाओ को भी टाल देता, और भक्ति करवाकर मोक्ष भी देता

अर्थात यदि आप उपदेशी है तो ध्यान रखे - शरीर की सुंदरता भक्ति करने से है - कसरत करके शरीर तोड़ने में नही

उपदेशी भगत, मोबाइल या टीवी में गाने चुटकुले,
मूवी, व अन्य कार्यक्रम सुन व देख सकता है या नही ?

गुरुदेव भगवान कहते है

भाई और बात तेरे काम ना आवै
तू संतो शरणै लाग रे
के सोवै गफलत मैं बंदे, जाग जाग नर जाग रे

अर्थात नाम उपदेश लेने के बाद, भगत ने स्वास बर्बाद करने वाली बकवादों से दूर रहना होगा, अन्यथा मन (काल) का प्रभाव बना ही रहेगा, और गुरु वचन (नियम) टूट जाने से भक्ति नही बन पाएगी

जब कभी कभार अनजाने में या वैसे भी जानबूझकर मन का ज्यादा प्रभाव हो जाने के चलते, मोबाइल या टीवी में कोई फिल्म या सीरियल देख लेते है, और उसके बाद जब आरती, मंत्र या सत्संग सुनने बैठते है, तो काल प्रेरणा से बार बार आंखों के सामने उसी फ़िल्म या सीरियल का चित्रण घूमता रहता है, और भक्ति में बाधा बनी रहेगी

गुरुदेव भगवान ने बताया कि – इंसानी दिमाक एक चिप (मेमोरी कार्ड) की तरह है, इसमें सत्संग या अच्छी बातें भरोगे तो

बाहर भी अच्छे ही विचार निकलकर आएंगे ! और यदि फिल्म, चुटकले, या भद्दे गाने सुनोगे, तो बाहर भी वही गंद निकलकर आयेगी ! अतः गंदे गाने, फिल्में, सीरियल या चुटकले आदि बकवादों से दूर ही रहना है !

क्या ज्ञानवर्धक अच्छी फिल्म,
अच्छे गाने या सीरियल देख सकते है ?

आजकल कुछ विद्यालयों में बच्चो के पाठ्यक्रम की CD या DVD पुस्तको के साथ मे आती है, जैसे साइंस या कंप्यूटर आदि की ! अतः बच्चे लैपटॉप या कंप्यूटर की मदद से CD या DVD चलाकर पढ़ाई कर सकते है, उसमें दोष नही है

यदि ऐसी कोई विशेष फिल्म या उस फिल्म का कुछ हिस्सा या कोई ऐसा गाना या भजन है, जो आपको भक्तिमार्ग में नुकसान नही पहुंचाता है, और देखना या सुनना जरूरी है, तो देख सकते है अन्यथा बिल्कुल नही देखना है

सीमित समय के लिए चाहे तो टीवी या मोबाइल पर देश दुनिया की हल्की फुल्की जानकारी के लिए समाचार देख सकते है
यदि यात्रा के दौरान बस में या दाढ़ी कटिंग करवाते समय नाई की दुकान पर टीवी में कोई फिल्म या गाना चल रहा हो, तो क्या उसे देखने से मर्यादा खंडित होगी ?

गुरुदेव भगवान कहते है
इच्छा कर मारै नाही और बिन इच्छा मर जाये – कहै कबीर उस भगत को पाप नही लगाय अर्थात ऐसी स्थिति में यदि आप रुचि लेकर उस फिल्म या गाने को सुनते है, तो अवश्य दोष लगता है और आपकी रुचि उस फिल्म या गाने में नही बनती है, लेकिन

यात्रा के समय या अन्य कारणों से मजबूरीवश सुनना पड़ रहा है तो दोष नही लगता है

बच्चे कभी कभार या पीछे से मोबाइल पर गेम खेल लेते है, क्या ऐसे में माता पिता या बच्चो को दोष लगता है ?

गुरुदेव भगवान कहते है
जैसे माता ग्रभ को राखै यत्न बनाय – चोट लगे तो खराब होवै, तेरी ऐसे भक्ति जाय
अर्थात, भक्तिमार्ग में सफल होने के लिए उपदेशी माता पिता ने बच्चो को लेकर भी बहुत सावधानिया बरतनी होंगी ! क्योंकि छोटे बच्चे माता पिता के आधीन होते है, बचपन से बच्चो को जैसी दिशा मिलती है वे वैसा ही बन जाते है

बच्चे का दिमाग खाली कागज की तरह होता है, अतः सर्व प्रथम तो उपदेशी माता पिता की जिम्मेदारी बनती है कि, बच्चो को गुरुदेव के द्वारा वीडियो गेम या कार्टून ना देखने संबंधी बताये गए नियमो के विषय मे बार बार समझाते रहना है

यदि बच्चा फिर भी जिद्द करता है, तो माता पिता ने बच्चे के आंसुओ को देखकर भावनाओ में बहकर मोबाइल हाथ मे नही थमा देना है, गुरुदेव ने बताया कि बच्चे नादान होते है, उन्हें ज्ञान की भाषा कम और डर की भाषा अधिक समझ मे आती है, अतः उन्हें मर्यादा तोड़ने से बचाने के लिए कभी कभार जिद्द करे, तो हल्की पिटाई भी कर सकते है, लेकिन गुरुदेव ने बताया कि क्रोध में आकर शरीर के कोमल अंगों पर चोट नही मारनी चाहिए

यदि बच्चे, माता पिता के पीछे से मोबाइल लेकर वीडियो गेम या

कार्टून देखते है तो क्या करे?

यदि माता पिता के पीछे से बच्चा इस तरह की हरकत करता है, तो माता पिता की जिम्मेदारी बनती है कि, इस बात का पता चलते ही बच्चो को किसी भी तरह से धमकाना और डराना आवश्यक है, और यदि आपको पता है कि बच्चा पीछे से मोबाइल में गेम या कार्टून देखता है, तो मोबाइल पर स्क्रीन लॉक या फेस लॉक लगाकर रखे

कुछ विद्यालयों में बच्चो को खेलकूद (स्पोर्ट्स एक्टिविटी) या डांस (नाचना गाना) जैसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए कहा जाता है, ऐसे में क्या करे

माता पिता बच्चो को स्कूल में शिक्षा प्राप्ति के लिए भेजते है, नाकि डांस करके दुनिया का मनोरंजन करने के लिए अतः उपदेशी माता पिता को चाहिए, की बच्चो की डांस क्लासेज में या गेम्स एक्टिविटीज में बिल्कुल भी हिस्सा ना दिलाये, टीचर को स्पष्ट रूप से मना कर दे

अज्ञानता में जगत वालो के लिए डांस और गेम्स का बहुत महत्व हो सकता है, लेकिन भगत के लिए समय और स्वास की बर्बाद करने के अलावा कोई महत्व नही है

उपदेशी माता पिता ने अपने बच्चो को अक्षर ज्ञान के लिए ही पढ़ाना है, नाकि नौकरी या खेलकूद में आगे बढ़ाने के मकसद से ! यदि आप बच्चो को नौकरी के मकसद से महंगी फीस वाली प्राइवेट स्कूल या अन्य संस्थाओं में पढ़ाते है तो अभी ज्ञान की

कमी है क्योंकि आने वाला समय परमेश्वर का है, और उस समय कोई भी नौकरी या सेवा डिग्री देखकर नही बल्कि भक्ति और मर्यादा देखकर दी जायेगी

परमात्मा को पता था, यदि शिक्षा के बदले इन्हें नौकरी का लड्डू नही फेंकूँगा, तो कोई भी माता पिता अपने बच्चो को स्कूल में नही भेजेंगे, क्योंकि यह स्वार्थियों का लोक है, बिना स्वार्थ के इस गंदे लोक में कोई किसी का सगा बनकर नही रह सकता है

मतलब के बिना कोई नही प्यारा स्वार्थ के बिना कोई नही प्यारा

अतः अपनी आत्माओं को अक्षर ज्ञान करवाने के लिए यह नौकरी रूपी लड्डू डालना परमात्मा के लिए जरूरी था, वर्ना कोई भी अपने बच्चो को पैसे खर्च करके नही पढ़ाता और यदि वर्तमान की बिचली पीढ़ी अनपढ़ रह जाती, तो पुनः 650 साल पहले की तरह शास्त्रों के ज्ञान से अनजान रह जाती, और वर्तमान में भी पार नही हो पाते

अतः उपदेशी भाई बहनों से प्रार्थना है, अक्षर ज्ञान करवाने के पीछे, गुरुदेव भगवान के मकसद को समझने का प्रयास करे,
और अपने बच्चो को फालतू की प्रतियोगिताओं व महंगे महंगे स्कूलों में भेजकर इंजीनियर बनाने के चक्कर मे – परमात्मा को दुःखी करने से बचे, यदि इंजीनियर ही बनाना है तो समय पर आरती मंत्र व सत्संग सुनाकर इस भक्तिमार्ग में बनाइये, अतः उपदेशी माता पिता को चाहिए कि बच्चो को 10 वी 12 तक अक्षर ज्ञान करवाकर, किसी काम धंधे में लगाये, यदि बच्चे की आगे पढ़ने की इच्छा और आपका सामर्थ्य है तो जरूर पढ़ाये, लेकिन नौकरी के लिए नाही तो बच्चो पर दबाव बनाना है और नाही माता

पिता ने बच्चे से किसी नौकरी की इच्छा लगानी है

उपदेशी माता पिता को बुढापे का सहारा भगवान को समझना चाहिए नाकि बच्चो को और बच्चो की नौकरी को

मान लीजिए – आपने पढ़ा लिखाकर बच्चो को नौकरी भी लगा दिया, और नौकरी के 1 साल बाद बच्चा किसी एक्सिडेंट मे मर जाता है, या शादी के बाद माता पिता को त्याग देता है, तो कहा गया आपका सहारा – वो बच्चा और उसकी नौकरी ऐसे ऐसे आपको अनेक उदाहरण देखने को मिल जाएंगे

यदि गुरुदेव पर आश्रित होकर, आजीवन मर्यादा में रहकर भक्ति करते रहेंगे, और मान लीजिए आपके बच्चे भी निक्कमे निकल जाते है, तो भी दयालु वह परमात्मा उस भक्ति की बदौलत, अपनी उस प्यारी आत्मा की बुढ़ापे में किसी भी सेवक को निमित बनाकर सुखद सेवा करवाएंगे

फिर भी मन नही मानता है तो एक बार उन भगत भाई बहनों के घरों में जाकर नजर मार लेना, जो उपदेशी होने के साथ साथ सरकारी नौकरी भी है, आपको पता चल जायेगा कि वे कितनी मर्यादा में रहकर भक्ति कर रहे है ?

जब तक परमात्मा का साम्राज्य स्थापित नही हो जाता है, तब तक आप इस काल लोक की सरकार में नौकरी प्राप्त करके 50% मर्यादा भी नही निभा पाएंगे

अतः ज्ञान को आधार बनाकर, अपने बच्चो को फालतू की प्रतियोगिताओं में भाग ना दिलवाकर, उनका आध्यात्मिक भविष्य

बचाने का प्रयास करे ! और बुढ़ापे में बच्चो तथा नौकरी के सहारे की नही बल्कि परमात्मा के सहारे की उम्मीद लगाकर भक्ति करे उपदेशी भगत यदि किसान है तो खेत में यूरिया खाद, व कीटनाशक, पेस्टिसाइड या अन्य किसी प्रकार की जहरीली दवाई का प्रयोग, फसल या फल, सब्जियां आदि उगाने में कर सकते हैं या नही ?

कहते है,

सतगुरु जो चाहे सो करही, भ्रम पड़ो मत् कोई सेऊ धड़
पर शीश चढ़ाया, पाछे करी रसोई

सतगुरु जो चाहे सो करही, चौदह कोटि दूत जम डरही ऊत
भूत जम त्रास निवारे, चित्रगुप्त के कागज फाड़े

अर्थात सतगुरु रूप में भगवान तो आज भी वही है, जो धन्ना जी को मिले, नानक जी को मिले, मीरा जी को मिले, दादू जी को मिले, नाही भगवान बदला है और नाही भगवान के गुण यदि कुछ बदला है तो वो हमारी सोच है, जिसमे स्वार्थ ने घर कर लिया है

इसी स्वार्थवश हम भौतिक वस्तुओं की पूर्ति के लिए के लिए खेतो में अंधाधुंध यूरिया खाद व जहरीली दवाइयो का छिड़काव करके, करोड़ो सूक्ष्म जीव व छोटे छोटे कीड़ो की हत्या का पाप कमा रहे है, हम खुद भी जहर खा रहे है और स्वार्थवश दुनिया को भी साग सब्जी व अनाज के माध्यम से जहर खिला रहे है नतीजन आज इतने रोग व बीमारियां पैदा हो चुकी है, जिनके नाम भी गिनना मुश्किल है

अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर आज इंसान के इतना नीचे गिरने

का एक ही कारण है, शास्त्र अनुकूल साधना और सच्चे आध्यात्मिक ज्ञान की कमी

सच्चे आध्यात्मिक ज्ञान की कमी के चलते आज कोई भी संत महात्मा सही से मानव समाज का मार्ग दर्शन नही कर पा रहा है

और शास्त्र अनुकूल साधना के चलते, भक्ति करते करते भी नाही तो पशुधन में कोई फायदा है और नाही फसल, व्यापार और शरीर मे, जिसके चलते हर व्यक्ति ने अधर्म के उसी मार्ग पर चलना उचित समझ लिया, जिस मार्ग में उसे फायदा हो सके, वो फायदा चाहे किसी का नुकसान करके हो या पाप कमाकर

पुण्यात्माओं, इसी बीच इस भयंकर कलयुग में हमारा सौभाग्य है कि हमे सतगुरु रूप में सच्चा मार्ग दर्शक भी मिला और शास्त्र अनुकूल सच्ची साधना भी मिली, अतः दुनिया भले ही अपनी दिशा और मार्ग को बदले या ना बदले, लेकिन हम भक्तो ने ज्ञान को आधार बनाकर और सतगुरु की सतभक्ति पर विश्वास करके, अपने स्वार्थों की बलि देकर, अपनी सांसारिक और पेट भरने की गलत क्रियाओं को बदलना पड़ेगा, क्योंकि गुरुदेव भगवान इस कलयुग में एक हजार वर्ष के लिए सतयुग की स्थापना, हम तत्त्वज्ञान प्राप्त भगत भाई बहनों को ही निमित बनाकर ही करने वाले है, देश दुनिया हम भक्तो के आचरण, व्यवहार, नेक नीति और विश्वास को देखकर ही भक्ति की ओर अग्रसर होगी

सोचिए भोजन खाते समय यदि आपकी सब्जी कटोरी में दो दाने यूरिया खाद के, या एक टपका (ड्रॉप) कीटनाशक की डालकर, आपसे कहा जाये, की अब यह सब्जी अपने परिवार को या आप स्वयं खाइये, तो आपजी क्या कहेंगे और क्या करेंगे, यह बताने की

आवश्यकता नही है, उसी समय उस जहरीली कटोरी को कही बाहर नाली में डालकर आएंगे

इस उदाहरण से शिक्षा लेते हुएए गुरुदेव भगवान से उपदेश प्राप्त किसान भगत भाई बहनों को विचार करना चाहिए

जिस फसल व साग सब्जी को पैदा करते समय उसमें यूरिया खाद के दो दाने नही, बल्कि दो दो कट्टे खाद के डाल देते हो फिर फसल पर छिड़काव करते समय कीटनाशक की एक या दो बूंद नही, बल्कि दो दो बोतल खत्म कर डालते हो

और फिर उसी जहरीले अनाज से आटे का हलुवा बनाकर गुरुदेव भगवान को भी खिला रहे हो ,परिवार को भी, और बच जाये तो समाज को भी सोचिए यदि भगत होकर हम भी, ज्ञानहीनता व स्वार्थों के चलते बाकी दुनिया की तरह माया की दौड़ में दौड़ लगाते रहेंगे, तो भला उनमें और हमारे में क्या अंतर रह जायेगा

गुरुदेव भगवान तो कहते है कि, यदि आप रास्ते से जा रहे है और चींटियों का बिल आ जाये, तो अपना रास्ता बदल देना चाहिए, यदि उसी रास्ते से जाना ज्यादा ही मजबूरी है तो बहुत सावधानी से चींटियों को नुकसान पहुँचाये बिना रास्ता पार करना चाहिए

अन्यथा गुरुदेव भगवान कहते है
जान बूझ सांची तजे, करे झूठ से नेह, जाकी संगति हे प्रभु स्वपन में भी ना दे अर्थात ज्ञान हो जाने पर जानबूझकर सच्चाई से दूर भागने वाले दुष्ट भगत का तो स्वपन में भी दर्शन नही करना चाहिए

जबकि, खेत मे यूरिया खाद डालते समय और फसल पर जहरीले कीटनाशक का छिड़काव करते समय तो लाखों जीव, जानबूझकर हम अपनी आँखों के सामने मार डालते है ! सोचिए – ऐसे में हमे कैसे पूर्ण आध्यात्मिक लाभ मिलेगा, कैसे गुरुदेव भगवान हम पर प्रसन्न होंगे! अपने अपने क्षेत्र में इसी ज्ञानहीनता के चलते आज भगत समाज भक्ति करते करते भी पूर्ण लाभ प्राप्त नही कर पा रहा है

यदि फसल में यूरिया खाद और जहरीले कीटनाशक का प्रयोग ना करे, तो अच्छी फसल के लिए और क्या विधि अपनाये?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, हम आध्यात्मिक व्यक्ति है, और आध्यात्मिक क्रियाओं को ज्यादा महत्व देते हुए उसी आधार से हमने हर क्षेत्र में आगे बढ़ना होगा, ठीक इसी तरह किसान को फसल पैदा करते समय कुछ आध्यात्मिक क्रियाओं को महत्व देना होगा जैसे

आपको याद होगा, वर्षो पहले जब यह यूरिया और कीटनाशक नही हुआ करता था, उस वक्त हमारे माता पिता या दादाजी जब खेत मे बीज डालने के लिए जाया करते थे, तो उससे एक दिन पहले, फसल की अच्छी पैदावार के लिए अपने इष्ट भगवान के नाम पर कुछ विशेष भोजन बनाकर उन्हें भोग लगाया करते थे, ऐसा करने से समय पर वर्षा भी हुआ करती थी, और अच्छी फसल भी

लेकिन आगे चलकर, उनके पास सतभक्ति ना होने की वजह से भक्ति कमाई रही नही, जिसके चलते धीरे धीरे भौतिक लाभ बंद होते चले गए, और उन्होंने काल प्रेरणा से एक ऑप्शन के रूप में यूरिया खाद और कीटनाशक का इस्तेमाल करके, जहर

खाने के साथ साथ, करोड़ो जीव हत्याओ का पाप भी अपने सिर पर रखना शुरू कर दिया

लेकिन आज हम भक्तो के पास सतभक्ति भी है और गुरु भगवान भी साथ है और उनका आशिर्वाद भी अतः हमने भी खेत मे बीज डालने से पहले उसी पुरानी आध्यात्मिक क्रिया को अपनाना है, अर्थात खेत मे बीज डालने के लिए जाते समय, अपने गुरुदेव भगवान को भोग की आरती के साथ, परिवार सहित हलुवा राम का भोग लगाना है

या खेत मे बीज डालने के लिए जाते समय घर पर दरबार साहेब के आगे, गुरुदेव भगवान से एक ज्योति हवन यज्ञ का संकल्प कर सकते है

यदि आपके पास पशु है तो यूरिया खाद की बजाय पशुओं का खाद इस्तेमाल करे, या आजकल वैज्ञानिकों ने केंचुओं से प्राकृतिक खाद भी तैयार कर लिया है, आपजी उसका भी इस्तेमाल कर सकते है जो जमीन और अन्न, दोनों को ही नुकसान नही पहुचाता है यदि चाहे तो

अतः वैसे तो पुण्यात्माओं, अब साध संगति से जुड़कर, हजारों की संख्या में ज्ञान आधारी परिवार रोजाना ही गुरुदेव भगवान को भोग आरती के साथ, अपने अपने घरों में हलुवा राम का भोग लगा रहे है, अतः उन भगत आत्माओं को तो किसी भी क्रिया के लिए अलग से भोग लगाने की जरूरत ही नही पड़ती है, अंतर्यामी गुरुदेव भगवान बिना मांगे, और बिना इच्छा के ही सब कुछ प्रदान कर रहे है यह क्रिया उन किसान भगत भाई बहनों के लिए है, जो

उपदेशी होकर भी अभी साध संगति से नही जुड़ पाये है और गुरुदेव भगवान को अपने अपने घरों पर भोग लगाना शुरू नही किया है

अतः आज इतना तत्त्वज्ञान हो जाने के उपरांत, हम भगत भाई बहनों को यह दृढ़ विश्वास हो जाना चाहिए, की हमे संत रामपाल जी भगवान के रूप में वही समर्थ सतगुरु मिले है

जिन्होंने बिना यूरिया खाद डाले, बिना किसी कीटनाशक स्प्रे का फसल पर छिड़काव किये, और जमीन में बिना बीज डाले ही, धन्ना भगत के खेत मे कंकर से तुम्बो में ज्वार पैदा कर दी तो क्या उपरोक्त सत्य आध्यात्मिक क्रियाओं को अमल में लाने के बाद, वह समर्थ परमात्मा, मर्यादित भक्ति करने वाली हम भगत आत्माओं की फसल तैयार होने में मदद नही करेगा?

हमे समर्थ सतगुरु भगवान मिले है, जिन्होंने अपने भगत प्रहलाद को आग में जलने से बचाया था ! अतः मर्यादित भक्ति करते रहेंगे, तो क्या गुरुदेव भगवान अपने भगत की फसल को कीड़े मकोड़ो से नही बचाएंगे ?

जिन्होंने बिना यूरिया खाद डाले, बिना किसी कीटनाशक स्प्रे का फसल पर छिड़काव किये, और जमीन में बिना बीज डाले ही, धन्ना भगत के खेत मे कंकर से तुम्बो में ज्वार पैदा कर दी ! तो क्या उपरोक्त सत्य आध्यात्मिक क्रियाओं को अमल में लाने के बाद, वह समर्थ परमात्मा, मर्यादित भक्ति करने वाली हम भगत आत्माओं की फसल तैयार होने में मदद नही करेगा ?

हमे समर्थ सतगुरु भगवान मिले है, जिन्होंने अपने भगत प्रहलाद को आग में जलने से बचाया था ! अतः मर्यादित भक्ति करते रहेंगे, तो क्या गुरुदेव भगवान अपने भगत की फसल को भी कीड़े मकोड़ो से नही बचाएंगे ?

हमे वही समर्थ सतगुरु भगवान मिले है, जिन्होंने जहर पीने के बाद भी मीराबाई को मौत से बचाया था ! यदि मर्यादित भक्ति करेंगे, तो क्या वह भगवान हमारी फसल को भी कीड़ो से नही बचायेगा ?

अवश्य बचायेंगे, यदि पूर्ण दृढ़ विश्वास के साथ ऐसा करने की हिम्मत करेंगे तो ?

Note मर्यादा तोड़कर चाहे भक्ति करे या भोग लगाये, भगत को केवल संस्कार ही मिल सकता है, सतगुरु की तरफ से लाभ और आशिर्वाद नही – अतः भक्तिमार्ग में मर्यादित भक्ति का विशेष महत्व है)

भोजन खाने के बाद, थाली में हाथ धो सकते है या नही ?
गुरुदेव भगवान कहते है
अन्न जल साहेब रूप है, खुध्या तृषा जाये – चारो युग परवान है आत्म भोग लगाय
उपदेशी भगत जब थाली में भोजन डालकर भंडारा करता है, तो सर्व प्रथम अन्नदेव की आरती के साथ परमात्मा को भोग लगाता है
अतः ज्ञान आधार कहता है कि जिस बर्तन में परमात्मा को भोग लगा हो, उस बर्तन में हम तुच्छ जीव अपने मुँह व हाथों की गंदगी

साफ करें, यह उचित नही है

अतः ज्ञान हो जाने के बाद, जिस बर्तन में भंडारा करते है, उसमें झूठे हाथ व कुल्ला नही करना है

उपदेश लेने के बाद, भगत को रक्तदान व
देहदान करना चाहिए या नही

पूज्य गुरुदेव भगवान ने, संध्या आरती में एक जगह आदरणीय गरीब दास जी महाराज जी की वाणी के माध्यम से बताया कि पिंड प्राण जिन दीन्हे दाना, गरीब दास जाकू कुरबाना अर्थात गरीब दास जी महाराज कह रहे है कि, मैं कुरबाना हो जाऊं अपने कबीर परमात्मा पर, जिन्होंने भक्ति के लिए मुझे यह शरीर और प्राण दान में दिए है

अब भगत समाज के लिए विचार करने की बात यह है, की जिस गुरुदेव भगवान ने हमे यह शरीर भक्ति के लिए दान में दिया है, तो भला दान में प्राप्त इस शरीर को हम कैसे किसी अन्य को दान कर सकते है ?

गुरुदेव ने बताया कि, दान चाहे धन का हो या खून का या देह का, भक्ति विधान अनुसार दान हमेशा सुपात्र को दिया जाता है जबकि आज रक्तदान और देहदान एक व्यापार बन चुका है

यहाँ काल निरंजन, भगत आत्माओं को गुरुदेव भगवान से दूर करने के लिए कुपात्र सतलोक आश्रम मैनेजमेंट हरियाणा को निमित बनाकर, रक्तदान व देहदान के माध्यम से गुरु वचन तुड़वाकर मर्यादा खंडित करवा रहा है, जबकि विचार करे, गुरुदेव

भगवान को 28 वर्ष हो गए इस मार्ग को चलाते हुए, उन्होंने इन 28 वर्षों में कभी भी अपने भक्तो से नाही तो रक्तदान करवाया और नाही देहदान

कहते है एक गलत काम को छुपाने के लिए इंसान को 100 झूठ और बोलनी पड़ती है

पहले तो संगत के दान पर धार्मिक धंधा खड़ा करने के लिएए सतलोक आश्रम मैनेजमेंट हरियाणा ने फर्जी आश्रमो का निर्माण करवाया

फिर उन आश्रमो को चलाने के लिए ट्रस्ट बनाया

अब उस ट्रस्ट को चलाने के लिएए रक्तदान, देहदान, दहेजमुक्त शादी जैसे सामाजिक कार्य करके, सरकार को रिपोर्ट भेजना इनकी मजबूरी हो गई, क्योंकि किसी भी NGO और ट्रस्ट को चलाने के लिए, आपने सरकार को हर महीने इस तरह के कार्यो की सूची भेजनी पड़ती है, वर्ना ट्रस्ट का लाइसेंस कैंसिल कर दिया जाता है! अतः अपने धार्मिक धंधे को चलाने के लिए इस मजबूरी के तहत, सतलोक आश्रम मैनेजमेंट ने बेचारी संगत को गुरु आदेशो की आड़ में मोहरा बनाया हुआ है, जबकि पूज्य गुरुदेव भगवान का इस तरह देहदान व रक्तदान का कोई आदेश नही है भगवान मुसीबत में अपने भक्तो का खून बढ़ाता है नाकि अपने भक्तो के खून पर धंधा करता है

हमने तो गुरुदेव भगवान के सत्संग में सुना है कि, भगवान देहदान दिया करता है, जबकि यहाँ तो उल्टी गंगा बहाते हुए, उसी भगवान के नाम पर भक्तो से देह का दान करवाया जा रहा है

!! क्या देहदान भी काल का एक षड्यंत्र है !!

जी हाँ देहदान व रक्तदान करवाना भी काल की एक साजिश होती है, जैसा कि आपको ऊपर बताया गया है कि देहदान और रक्तदान भी आज के समय मे एक international व्यापार बन चुका है कैम्प के नाम पर लोगो का मुफ्त में खून निकलवाकर व देहदान करवाकर उसे महंगे पैसों में बेचा जाता है, आज किसी बड़े व्यापारी या मंत्री को किडनी ट्रांसप्लांट की जरूरत पड़ जाए तो तकरीबन 40 से 50 लाख रुपया लगता है यानी आप और हमारे जैसे लोगो की देहदान के नाम पर मरने के बाद निकाली गई किडनी 50 लाख रुपये की बनकर व्यापार का रूप ले लेती है अर्थात आपके देहदान का दुरुपयोग

तो क्या भक्तो को बिल्कुल भी देहदान नही करना चाहिए

यदि आप देहदान करने के इछुक है, तो अपने सुपात्र गुरुदेव भगवान से पहले आमने सामने होकर आदेश प्राप्त करे, और यह भी सत्य है कि गुरुदेव भगवान आपको देहदान करने का आदेश नही देंगे,गुरुदेव कहेंगे बेटा, यदि तुम भक्तो के देहदान और रक्तदान से ही लोगो को जीवन मिलता रहेगा, तो मेरी भक्ति की किसको जरूरत पड़ेगी

क्या भक्तो को रक्तदान नही करना चाहिए

एक भगत, रक्तदान कर सकता है, लेकिन किसी कैम्प या संस्था को नही, यदि आपका कोई रिश्तेदार या परिवार का सदस्य बीमार है, एक्ससिडेंट हुआ है या अन्य कारण से उसे खून की जरूरत है, तो मानवता के नाते आप हॉस्पिटल जाकर खून दे सकते है, लेकिन किसी संस्था या कैम्प में दान करके, रक्तदान को धंधा ना बनने दे

यही कारण है कि आज 70% संगत. रक्तदान, देहदान, धनदान, चापलूसी और गुलामी करते करते भी महादुःखी है

मैं पहले से उपदेशी हूँ, लेकिन बीच मे लोकलाज और परिवार के दबाव में आकर मर्यादा तोड़ कर भक्ति छोड़ दी थी लेकिन अब पुनः भक्ति करना चाहता हूँ – ऐसी स्थिति में गुरुजी से वापस जुड़कर कैसे भक्ति शुरू करे ?

पूज्य गुरुदेव भगवान ने बताया कि सुबह का भटका हुआ यदि शाम को वापस घर आ जाता है – तो उसे भटका हुआ नही कहते है

आदरणीय धर्मदास जी का उदाहरण देकर गुरुदेव ने बताया कि, जब मथुरा में धर्मदास जी को कबीर परमात्मा मिले और अपना ज्ञान बताकर वापस अंतर्ध्यान हो गये कुछ दिन बार पुनः एक साधु रूप में वापस मिले, तो धर्मदास जी ने कहा कि – परमात्मा आपसे ज्ञान सुनने के बाद मेरी पहले वाली साधना में बिल्कुल भी रुचि नही रही अब आप मुझे आगे का मार्ग बताये

ठीक इसी प्रकार, सतगुरु रामपाल जी भगवान से उपदेश लेने के उपरांत, भले ही कोई व्यक्ति लोकलाज में आकर, दबाव में आकर या नादानी में इस भक्ति को त्याग दे, लेकिन यह भी परमसत्य है कि यह ज्ञान सुनने के बाद उस व्यक्ति की अन्य साधना (पूजा पाठ) में बिल्कुल भी रुचि नही बन सकती है !! उसे हमेशा यह अखरता (लगता) रहेगा, की हाथ से कुछ छूटता जा रहा है

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, यह आत्मा युगों युगों से इस

वास्तविक भगवान और भक्ति की खोज में भटक रही है जैसे ही आत्मा को वह परमात्मा मिल जाता है और मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ती है, तो अपना भोजन हाथ से निकलता हुआ देख, काल निरंजन उस आत्मा को लेकर चिंतित हो जाता है, तथा उस आत्मा के ऊपर संचित पाप कर्मों का दबाव डाल देता है

संचित पाप कर्म क्या है

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, मनुष्य शरीर छूटने के बाद जब आत्मा धर्मराज के दरबार मे लेखाजोखा करवाने जाती है, तो धर्मराज कुछ : पाप पुण्य निकालकर उस आत्मा की आगे की योनि व स्वर्ग नरक का समय निश्चित करता है, तथा शेष पापकर्मो को बैलेंस रूप में रख लेता है, जिसे संचित कर्म कहा जाता है ऐसे ऐसे संचित कर्मो का धर्मराज के पास ढेर लगा हुआ है

मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ रही आत्मा पर जैसे ही उन संचित पापकर्मो का दबाव बढ़ता है, तो यह आत्मा काल प्रेरणा से विचलित होने लगती है, ऐसे में यदि भगत मर्यादा में है तो परमात्मा उसे विचलित नही होने देता है लेकिन ज्ञान से कमजोर आत्माये उस दबाव को सहन ना करके, मर्यादा तोड़कर काल प्रेरित होकर इस मार्ग को त्याग देती है

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, वह आत्मा भले ही इस मार्ग को त्याग दे, लेकिन वह भक्ति बिना रह भी नही पाएगी, और बार बार इस मार्ग से जुड़ने का प्रयास करेगी, लेकिन संचित पापकर्मो के दबाव के चलते बार बार मर्यादा तोड़ता रहेगा और प्रयास भी करता रहेगा

अतः यदि पुनः वर्षो बाद आपजी को इस भक्तिमार्ग से जुड़ने की प्रेरणा हो रही है, तो जुड़ने से पहले कुछ बातों पर गहनता से विचार करे

इस सतभक्ति से जुड़ने की प्रेरणा काल कभी स्वपन में भी नही करेगा, उसका तो काम ही इस भक्ति से दूर करने का है जैसे आपको किया ! अतः आपको पुनः भक्ति से जुड़ने की प्रेरणा स्वयं कबीर परमात्मा सतगुरु रामपाल जी भगवान ने ही की है और यदि गुरुदेव ने आपको यह सत् प्रेरणा की है, तो समझो उन्होंने आपको यह दूसरा मौका देते हुए, पिछली तमाम गलतियों से आपको दोषमुक्त कर दिया है अर्थात घर बैठे ही भगवान ने आपको माफ करके, आपका नाम शुध्द कर दिया है

इसके बाद यदि गुरुदेव भगवान किसी आश्रम में विधमान हो, तो आप एक बार पुनः उनके चरणों मे जाकर अपनी तमाम गलतियों और नादानियों के लिए हृदय से क्षमा याचना करे, उसके बाद यह गुरुदेव भगवान की इच्छा पर निर्भर करता है, वे आपको दुबारा से नामदान लेने का आदेश देते है या आपके उसी नाम को आशिर्वाद देकर सुचारू कर देते है

लेकिन वर्तमान समय 2022 मे गुरुदेव हिसार जेल में बैठे है, ऐसी स्थिति में ज्ञान को आधार बनाकर आपने इस प्रेरणा के बाद, अपने घर पर पहले की भांति दरबार लगाकर, सर्व प्रथम गुरुदेव भगवान से समस्त गलतियों की हृदय से क्षमा याचना मांगकर, आगे से गलती ना करने का विश्वास दिलाकर, पहले के जैसे अपना नाम सुमरन, तीनो समय की आरती, ज्योति जलाना व पांचों यज्ञ शुरू कर दे

यदि मर्यादा और विश्वास के साथ भक्ति करते रहोगे, तो गुरुदेव भगवान पल पल शब्द रूप में साथ रहेंग, और यदि फिर से जानबूझकर कोई गलती कर डाली, तो इस जन्म में तीसरे मौके की उम्मीद ना करना

यदि उपदेशी भगत, विदेश में या स्वदेश (अपने ही देश) में किसी कंपनी में काम करता है, और वही रहता है तथा मजबूरीवश उसे कंपनी की तरफ से उपलब्ध करवाया गया भोजन खाना पड़ता है, तो वहा भोजन खा सकता है या नही, होली दिवाली पर बोनस प्रमोशन या अन्य सुविधा ले सकतें हैं या नहीं ?

पूज्य गुरुदेव जी कहते है ..
उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम क्यो फिरता दाने दाने नूँ – सर्व कला सतगुरु साहेब की, हरि आये हरियाणा नूँ अर्थात अब तो स्वयं भगवान हरियाणा में आये हुए है, और आप उस ऐसे समर्थ परमात्मा की शरण प्राप्त करके भी, जो पूरी सृष्टि को भोजन खिला रहा है, क्यो अज्ञानता में चंद पैसों व अपना पेट पालने के लिए देश विदेश भाग रहे है

एक समय दर्शनों के वक्त, गुरुदेव के पास एक भगत आया और कहने लगा कि गुरुदेव, मैं काम धंधे के लिए अमेरिका जाना चाहता हूँ, आशिर्वाद दीजिए मेरा काम बन जाये, पूज्य गुरुदेव भगवान ने कहा कि – यदि तुझे मुझ पर विश्वास है और मर्यादा में रहकर भक्ति करेगा, तो तेरे लिए यही अमेरिका बना दूँगा अर्थात अमेरिका से ज्यादा पैसा यही कमाने लग जायेगा

कुछ महीनों बाद वह भगत गुरुदेव के दर्शनों के लिए पुनः आश्रम

में आया, और उस दिन के आशिर्वाद उपरांत अपने अच्छे दिनों की गुरुदेव से चर्चा करते हुए कहने लगा कि – गुरुदेव आपका आशिर्वाद और वचन वैसा ही निकला जैसा आपने कहा था उस समय अमेरिका जाकर भी मैं उतना धन नही कमा सकता था, जितना यही आपने कमाई का साधन बना दिया !

और हो सकता है अमेरिका जाकर धन भी कमा लेता, लेकिन आज मुझे एहसास हो रहा है कि, अमेरिका जाकर इस असली भक्तिधन से कोसो दूर हो जाता, ना वहां मर्यादा में रह पाता और नाही सही से भक्ति कर पाता, नाही समय पर आपके दर्शन कर पाता, और परिवार से भी दूर रहना पड़ता, इस वजह से बच्चे भी भक्ति से दूर हो जाते, हे गुरुदेव यदि आपने मुझे नही संभाला होता और अपनी नादानी के चलते 2 वक्त की रोटी की चिंता में अमेरिका चला गया होता, तो आज इस असली धन, भक्ति और भगवान से दूर होकर नरक के रास्ते पर चल पड़ा होता

गुरुदेव कहते है
कबीरा सब जग निर्धना, धनवंता ना कोय
धनवंता सोही जानिए जिसके पास सतनाम धन होय

अतः पुण्यात्माओं को ज्ञान आधार से विचार करना चाहिए जिस समय यह परमात्मा हमे नही मिला था, उस समय इसी परमात्मा की खोज में हमने ना जाने कहा कहा जंगलों में, गुफाओं में घोर तप किये, निराहार रहकर भक्ति की, और आज सहज में गुरु रूप में यह परमात्मा मिल गया है, तो हम इनकी कदर ना करते हुए, 2 वक्त की रोजी रोटी के लिए इससे हजारों मील दूर विदेशों में भागने की सोच रहे है

चाहे विदेश जाओ चाहे देश मे रहो, आपको मिलना वही है जो

सतगुरु ने आपकी किस्मत में लिख दिया है और इस भगवान पर विश्वास करके, इनकी वाणी अनुसार चलेंगे की, साईं इतना दीजिए जिसमे कुटुंब समाव – हम भी भूखे ना रहे, साधु ना भूखा जाय

और माया के पीछे अधिक दौड़ ना लगाकर, सच्चे भाव और विश्वास के साथ मर्यादित भक्ति करेंगे, तो गुरुदेव कहते है, कल्पे कारण कौन है तू कर सेवा निष्काम मन इच्छा फल देउँगा जब पड़ेगा मेरे से काम

गुरुदेव ने तैमूर लंग को सात पीढ़ी का अखंड राज, उसकी विदेश की कमाई से नही बल्कि उसके सेवा भाव से प्रसन होकर दिया था

भगत सम्मन मणियार को गरीब से दिल्ली का सेठ, और अगले जन्मों में नौ शेरवां का बादशाह और फिर बल्ख शहर का बादशाह, उसकी विदेशी कमाई से नही बल्कि उसकी सेवा और भक्ति से प्रसन्न होकर बनाया था

यह वह समर्थ परमात्मा है, जो धन की इच्छा रखकर, पूर्ण मर्यादा में रहकर भक्ति करने वाले साधक पर मोक्ष के अलावा आवश्यक धन की कृपा भी करता हैं

और मोक्ष की इच्छा रखकर, पूर्ण मर्यादा में रहकर भक्ति करने वाले साधक को, जरूरत के अनुसार आवश्यक धन भी देता है और अंत मे मोक्ष भी प्रदान करता है !!

इसके बावजूद भी, यदि आप नामदीक्षा से पहले या नादानी में

नाम उपदेश के उपरांत, सतगुरु रूपी असली धन से दूर विदेश चले गए है, तो कुछ बातों का विशेष ध्यान रखकर अपनी भक्ति व मर्यादाओं को बचा सकते है, लेकिन फिर भी सतगुरु दर्शन से तो वंचित रहना ही पड़ेगा, जिसकी भरपाई दुनिया का कोई भी धन नही कर सकता है

आप जिस कंपनी में काम करते है वही पर आपको सामूहिक भोजन करना पड़ता है, तो ध्यान रखे, यदि बर्तन साफ करने की सुविधा हो, तो आप बर्तनों को अच्छे से साफ करें

किसी अन्य अन उपदेशी व्यक्ति के साथ भोजन सांझा (share) ना करे, अपना अलग से थाल में डालकर खाये, अर्थात किसी अन्य व्यक्ति की झूठी सब्जी या चपाती आदि ना खाये

यदि एक ही रसोई में VEG और NONVEG दोनों की तरह का भोजन बनता है, तो जाहिर सी बात है बनाने के लिए बर्तन वही प्रयोग में लाये जाते होंगे ऐसी स्थति में वहाँ भोजन तो नही करना चाहिए, लेकिन आपकी मजबूरी है इसलिए आप वहां के स्टाफ को थोड़ा अपनी मर्यादा और भक्ति विधि के विषय मे बता दे, यदि कुछ सावधानी वे रख सके तो ठीक है, वर्ना आपने ही स्वच्छता का ध्यान रखना होगा, और VEG (शाकाहारी) भोजन ही करना है साथ ही गुरुदेव भगवान से प्रार्थना करते रहे कि, हे गुरुदेव अपने दास को संभाल कर रखना, और हो सके तो इस माहौल से दास की मर्यादा बचाने के लिए कोई रास्ता निकाले

यदि आप 5, 10 वर्कर (मजदूरों) को कंपनी की तरफ से या आपस मे आप लोग कमरा लेकर रहते है, बाकी सभी अन उपदेशी है, और कुछ व्यक्ति मांसाहारी है और खाना बनाने के लिए एक ही

बर्तन है, तो प्रथम आपकी यही कोशिश रहे कि, गैस चूल्हे को छोड़कर बाकी अपने अलग से बर्तन खरीद लेने है, यदि ऐसा संभव नही हो पाता है तो फिर आपने उन बर्तनों को अच्छे से साफ करके अपना भोजन अलग ही बनाना है, और गुरुदेव से क्षमा याचना करते रहना है

कंपनी की तरफ से मिलने वाला या कभी कभार खिलाये जाने वाला नास्ता आपजी कर सकते है, क्योंकि आप वहां पर काम करते है, लेकिन ध्यान रखना है नाश्ता डालडा घी से निर्मित ना हो, नाश्ता साफ सुथरी जगह से मंगवाया गया हो, नाश्ता किसी का झूठा ना किया गया हो आदि बातों का ध्यान रखना है, अन्यथा, नाश्ता करना या ना करना भी आपकी अपनी समझ और मर्जी पर निर्भर करता है

किसी त्योहार पर कंपनी की तरफ से दिया जाने वाला बोनस, इंक्रीमेंट, पैसा, कपड़ा, बर्तन आदि आप ले सकते है, क्योंकि वह आपकी सेवा व मेहनत की बदौलत मिल रहा है ! लेकिन ध्यान रहे आपने भूलकर भी अपनी तरफ से किसी भी तरह के बोनस, इंक्रीमेंट, मिठाई, गिफ्ट, बकसीस, पैसे या बर्तन आदि की डिमांड नही करनी है, और नाही मन मे ऐसी कोई इच्छा रखनी है

यदि कंपनी का मालिक या मैनेजर घर पर हो रही, शादी विवाह, जन्म मरण, आदि के उपलक्ष्य में वर्कर को फल, मिठाई, नाश्ता, भोजन या कपड़े पैसे बांटता है, तो सतगुरु भगत ने भूलकर भी इन वस्तुओं को स्वीकार नही करना है, चाहे नाराज होकर आपको कंपनी से ही क्यों ना निकाल दिया जाये

यदि आप किसी रेजीडेंसी या रिहायसी कॉलोनी में गॉर्ड की

नौकरी करते है, और किसी त्योहार आदि पर आपको बोनस, मिठाई या कपड़े पैसे आपकी कंपनी की तरफ से मिलता है तो ले सकते है, लेकिन रेजीडेंसी या कॉलोनी में निवास करने वाले व्यक्ति आपको किसी त्योहार पर या उनके अपने किसी फंक्शन (जन्म दिन, शादी) की मिठाई, या अन्य गिफ्ट देते है, या खाने पर बुलाते है, तो सतगुरु भगत ने भूलकर भी नाही कुछ लेना है और नाही भोजन करने जाना है

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि, यदि मोक्ष के लिए गुरु भगवान को प्रसन्न करना है तो आपने मर्यादा को इस तरह से बचाना होगा, जैसे रात्रि में करवट लेते समय एक ग्रभवती औरत अपने बच्चे का ध्यान रखती है

जैसे माता ग्रभ को राखै यत्न बनाय
ठेस लगे तो नष्ट हो, तेरी ऐसे भक्ति जाय

उपदेश लेने के बाद भिखारी को खाना खिलाना, गाय को चारा डालना, कुत्तों को रोटी डालना, चींटियों को आटा आदि डाल सकते है या नही ?

पूज्य गुरुदेव जी कहते है
कहै कबीर पुकार के दोई बात लिख ले एक साहेब की बंदगी और भूखों को कछू दे, अर्थात भूखे व्यक्ति को भोजन खिलाना पुण्य का काम है,परमात्मा की आत्मा को भोजन करवाकर तृप्त करना बहुत बड़ा धर्म का कार्य है

लेकिन वर्तमान में हम जो भक्ति कर रहे है ! यह पवित्र गीता जी, चारो वेद व पवित्र कबीर सागर (सूक्ष्म वेद) पर आधारित है यथार्थ

भक्ति ह, इस यथार्थ भक्ति में दान पुण्य करने के कुछ विशेष तौर तरीके है, यदि हम उस आधार से गुरु आज्ञा अनुसार, मर्यादा में रहकर दान धर्म करेंगे तो सफलता मिलेगी अन्यथा नही

उदाहरण के लिए – बंदूक भी है और गोली भी है, यदि गोली को हाथ से फेंका जाये तो अपने लक्ष्य तक स्पीड से नही पहुँच पायेगी और बंदूक में डालकर निशाना लगाया जायेगा, तो वास्तविक काम करेगी

ठीक इसी प्रकार, दान धर्म तो सभी धार्मिक आत्माये करती है, पशुओं को चारा भी डालती है, गौशाला में दान भी करते है, भंडारे भी करते है, गरीबो को चप्पल जूते व कम्बल आदि वस्त्र भी बांटते है,लेकिन गीता जी अध्याय न. 15 श्लोक न. 1 से 4 के अनुसार, तत्त्वदर्शी संत को अपना गुरु धारण किये बिना किया गया उनका करोड़ो अरबो का दान धर्म भी व्यर्थ जाता है

परमात्मा का विधान है कि

गुरु बिन दान पुण्य जो करही मिथ्या होय कभू ना फलही

अतः पूज्य गुरुवर, सतगुरु रामपाल जी भगवान की शरण प्राप्त हो जाने के बाद, यदि उनकी मर्यादा व निर्देशन में जैसा उन्होंने बताया उस तरीके से दान किया जायेगा, तो ही साधक को उसका पूर्ण लाभ प्राप्त होगा, अन्यथा नही

भिखारी या गरीबो को भोजन करवाना किसी भी भगत ने पुण्य प्राप्ति के लिए या वैसे भी घर से बाहर जाकर भिखारी आदि को भोजन नही करवाना है

भिखारी यदि भूखा है और आपके घर पर आ जाता है, तो गुरु

आदेश अनुसार ऐसी स्थिति में उसे भोजन अवश्य करवाये

☞ भिखारी को भोजन बनाने के लिए आटा, दाल, चावल ,चीनी, आदि कोई भी सूखा सामान ना दे, नाही डिब्बा बंद कोई सामान दे, ताकि भिखारी उन्हें बेचकर पैसे का दुरुपयोग ना कर सके

☞ यदि उसके पास पहनने को कपड़े नही है तो आपजी अपने घर के पुराने सिले सिलाये कपड़े, उसे पहनने को दे सकते है, लेकिन बिना सिला हुआ कपड़ा बिल्कुल भी ना दे, अन्यथा उस कपड़े को वह शराब, मास , या नशा करने के लिए बेच भी सकता है, जिससे दान करने वाला भी पाप का भागी बनाता है

☞ घर से भंडारा बनवाकर, बाहर जाकर जबरन किसी को नही खिलाना है, यह मनमाना आचरण हो जायेगा, और मर्यादा टूटेगी

☞ किसी असहाय या भिखारी को बीमारी या चोट के कारण मेडिकल सुविधा की जरूरत है, तो आपजी उन्हें पैसे ना दे, किसी मेडिकल से दवा दिलवा सकते है, दवा दिलवाने के बाद उस दवा का ढक्कन तोड़कर उसकी सील अवश्य तोड़ दे, अन्यथा कई बार लोग उन दवाओं को आधी कीमत पर वापस उसी मेडीकल वाले को बेचकर, शराब आदि पी जाते है, अतः सावधानी बरतें और राजा जनक की तरह, बिना सोचे समझे दयाभाव मे बहकर गलती करने से भी बचना है, हमे ज्ञान हो जाना चाहिए कि यहाँ प्रत्येक प्राणी अपने अपने कर्म का दंड भोग रहा है, आज उस कर्मदण्ड की मार से दुःखी व्यक्ति को भी, कभी ना कभी यह कबीर परमात्मा इसी तरह गुरु रूप में आकर मिले थे, लेकिन उस समय इन्होंने भगवान का मजाक बनाकर, भक्ति स्वीकार नही की होगी जिसका

परिणाम आज भोग रहे है

☞ गाय या अन्य पशु को चारा डालना यदि कोई पशु आपके दरवाजे पर आ जाता है तो आप उसे रोटी दे सकते है, चारा है तो खिला सकते है, लेकिन घर से रोटी बनवाकर बाहर जाकर नही खिलाना है नाही किसी परंपरा के तहत खाना बनाते समय पहली या अंतिम रोटी किसी पशु के लिए रखनी है

☞ यदि घर पर कभी खाना ज्यादा बन जाये, तो आप बाहर जाकर किसी भिखारी या पशु को खिला सकते है, लेकिन दान पुण्य के चक्कर मे जानबूझकर ज्यादा खाना बनाकर, बाहर किसी पशु या भिखारी को खिलाना नियमो के विरुद्ध है

☞ आजकल कुछ संस्थाये, पशुओं के लिए घर घर जाकर रोटी, पैसा या आटा मांगती है, उन्हें चाहे तो एक आध रोटी अवश्य दे सकते है, लेकिन आटा या पैसा बिल्कुल भी नही देना है (ध्यान रहे पुण्य प्राप्ति के मकशद से बिल्कुल भी ना दे)

☞ चींटी को आटा व पक्षियों को दाना डालना गुरुदेव भगवान कहते है, पौ पाटी पगड़ा भया जागी जीया जून – सब काहू को देत हैं, वो चौंच समाना चून वह दयालु परमात्मा सृष्टि में विधमान समस्त प्राणियों सहित, चींटी को कणभर और हाथी को मणभर खिलाता है, अतः हम किसी भी जीव आत्मा का पेट भरने के लिए ठेकेदार ना बने

☞ गौशाला में जाकर दान नही करना है चाहे वह रजिस्टर्ड हो या ना हो, भक्ति की शुरुआत में ज्ञान से कमजोर आत्माओं के लिएए रजिस्टर्ड गौशाला में दान करने के लिए गुरुदेव भगवान ने

☞ हल्की सी छूट दी थी लेकिन अब ज्ञान हो जाने पर, की गौशालाओं में पशुओं के नाम पर इंसान अपना पेट भी भर ते है और उस पैसे से नशा आदि कुकर्म भी करते है

☞ कुत्ते को रोटी डालना घर आये कुत्ते को रोटी खिला सकते है, लेकिन बाहर जाकर नही खिलाना है, किसी दिन खाना ज्यादा बन जाये, तो किसी भी पशु पक्षी को डाल सकते है

☞ किसी कारणवश आटा या अनाज खराब हो जाये, तो वह आटा या अनाज, चींटी या किसी भी पशु पक्षी को डाल सकते है

☞ इस प्रकार ज्ञान आधार से हमे छोटी छोटी बातों को लेकर भी गलती करके, काल को मौका नही देंगे

मैं उपदेशी भगत हूँ मेरी मेडिकल की दुकान है, भक्तिमार्ग के हिसाब से मुझे क्या क्या सावधानी रखनी चाहिए

गुरुदेव भगवान के ज्ञान आधार से मेडिकल की दुकान करना या वहाँ काम करना गलत कार्य नही है, आप उन दवाओं या इंजेक्शन को ना रखे व नाही बेचे, जिन्हें लोग नशे के रूप में प्रयोग करते है

यदि किसी उपदेशी माता बहन का घर में विरोध है और उसी कमरे में अन्य देवी देवताओं का दरबार भी लगा हुआ है, तो क्या माता बहने उसी कमरे में गुरुदेव का दरबार भी लगा सकती है

गुरुदेव भगवान कहते है
कबीरा तेरी झोपड़ी गल कटियन के पास जो करेगा सो भरेगा तू क्यो भया उदास, गुरुदेव के ज्ञान अनुसार किसी भी उपदेशी भाई बहन ने किसी भी बात को लेकर अपने अनुपदेशी परिवार वालो से झगड़ा या उनके बराबर नही होना है, लेकिन जायज बात को कहना अवश्य चाहिए चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा

घर मे आप अकेले उपदेशी है, और आपको अलग से एक कमरा मिला हुआ है, तो आप उसी कमरे में थोड़ी सी जगह देखकर गुरुदेव की फोटो रखकर दरबार लगा ले (बड़ी फोटो की जरूरत नही है, बस दर्शन होते रहे) जिस कमरे में आपने दरबार लगाया है, उस कमरे में किसी अन्य देवी देवता, साधु संत महात्मा, या क्रिकेटर, फिल्मी व्यक्ति या परिवार के किसी दिवंगत व्यक्ति का फोटो दीवारों पर टांगकर नही रखना है

और नाही दरबार में गुरुदेव भगवान के अलावा किसी अन्य की फोटो होनी चाहिए, दरबार में पूजा व आरती के अलावा अन्य फालतू का सामान नही रखना है, दरबार में साफ सफाई व शुध्दता का ध्यान रखना है

यदि परिवार में आपको अलग से कमरा नही मिला हुआ है, घर मे आन उपासना भी होती है, और हर जगह देवी देवताओं की फोटो लगी है, तो एक जगह कही भी गुरुदेव की फोटो रखकर दीपक जला सकती है, ऐसी स्थिति में आपको दोष नही लगता है

यदि परिवार में ज्यादा ही विरोध है, और दरबार भी नही लगाने दे रहे है, तो भी उपदेशी भगत ने शांति रखनी होगी, और दरबार

अपने दिल मे लगाकर रखे, वहां से कोई नही हटा पायेगा (अर्थात गुरुदेव को शब्द रूप में सदा अपने पास, दिल के समीप रखे) तथा सुमरण व आरती करते रहे

यदि आप शांति रखेंगे, भक्ति पर संघर्ष के साथ दृढ़ रहेंगे, तो कुछ दिन परेशानी जरुर रहेगी लेकिन अंत मे उन काल उपासकों को आपकी भक्ति व दृढ़ता के आगे नत मस्तक होना ही पड़ेगा, यदि आपने ही हिम्मत हारकर या जल्दबाजी में कोई निर्णय लेकर पैर पीछे हटा लिए, तो गुरुदेव भगवान भी कोई सहारा नही दे पाएंगे

उपदेशी भगत, घर मे कुत्ते बिल्ली पक्षी या अन्य जानवर पाल सकता है या नही

गुरुदेव भगवान का तत्त्वज्ञान कहता है, यदि आप किसान है खेतीबाड़ी का काम है, तो निम्न पशु (गाय भैंस बैल बकरी या अन्य दुधारू या खेत मे हल जोतने या गाड़ी हांकने वाले पशु जो उपयोगी व सहायक है) उन्हें पालना उचित है वो भी सीमित संख्या में

यदि आप उपदेशी है लेकिन आपके पास खेतीबाड़ी के लिए जमीन नही है, और आपने अपने व्यवसाय (धंधे) के लिए ही काफी संख्या में गाय या भैंस पाल रखी है, तो ज्ञान आधार से उस भगत के लिए यह व्यवसाय उचित नही है (बाकी उस भगत की अपनी सोच व समझ पर निर्भर करता है)

एक समय गुरुदेव भगवान ने बताया कि, आदरणीय नानक जी अपने शिष्यों के साथ एक गाँव मे अपनी बूढ़ी शिष्या के पास गए, बुढ़िया ने एक गाय पाल रखी थी, नानक जी की खूब सेवा की लेकिन भक्ति से ज्यादा अपनी गाय की चर्चा कर रही थी, दूसरे

दिन आगे जाते समय नानक जी ने बुढ़िया से कहा कि बुढ़िया राम करे तेरी गाय मरियो बुढ़िया यह सुनकर हैरान थी, सोचने लगी एक तो मैने कितनी बढ़िया सेवा की है गुरुदेव की, और उपर से मुझे गाय के मरने का श्राप भी दे दिया, कुछ नाराज भी हुई

महीने दो महीने बाद आदरणीय नानाजी जी फिर उसी गाँव मे बुढ़िया के पास गए और बुढ़िया से पूछा कि बताओ बुढ़िया भक्ति कैसी चल रही है बुढ़िया नानक जी के चरणों मे गिरकर कहने लगी, गुरुजी अच्छा हुआ जो आपने मुझे गाय के मरने का श्राप दे दिया था, वर्ना गाय से पहले मेरी मौत तय थी, मैं सारा दिन पाव दूध के चक्कर मे उस गाय की ही सेवा पानी मे लगी रहती थी, ना समय पर आरती हो रही थी नाही मंत्र और सत्संग, अब समय पर आरती भी करती हूँ सत्संग भी सुनती हूँ और आराम भी मिल जाता है, तब नानक जी ने कहाँ की बुढ़िया वो श्राप नही आशिर्वाद था,

नही तो उस गाय के चक्कर मे तेरी भक्ति नही बन पाती, अतः ज्ञान आधार से भगत की आवश्यकता सीमित होती है और होनी भी चाहिए, धंधा चाहे पशुपालन का हो या कोई अन्य, गुरुदेव ने बताया कि उसे सीमित करके भक्ति ज्यादा से ज्यादा करने में ही भगत की भलाई है ! वर्ना सारा दिन इस धंधे में ही बैल की तरह लगे रहोगे, तो भक्ति उतनी बन नही पायेगी और अंत मे काल के जाल में ही फसकर रह जायेगा

अतः उपदेशी भगत भाई बहनों ने इस विषय पर विशेष विचार करना होगा

क्या एक उपदेशी भगत, मुर्गी पालन या
सुअर पालन का काम कर सकता है

गुरुदेव भगवान के भक्ति विधान अनुसार मुर्गी पालन व सुअर पालन का कार्य बिल्कुल भी नही करना है और नाही एक भगत ऐसी जगहों पर कार्य (मजदूरी) कर सकता है, यह सीधा सीधा जीव हत्या के दोष में आता है, क्योंकि मुर्गी व सुअर पालन आज के समय मे मांस का व्यवसाय है, जो भगत या जगत किसी के लिए भी उचित नही है

क्या उपदेशी भगत, घर पर कुत्ता बिल्ली या अन्य पक्षी रख सकता है

गुरुदेव भगवान का ज्ञान आधार कहता है कि, उपदेशी भगत ने ज्यादा से ज्यादा ध्यान अपनी भक्ति पर देना चाहिए, कुत्ते व बिल्ली की सेवा में नही, सेवा के लिए परमात्मा ने परिवार दिया है और परिवार नही है तो गुरु की सेवा करे, अतः घर पर कुत्ता, बिल्ली व खरगोश आदि पालन उचित नही है

उपदेश लेने से पहले मैंने कुत्ता पाल रखा था, अब उसका क्या करे

यदि उपदेश लेने से पहले आपने कुत्ता बिल्ली या अन्य जानवर पाल रखा है, तो उसके शरीर त्यागने के बाद कोई अन्य जानवर नही पालना है, गुरुदेव भगवान का ज्ञान आधार कहता है कि शौक के लिए कुत्ते बिल्ली या अन्य पक्षी पालना, भक्तिमार्ग में आपको विचलित करने के लिए काल निरंजन की साजिश का एक हिस्सा है

आपका काफी कीमती समय उस जानवर की सेवा व खिलाने पिलाने में व्यर्थ होगा, जो समय आपने सत्संग, सुमरण व आरती में लगाना था

बीमार हो जाने पर व्यर्थ में आपका समय और पैसा दोनों व्यर्थ होगा

उनके मर जाने पर कुछ दिन आपकी आत्मा दु:खी रहेगी (यही काल निरंजन का सबसे बड़ा दांव है) यहाँ से काल हमे आत्मिक रूप से कमजोर करने की साजिश रचता है, यदि आज एक पशु (कुत्ता बिल्ली) के मरने पर, जिसने आपको नाही दूध दिया और नाही खाद दिया, सिर्फ समय और धन ही बर्बाद किया, यदि उसके मरने पर आत्मा दु:खी होती है, तो कल जब बच्चे आपके शरीर छोडेंगे, या परिवार का अन्य व्यक्ति शरीर छोड़ेगा तो क्या हाल होगा

दो चार दिन के लिए पूरा परिवार किसी रिश्तेदारी या गुरुदेव के पास सत्संग में जायेगा, और कुत्ता अकेला घर पर रहेगा, तो आपको सत्संग में भी बार बार कुत्ता ही याद आयेगा अर्थात बेवजह कुत्ता बिल्ली पालना, उपदेशी भगत के लिए बिल्कुल भी उचित नही है

आप कहे कि, कुत्ता घर की रखवाली करता है, गुरुदेव भगवान ने बताया यदि भगत मर्यादा में रहकर भक्ति करता है, तो उस घर का चौकीदार स्वयँ परमात्मा होता है, और यदि भगत मर्यादा में नही है तो 50 कुत्ते मिलकर भी जब वह हानि होनी लिखी होगी, तो भी सुरक्षा नही कर पाएंगे

वैसे भी कुत्ते व बिल्ली के शरीर पर नुकसान दायक जीवाणु अधिक होते है, जो बीमारी का भी कारण बनते है जितना पैसा व्यर्थ में दो चार वर्ष तक आप उस जानवर की देखभाल व खान

पान में लगाएंगे, यदि उतना पैसा सतगुरु को दान धर्म मे दिया जायेगा तो ज्यादा लाभ होगा

मैं गाँव मे रहता हूँ और खेत मे अकेले का मकान है,
रात्रि में आवारा पशु खेती में नुकसान करते है,
क्या कुत्ता पाल सकता हूँ

ऐसी स्थिति में आपने अपनी तरफ से कुत्ता नही पालना है, नाही कही से खरीदकर लाना है, यदि आसपास गाँव का कोई कुत्ता आकर रहने लगता है तो उसे रोटी पानी डालते रहे, लेकिन पालतू कुत्ते की तरह विशेष प्यार, घर मे अंदर रखना, विशेष भोजन खिलाना आदि से बचना है

संध्या आरती में, गुरुदेव के अंग मे (तेरा रामपाल अज्ञान किया सतलोक का वासी) बोल सकते है या नही

गुरुदेव भगवान ने एक पुस्तक (यथार्थ भक्तिबोध का सरलार्थ) में तीनों समय की आरती सरलार्थ किया है, लेकिन संध्या आरती का सरलार्थ करते हुए अंत मे (मेरे गुरुदेव भगवान वाले) शब्द का सरलार्थ ना करते हुए यह कहकर छोड़ दिया कि, यह भजन तो वैसे ही अपने आप मे सरल है, इसके सरलार्थ की विशेष जरूरत नही है, जबकि ज्ञान आधार से विचार करे तो यह भजन पूरी आरती में सबसे ज्यादा कठिन है, लेकिन गुरुदेव भगवान ने फिर भी जानबूझकर इस भजन का सरलार्थ नही किया क्योंकि वे हम भक्तो के बुध्दि विवेक की परीक्षा लेना चाह रहे थे, की हमने गुरुदेव को कितना और क्या समझा है !!

दूसरी वाणी है

स्वामी रामदेवानंद दाता, आपकी घणी सतावै वो बाता
तेरा रामपाल अज्ञान, किया सतलोक का वासी

अर्थात, पूज्य गुरुदेव (सतगुरु रामपाल जी भगवान) ने गुरु शिष्य की भूमिका में, एक सुयोग्य मुँहबोले शिष्य की भूमिका निभाते हुए बताया है कि, स्वामी रामदेवानंद दाता – आपकी घणी सतावै वो बता अर्थात हे गुरुदेव आपके सतलोक जाने के बाद आपके दास को आपकी बहुत याद आती है, तेरा रामपाल अज्ञान किया सतलोक का वासी और आपने यह अनमोल ज्ञान देकर अपने अज्ञानी शिष्य रामपाल दास को सतलोक का अधिकार बना दिया है, (यहां अपने नाम के आगे एक भगत की भूमिका निभाते हुए अज्ञानी शब्द का प्रयोग गुरुदेव ने जानबूझकर किया है) ताकि हम भक्तो को यह शिक्षा मिले, की गुरु के आगे शिष्य की क्या औकात होती, गुरु को भगवान समझकर शिष्य ने किस तरह आधीन और श्रद्धा भाव से दास बनकर रहना चाहिए, इसलिए जगतगुरु व महाज्ञानी होते हुए भी, पूज्य गुरुदेव जी ने अपने आपको गुरु के आगे अज्ञानी ही सिध्द किया है

अतः साध संगति से जुड़े हम सभी सत सेवक भाई बहन इस वाणी की जगह, अपने गुरुदेव के आगे प्रार्थना करते हुए कुछ इस तरह बोलते है

परमेश्वर सतगुरु रामपाल जी दाता, आपकी घणी अमोलख बाता
थारा पवन दास अज्ञान, किज्यो सतलोक का वासी (आरती के समय आप सभी भाई बहन अपना अपना नाम प्रयोग करे) अर्थात पूज्य गुरुदेव जी से प्रार्थना करते हुए हम भगत भाई बहन कहते है कि... हे पूर्ण परमेश्वर सतगुरु रामपाल जी दाता, आपने जो

तत्त्वज्ञान उपदेश दिया है यह बहुत ही अमोलख है, अर्थात इसके समान और बराबर अन्य और कोई ज्ञान नही है, और मैं तो एक तुच्छ अज्ञानी दास हूँ आपका, आप भक्ति करवाकर मुझे भी सतलोक भेजने की कृपा करें

Note & पूज्य गुरुदेव जी द्वारा, अपने मुँहबोले गुरुदेव आदरणीय रामदेवानंद जी के लिए लिखी गई उपरोक्त वाणियो को, आप भक्तो ने वैसे ही बोलनी है, या गुरुदेव भगवान ने सत् सेवको को सद्बुद्धि देकर जो बदलाव करवाया है, उस तरह से बोलना है यह आपकी अपनी सोच समझ व बुध्दि पर निर्भर करता है, इस पुस्तक के लेखक की तरफ से किसी भी तरह का दबाव या आदेश ना समझे



उपदेशी भगत लॉटरी खरीदने व बेचने का कार्य कर सकता है या नही

गुरुदेव भगवान के भक्तिमार्ग में लॉटरी खरीदना व बेचना दोनों ही मना है, लॉटरी का खरीदना एक तरह से जुआ खेलने के बराबर है, और यह धंधा करना हराम की कमाई खाने के समान है

भक्तिमार्ग में भक्तो का बड़े बड़े व स्टाइलिस बाल रखना व कटवाना सही है या गलत

गुरुदेव भगवान कहते है

साधु सोही जो सीधा चाले अर्थात भक्ति चाहने वाली आत्मा ने संस्कार की बकवादों को देखकर नही चलना चाहिए, भक्ति से अनजान व्यक्ति क्या खाते है, क्या पहनते है, कैसे रहते है इन सब बातों पर ध्यान देकर उन्हें विश्वास नही करना चाहिए

गुरुदेव ने बताया कि, भक्तो को साधारण कटिंग करवानी है, चेहरे पर बड़ी बड़ी दाढ़ी नही रखनी है, नाही स्टाइलिस कटिंग व स्टाइलिश दाढ़ी रखवानी है

सिक्ख समाज से यदि कोई व्यक्ति, संत रामपाल जी भगवान के यथार्थ 13 वे कबीर पंथ में आकर दीक्षा लेता है, तो चेहरे पर लंबी दाढ़ी और सिर पर पगड़ी रख सकता है या नही ?

वर्ष 1994 में जब पूज्य गुरुदेव जी ने यथार्थ भक्तिमार्ग की शुरुआत की थी, उस वक्त सिक्ख समाज हो या अन्य समाज, उस समाज मे पेड़ की जड़ की तरह गहराई में जाकर मान बड़ाई व अहंकार का प्रतीक बन चुकी कुछ प्रथाओं को एकदम से छुड़वा पाना थोड़ा मुश्किल था, इसके लिए गुरुदेव ने समय का इंतजार करना उचित समझा कि, पहले इन आत्माओ को ज्ञान समझाया जाये, ताकि आगे चलकर ये स्वयं ही इन प्रथाओं से पीछे हटना शुरू कर देंगे

अतः ज्ञान आधार से देखा जाये तो आज वह समय आ चुका है, और सिक्ख समाज से काफी संख्या में संत रामपाल जी महाराज जी की शरण ग्रहण कर चुके व्यक्तियों ने अपनी ढाड़ी व केस करवाकर एक सभ्य भगत होने का परिचय भी दिया है

ज्ञान आधार से उन आत्माओ को पता चल गया है कि,
सरदार की परिभाषा क्या होती है

अंग्रेजी भाषा मे सरदार का अर्थ होता है कैप्टन अर्थात एक बड़े समुह का अगुवा, दूसरे शब्दों में सरदार का अर्थ होता है एक संगठन का मुखिया

अतः ज्ञान आधार से आज दुनिया का एकमात्र असली सरदार मुखिया व अगुवा सिर्फ संत रामपाल जी भगवान है, अर्थात जिस सरदार शब्द की उपाधि के असली अधिकारी गुरुदेव है तो भला शिष्य कैसे अपने सिर पर केस, पगड़ी और चेहरे पर दाढ़ी रखकर सरदार कहलवा सकता है

ऐतिहासिक दृष्टि से भी देखा जाये, तो वर्तमान समय मे सिक्ख

समाज से संबंधित संत रामपाल जी महाराज जी के अनुयायी द्वारा सिर पर पगड़ी व दाड़ी रखने का कोई औचित्य नही है, क्योंकि 10 वे गुरु श्री गोविंद सिंह जी ने जो सिक्ख सेना, मुगलों से लड़ने के लिए तैयार की थी उनके लिए पांच चीजे रखना अनिवार्य की थी

- केश
- कड़ा
- कृपाण
- कंघा
- कच्छा

लेकिन आज नाही तो संत रामपाल जी महाराज जी के किसी भगत ने मुगल सेना से लड़ाई झगड़ा करना है

और नाही संत रामपाल जी महाराज जी से दीक्षा लेने के बाद, श्री गोविंद सिंह जी उनके गुरु रहे, अतः दोनों ही स्थिति में ज्ञान आधारी भगत ने, वर्तमान में एक धर्म विशेष की पहचान बन चुकी इस परम्परागत प्रथा को खत्म कर देना चाहिए

क्या संत रामपाल जी महाराज जी से उपदेश प्राप्त करने के बाद देश विदेश में उनका कोई भी अनुयायी पगड़ी नही बांध सकता है ?

गुरुदेव भगवान से उपदेश लेने के बाद सिर पर पगड़ी या साफा बांध सकते है लेकिन किसी परम्परा या समाज विशेष की पहचान को दर्शाने के लिए है

यदि आप किसी ऐसे क्षेत्र या देश मे निवास लड़ते है, जहाँ शीत लहर चलती है, या अधीक गर्मी है तो अपने सिर पर साफा, तौलिया, टोपा या कोई भी कपड़ा पहन सकते है

गुरुदेव भगवान का नारा है कि
जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नही कोई न्यारा

अतः वर्तमान में सिक्ख समाज से संबंधित कोई बिरला ही भगत होंगे, जो संत रामपाल जी महाराज जी से उपदेश लेने के बाद, सिक्ख समाज मे मान बड़ाई व धर्म विशेष की पहचान बन चुकी इस पगड़ी को ना पहनकर तथा छोटे छोटे बाल रखवाकर, एक सामान्य भगत की तरह बनकर भक्ति करेंगे

मैं उपदेशी भगत हूँ और गाँव मे रहता हूँ, मेरे गाँव के काफी लोग खेतो में पानी देते समय व घरों में काम लेने के लिए बिजली की चोरी करते है, क्या भक्तिमार्ग में ऐसा करना उचित है?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि ..

चौरासी की चाल क्या मौ सेती सुन ले
चारी जारी करते है जाके मुहंडे खेह

अर्थात भक्तिमार्ग में चोरी चाहे एक कण अनाज (अनाज का एक दाने) की हो या एक मण (40 किलो) सोने की, दोनों ही महापाप है, उपदेशी भगत ने गांव समाज को देखकर नही बल्कि गुरुदेव के वचन आधार से अपना आध्यात्मिक व सामाजिक जीवन जीना चाहिए

चोरी चाहे बिजली की हो या मिट्टी की, भगत के लिए वर्जित है, भगत ने ऐसे शुभकर्मो को बढ़ावा देना चाहिए, जिसे देखकर अन्य व्यक्ति भी गुरुदेव की भक्ति से जुड़ने के लिए प्रेरित हो

मंदिर के पास मेरी किराने की दुकान है, मंदिर में आने जाने वाले श्रद्धालु मेरी दुकान से प्रसाद, अगरबत्ती, कपूर व धूपबत्ती आदि खरीदकर ले जाते है - क्या इससे मुझे दोष लगेगा ?

गुरुदेव भगवान ने बताया की, किसी भी मंदिर या मस्जिद के पास, भगत की दुकान या मकान होना गलत नही है, लेकिन ध्यान रखे आपने स्पेशल वह प्रसाद अपनी दुकान पर नही रखना है, जो प्रसाद उस मंदिर में चढ़ाया जाता है , नाही अगरबत्ती या धूपबत्ती रखना है , अर्थात आन उपासना में काम आने वाली पूजा पाठ की सामग्री आपने अपनी दुकान पर नही रखनी है

यदि पूजा पाठ का सामान ? मैं ना बेचकर, अपने स्टाफ के बिकवाता हूँ तो क्या इसमें भी दोष है ?

गुरुदेव भगवान कहते है कि गलत काम करना और उसमें सहयोग देना, दोनों महापाप के भागी है , भले ही पूजा पाठ का सामना आप अपने हाथ से नही बेच रहे है, लेकिन दुकान तो आपकी ही है जहाँ से सामान बिक रहा है बाजार से पूजा पाठ का सामान भी आप ही लेकर आते दुकान में और स्टाफ भी आपका ही है, और आपकी ही आज्ञा से सामान बेच रहा है, अतः हर प्रकार से उस कर्म में आपका सहयोग माना जायेगा, गुरुदेव पर विश्वास रखिये, जो फायदा आपको मर्यादा तोड़कर उस पूजा पाठ के सामान को बेचकर आता हुआ दिखाई दे रहा है, यदि गुरु वचन में रहकर अपना धंधा करेंगे, तो समर्थ परमात्मा ना जाने किस प्रोडक्ट में और कहा से आपको लाभ दे देगा, आपको पता भी नही चलेगा

दुकान मेरे लड़के की है, लेकिन मजबूरीवश कभी कभार या दिन में कुछ समय लड़के की गैर हाजरी में मुझे दुकान का सामान बेचना पड़ता है, ऐसे में क्या सावधानी रखें ?

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार आप दुकान पर बैठ भी सकते है और सामान भी बेच सकते है लेकिन....

यदि दुकान में किसी भी प्रकार के नशे का सामान बेचा जाता है **(बीड़ी सिगरेट गुटखा जर्दा आदि)** तो आपने वह सामान बिल्कुल भी नही बेचना है

ग्राहक को यह कहकर भी नही बेचना है, की मैं इन वस्तुओं को हाथ से नही छूता हूँ आप स्वयं ही उठाकर कर ले लीजिए, ऐसा कहने से भी आपका सहयोग हो जाता है और मर्यादा खंडित होती है

मैं उपदेशी हूँ और मजबूरीवश अपने पति या बेटों की गलत कमाई से अपना पेट भरना पड़ता है, जैसे

☞ पति मंदिर में पुजारी हो
☞ पति शराब का व्यापारी हो
☞ बेटा ब्याज का काम करता है
☞ पति नशीली वस्तुओं का व्यापार करता हो

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार ऐसी स्थिति में उपदेशी भगत या भगतमती के सामने दो रास्ते है

☞ यदि आप स्वयं का कोई काम या नौकरी करने में सक्षम है तो उस पाप की कमाई को बिल्कुल भी काम मे ना ले **(खाने पीने पहनने आदि कार्यों में प्रयोग ना करे)**

☞ यदि आप सक्षम नही है और उस पाप की कमाई से अपना भरण पोषण करना मजबूरी है, तो गुरुदेव से क्षमा याचना करके जितना आवश्यक हो उतना ही प्रयोग करे

मेरा पति 2 नंबर के धंधे से पैसा कमाता है, क्या उस पैसे को मैं घर पर रख सकती हूँ ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, चोरी, जारी, नशे या अन्य गलत कार्यों से कमाया गया पैसा जिस भगत के घर मे आता है, तो उस परिवार को जहर खाने की आवश्यकता नही है वो पैसा स्वयं जहर है, अतः ऐसी स्थिति में माता बहनों ने उस पाप के पैसों को पति से लेकर अपने घर में नही रखना है, पति स्वयं जाने उस पैसे को कहा रखना है, यदि आप असमर्थ है और उस कमाई से घर चलाना आपकी मजबूरी है, तो घर की

आवश्यकता के लिए जितना आवश्यक है उतना ही पैसा रखे, उस पैसे से अपने शौक पूरे नही करने है, **तथा पति को भी समझाती रहे और गुरुदेव भगवान से भी बार बार प्रार्थना करती रहे, की हे परमात्मा इस मंदबुद्धि इंसान को भी सद्बुद्धि प्रदान करे**

मंदिर के पास मेरी कपड़े की दुकान है, लोग दुर्गा माता जी के लिए कपड़ा लेकर जाते है - मुझे क्या करना चाहिए ?

गुरुदेव भगवान के ज्ञान आधार से मंदिर के पास कपड़े की दुकान या मकान होना गलत नही है , लेकिन आप एक उपदेशी भगत है यदि आपसे कोई व्यक्ति माता के नाम पर कपड़ा मांगता है तो आपजी दे सकते है क्योंकि कपड़ा आपका व्यापार है , लेकिन ध्यान रखने वाली बात यह है - आपने अपनी दुकान पर स्पेशल वह कपड़ा या चूनड़ी आदि सामान नही रखना है, जो स्पेशल उस माता जी को भेंट की जाती है या अन्य आन उपासना में काम लिया जाता है,

घर मे किसी बुजुर्ग या बीमार व्यक्ति के सिर या हाथ पैर में दर्द होने पर मालिश कर सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, घर मे किसी बड़े बुजुर्ग या बीमार व्यक्ति के हाथ पैर दबाने या मालिश करने से मर्यादा खंड नही होती है

मर्यादा खंड उस समय होती है जब हम आशिर्वाद या पुण्य प्राप्ति के लिए किसी के हाथ पैर दबाते है या मालिश करते है

17 फरवरी के दिन, संत रामपाल जी भगवान का 'बोध दिवस' मनाना चाहिए या नही ?

सतगुरु रामपाल जी भगवान द्वारा 28 वर्षों से किए गए सत्संगों का सार कहता है कि, वे स्वयँ पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब है, 8 सितंबर 1951 में गाँव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा में प्रकट होकर, फिर 17 फरवरी 1988 के दिन आदरणीय श्री रामदेवानंद जी को मुँह बोला गुरु धारण करके वही लीला कर रहे है, जो लीला लगभग 624 वर्ष पहले काशी के लहर तारा तालाब में कमल के फूल पर शिशु रूप में प्रकट होकर, फिर 5 वर्ष की आयु में पंडित रामानंद जी को मुँह बोला गुरु धारण करके 120 वर्ष तक की थी

जयगुरुदेव पंथ के संचालक श्री तुलसी दास जी ने 8 सितंबर 1971 के दिन अपनी भविष्यवाणी में स्पष्ट प्रमाणित कर दिया था, की वह महापुरुष जो आज पूरे 20 वर्ष का हो चुका है, दुनिया जिसके कदमो में होंगी, जो अपने आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा कलयुग में सतयुग लायेगा, जिसकी एक भाषा और एक झंडा होगा, मानव इतिहास में वह पहला महापुरुष होगा जिसे पूरी दुनिया का समर्थन प्राप्त होगा - यदि अभी उसका पता बता दूँ तो दुनिया पीछे पड़ जाएगी - लेकिन अभी उपर से बताने का आदेश नही हो रहा है - समय आने पर सबको सबकुछ पता चल जायेगा - महापुरुषों ने समय का इंतजार किया है - मैं भी इंतजार करूंगा

बोध का अर्थ होता है - ज्ञान
और दिवस का अर्थ है - दिन

अर्थात सतगुरु रामपाल जी भगवान के तत्त्वज्ञान से अपरिचित उनके कलयुगी परिवार व काफी संख्या में संगत का मानना है कि, संत रामपाल जी को 17 फरवरी 1988 के दिन एक कबीर पंथी आदरणीय रामदेवानंद जी से नामदान प्राप्त हुआ, और उसके बाद से संत रामपाल जी महाराज को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ था - अर्थात बोध हुआ था, इसलिए वे लोग संत रामपाल जी महाराज का बोध दिवस मनाते है,

दूसरी तरफ, संत रामपाल जी महाराज जी से उपदेश प्राप्त व साथ संगति से जुड़े हुए भाई बहनों को पूर्ण विश्वास है की, जगतगुरु की भूमिका स्वयं कबीर परमात्मा ही कर सकते है, और 21 ब्रह्मांड में कोई भी प्राणी - जगतगुरु का गुरु नही हो सकता है, इस आधार से 17 फरवरी 1988 को गुरु शिष्य परंपरा का निर्वाह करते हुए, संत रामपाल जी महाराज जी मात्र लोक दिखावे में आदरणीय श्री रामदेवानंद जी के मुँह बोले शिष्य बने थे ,

सोचिए - यदि संत रामपाल जी महाराज कोई सामान्य व्यक्ति या संत होते, और उन्हें 17 फरवरी 1988 के दिन ही बोध अर्थात ज्ञान हुआ होता, तो जय गुरुदेव पंथ के संचालक श्री तुलसी दास जी ने 8 सितंबर 1971 के दिन यह क्यो कहा कि, वह महापुरुष आज पूरे 20 वर्ष का हो गया है, यदि अभी से पता बता दूँ तो दुनिया पीछे पड़ जाएगी, अब गहनता से विचार कीजिये, यदि संत रामपाल जी महाराज का 'बोध दिवस' मनाने वाले उनके कालयुगी परिवार के अनुसार, यदि संत जी को ज्ञान (बोध) ही 17 फरवरी 1988 को हुआ है, तो जयगुरुदेव जी के अनुसार, क्या दुनिया 1971 में एक ज्ञानहीन प्राणी के पीछे पड़ सकती थी? बिल्कुल नही?
(अर्थात संत रामपाल जी महाराज स्वयं कबीर परमात्मा है, जिन्हें श्री तुलसी दास जी ने अपनी दिव्य दृष्टि से 1971 में स्पष्ट रूप से देख लिया, लेकिन कुछ अभिमानवश और कुछ ठीक का समय ना होने के चलते, वे स्पष्ट रूप से उनकी पहचान दुनिया के सामने नही रख पाये ,

और भी अनेक वाणी है, जिन्हें आधार बनाकर संत रामपाल जी महाराज जी का ज्ञानी शिष्य, 17 फरवरी को ऐसे जगतगुरु का बोध दिसव मनाकर अपनी मूर्खता का परिचय नही दे सकता ,

ध्यान दीजिए वाणी क्या कह रही है

गुरु बिन वेद पढ़े जो प्राणी
समझे ना सार रहे अज्ञानी

अर्थात बिना गुरु के कोई भी व्यक्ति वेद शास्त्रों को पढ़ेगा तो उनमें लिखे सार को नही समझ पायेगा - यदि यह वाणी सत्य है तो विचार कीजिए, संत रामपाल जी महाराज के गुरु आदरणीय श्री रामदेवानंद जी तो बचपन से ही अनपढ़ थे और नाही उन्होंने कभी संत रामपाल जी या अपने अन्य शिष्यों को वेद शास्त्र पढ़ाये , तो फिर संत रामपाल जी महाराज जी को बिना गुरु के पढ़ाये, वेद शास्त्रों का इतना ज्ञान कहा से आ गया, जो आज वे पूरी दुनिया को शास्त्र पढ़ा रहे है , अर्थात इस गूढ़ रहष्य को कोई बिरला भगत ही समझ पायेगा और गहनता से विचार करेगा कि मुझे 17 फरवरी के दिन, जगतगुरु संत रामपाल जी महाराज का बोध दिवस मनाना चाहिए या नही ?

और अधिक जानकारी के लिए **you tube** पर **search** करे
(Shanka Samadhaan With Pawan Das)
और facebook पर search करे **(Pawan Das is LIVE)**

उपदेशी भगत, किसी की गवाही दे सकता हैं या नही ?

गुरुदेव भगवान कहते है

गरीब - निंदा बिंदा छोड़ दे संतन सो कर प्रीत - भवसागर तिर जात है जीवन मुक्त अतीत,

उपदेशी भगत को व्यर्थ की बातों में व किसी अनुपदेशी के साथ बैठकर निंदा चुगली या फालतू की बातों में अपना कीमती समय बर्बाद नही करना चाहिए

गुरुदेव भगवान कहते है ,

दुनिया सेती दोस्ती पड़ै भजन में भंग - एका एकी राम से या साधु के संग, अर्थात उपदेशी भगत को जगत वाले अनुपदेशी लोगो की ज्यादा संगति नही करनी चाहिए, जगत और भगत की भक्ति मर्यादा, सोच विचार व क्रियाओं में रात दिन का अंतर होता है, अतः ऐसे लोगो की संगति भगत को कभी ना कभी दुविधा में भी डाल सकती है

अड़ोस पड़ोस में रिश्तेदारी में या यार दोस्तो में लड़ाई झगड़ा हो जाये, और भगत को गवाही देने के लिए कोर्ट या पुलिस थाने में जाने के लिए कहा जाये, तो स्पष्ट मना कर देना है, भगत ने किसी भी कीमत पर पक्षपात नही करना है, नाही भगत ने किसी की झूठी गवाही देनी है और नाही गवाही के लिए कोर्ट में जाना है, यदि कोई घर पर आकर जानकारी चाहता है तो भगत ने वही सत्य बताना है जो आपने अपनी आंखों से देखा है , झूठी गवाही देना - गुरुदेव भगवान का दोषी बनना है

गुरुदेव भगवान के विषय मे कोई अपशब्द कहे तो क्या करे ?

प्रतिदिन हम भाई बहन नित्य नियम में कुछ वाणिया पढ़ते है कि **गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या,** तेजपुंज की लोय - तन मन अरपू शीश कूँ, होनी होय सो होय, अर्थात वह कबीर परमात्मा, जो आज हमे सतगुरु रूप में, संत रामपाल जी के रूप में प्राप्त है, उनकी देह (शरीर) तेजपुंज (नूर) का है, मैं तन मन धन से बलिहारी जाऊं उनकी भक्ति और ज्ञान पर

गरीब ऐसा सतगुरु हम मिल्या, शब्द समाना होय - भव सागर में डूबते पार लंगावै सोय, अर्थात जो कबीर परमात्मा, आज हमे सतगुरु रामपाल जी के रूप में प्राप्त है, उनका शब्द स्वरूपी **(हाड़ मास लहू व चाम रहित)** नूरी शरीर है , उन्होंने अपनी सच्ची भक्ति देकर मुझे इस 84

लाख योनि रूपी, भव सागर में डूबने से बचाया है ,

इसके अलावा गुरुदेव भगवान ने अपनी वास्तविक शारीरिक स्थिति के विषय मे बताया कि

हाड़ चाम लहू ना मेरे, कोई जाणै सतनाम उपासी - तारण तरण अभय पद दाता मैं हूँ कबीर अविनाशी, अर्थात गुरुदेव भगवान कह रहे है कि मेरी वास्तविक स्थिति **(नूरी शरीर)** के विषय मे वही आत्मा जान सकती है, जिसको सतनाम मंत्र प्राप्त हो गया है, वह आत्मा मुझे अपने जैसा हाड़ चाम का बना मनुष्य नही बल्कि जगत के तारणहार अविनाशी परमेश्वर के रूप में पहचान लेगी

अतः उपदेशी भगत भाई बहन को जब अपने गुरुदेव भगवान की वास्तविक शारीरिक स्थिति का ज्ञान हो जायेगा, उसके बाद यदि ज्ञान चर्चा करते समय कोई अज्ञानी जीव, गुरुदेव भगवान के विषय मे भला बुरा या गाली गलौच से बात करता है, तो उपदेशी भगत को बुरा नही लगेगा
क्योंकि उपदेशी को पता है मेरे गुरुदेव भगवान का शरीर शब्द स्वरूपी है , और शब्द को कभी गाली नही लगती है और नाही शब्द को मिटाया और खंड किया जा सकता है

गुरुदेव भगवान ने तो, हम भक्तो को भी शिक्षा दी है कि ...
आवत गाली एक है उल्टा होय अनेक - कहै कबीर ना उलटियो रहे एक कि एक, कबीर जो तोकूँ कांटा बोवै, ताको बो तू फूल - तोहे फूल के फूल है उसको है त्रिशूल, अर्थात गुरुदेव भगवान ने तो यहाँ तक कहा है, यदि आप भक्तो को भी कोई अनावश्यक भला बुरा, मारपीट या गाली गलौच करता है, तो भगत ने भी अपने गुरुदेव की शिक्षा पर चलते हुए उन्हें उल्टा जवाब नही देना है, और वहां से दूर हो जाना चाहिए, और नाही उस

अज्ञानी भाई बहन के विषय मे अपने मन मे बदले की कोई भावना रखनी है

अतः उपदेशी भगत ने यदि साधुता के लक्षण धारण कर रखे है, और ज्ञान से भलीभांति परिचित है, तो गाली चाहे कोई आपके गुरुदेव को दे - या आपको दे, उनकी बातों का बुरा लग ही नही सकता है यदि फिर भी बुरा लग रहा है तो जाहिर सी बात है, अभी हम गुरुदेव भगवान के तत्त्वज्ञान को आत्मसात नही कर पा रहे है ,

उपदेशी भगत ने पहले की भांति, अब वर्तमान में अपने गुरुदेव का बड़ा मंदिर या बड़ा दरबार बनवाना चाहिए या नही ?

गुरुदेव भगवान कहते है

मोकू कहा ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास मैं
खोजी होय तुरंत मिल जाऊ एक पल ही कि तालाश मैं

ना मंदिर में ना मस्जिद में ना काशी कैलाश मैं
ना मैं त्रिकुटी भवर गुफा में ना ब्रह्मांड आकाश मैं

सन 1994 से पहले दुनिया मे तत्त्वज्ञान व शास्त्र अनुकूल भक्ति का अकाल पड़ा हुआ था, 1994 से पूर्ण परमेश्वर सतगुरु रामपाल जी भगवान ने जब से यथार्थ 13 वे कबीर पंथ की नींव रखी, उसके बाद लाखो आत्माओ ने पाखंड व दिखावे की भक्ति को त्यागकर, सतभक्ति को अपनाया है

गुरुदेव भगवान कहते है ,

पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजु पहाड़ - ताते चाकी भली जो पीस खाय संसार, गुरुदेव भगवान ने बताया कि अपने घर पर गुरुदेव भगवान

की मूर्ति या तस्वीर बनाकर रखना गलत नही है , लेकिन उस तस्वीर या मूर्ति को ही भगवान समझकर उसपर आश्रित होकर उसे ही पूजना गलत है

तत्त्वज्ञान प्राप्त भगत को अपने घर पर गुरुदेव भगवान का दरबार अवश्य लगाना चाहिए, लेकिन पहले ही भांति अज्ञानता में दिखावा नही करना है, घर में एक जगह कही भी किसी अलमारी या टेबल पर गुरुदेव की फोटो रखकर दरबार लगाये

महंगी लकड़ी, संगमरमर का पत्थर या बड़ी साइज का दरबार नही बनवाना चाहिए, गुरुदेव हमारी मर्यादा और भक्तिभाव से प्रसन्न होते है, बड़ा मंदिर या महंगी फोटो से नही , फोटो का कार्य सिर्फ इतना है कि उसके माध्यम से आपको गुरुदेव का दर्शन होता रहे, याद ताजा बनी रहेगी

दर्शन के लिए भी सिर्फ फोटो ही रखना है, अज्ञानता में सोने चांदी या पत्थर आदि धातु की मूर्ति नही बनवानी है, यदि आप ऐसा करेंगे तो आपकी भी मर्यादा खंडित होगी और अन्य भगत भी आपके दरबार को देखेंगे, तो ज्ञान की कमी के चलते उनको भी मनमाना आचरण करने का मौका मिलेगा, और हम डबल दोषी बन जाएंगे

अतः चाहे आप पैसे वाले है या आपका खुद का फर्नीचर या महंगे पत्थर का काम है , गुरुदेव के दरबार के लिए बड़ा मंदिर या भव्य दरबार वाली प्रथा को पुनः लागू नही करना है, यह मनमाना आचरण होगा ,

उपदेशी ने साधारण जीवन जीते हुए सादगी के साथ रहना और भक्ति करनी है, यदि घर मे पहले से कोई पत्थर या फर्नीचर का पर्सनल

मंदिरनुमा आकृति का दरबार बना हुआ है या खरीदा हुआ है, तो आपजी वहाँ भी गुरुदेव भगवान का दरबार लगा सकते है ,

यदि परिवार का कोई सदस्य भक्ति नही करता है, तो उसपर दबाव देकर भक्ति करवा सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि - सतलोक में जब से इस आत्मा की उत्पत्ति हुई है, तब से आत्मा को परमेश्वर ने किसी भी कर्म के लिए स्वतंत्र रखा हुआ है , और उसी स्वतंत्रता का नाजायज फायदा उठाकर हम काल के जाल में भी फसे

आज भी वही स्थिति है, गुरुदेव भगवान ने 1994 से तत्त्वज्ञान देकर यह आत्मा की अपनी मर्जी (स्वतंत्रता) पर छोड़ दिया कि उसे आत्म कल्याण के लिए सतगुरु की शरण मे आना है या नही

यदि किसी ने ज्ञान समझकर सतगुरु शरण ग्रहण कर ली, तो फिर उस आत्मा को भक्ति देकर स्वतंत्र छोड़ दिया कि वह मर्यादाओ के साथ भक्ति करता है या नही , क्योंकि काल निरंजन ने गुरुदेव भगवान से यह वचन मांग रखा है कि आप नीचे जाकर केवल ज्ञान और भक्ति देना, जो आपका ज्ञान समझकर आपकी भक्ति करे और मर्यादाओ में रहे उसी को पार करना, अन्य आत्माओ के साथ जबरदस्ती ना करना

अतः गुरुदेव भगवान के इस भक्ति विधान अनुसार, हम उपदेशी भाई बहनों ने परिवार के अन्य मेंबर्स के ऊपर जबरन भक्ति करवाने के लिए दबाव नही डालना चाहिए , हमे केवल संदेशा ही देना है जबरदस्ती नही करनी है , अन्यथा परिवार में वाद विवाद और लड़ाई झगड़ा ही बढ़ेगा, और मर्यादा भंग हो जाने से भगत की भक्ति में बाधा उत्पन्न होगी

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, यदि परिवार में आप एक या दो ही व्यक्ति भक्ति कर रहे है और बाकी सब अनुपदेशी है, तो आप उन्हें समझाये अवश्य लेकिन दबाव ना बनाये , आपके लगातार भक्ति करते रहने से धीरे धीरे बाकी मेंबर्स के भी भक्ति संस्कार बनने शुरू हो जाते है, और एक दिन उन्हें भी भक्ति करने की प्रेरणा उठेगी, **(लेकिन इसके लिए हम भक्तो का व्यवहार, आचरण, बोलचाल, बहुत महत्व रखेगा)** क्योंकि अनुपदेशी व्यक्ति को यह भी दिखाई देना चाहिए कि, पहले की तुलना में भक्ति करने से हमारे अंदर क्या और कितना बदलाव आया है

गुरुदेव भगवान ने बताया कि, पड़ोस में हलुवा बन रहा होगा तो महक आप तक भी आती है, और प्रतिदिन महक आने से एक दिन हो सकता है आपकी भी हलुवा बनाने की इच्छा हो जाये , ठीक इसी तरह हमारे भक्ति करते रहने से सूक्ष्म रूप में आरती व मंत्र का असर बाकी मेंबर्स पर भी होता रहता है, और एक दिन उनके अंदर भी भक्ति करने की इच्छा जाग्रत हो उठेगी , लेकिन इस प्रक्रिया में आपके व्यवहार और भक्ति का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहेगा, अतः यदि कोई व्यक्ति इस भक्तिमार्ग को स्वीकार नही करता है तो आपजी बेवजह दबाव बिल्कुल भी ना बनाये

क्या परिवार में एक उपदेशी व्यक्ति के दीपक लगाने से सभी का 'हवन यज्ञ' हो जाता है ?

गुरुदेव भगवान ने बताया जिस तरह परिवार में एक उपदेशी व्यक्ति के भोजन करने से सभी का पेट नही भर सकता, ठीक उसी तरह परिवार में एक उपदेशी व्यक्ति के दीपक जलाने से अन्य सभी का हवन यज्ञ पूर्ण नही होता है

सभी का हवन यज्ञ पूर्ण हो सके उसके लिए क्या करना चाहिए ?
गुरुदेव भगवान ने बताया कि, परिवार के सभी उपदेशी व्यक्ति **(अबोध बच्चो को छोड़कर)** जब दीपक जलाते है, तो एक या दो चमच्च घी, सभी अपने अपने हाथ से रोजाना दीपक में अवश्य डाले, ऐसा करने से प्रतिदिन सभी का हवन यज्ञ पूर्ण हो जाता है

क्या परिवार में एक व्यक्ति के द्वारा दान करने से, सभी का दान माना जायेगा ?
गुरुदेव भगवान ने बताया कि, भले ही परिवार में कमाई करने वाला एक ही व्यक्ति है, लेकिन जब गुरुदेव भगवान को दान करने का समय आता है या घर मे 10 वा अंश निकालकर रखते है, तो बच्चो सहित सभी भक्तो के हाथ मे पैसे देकर ही दान धर्म करवाना चाहिए , ऐसा करने से सभी का धर्म यज्ञ पूर्ण हो जाता है

कुछ भगत शादी समारोह में नही जाते है लेकिन शादी से जुड़े काम करते है ?

☞ जैसे पानी की सप्लाई करना
☞ मेकअप करना
☞ लाइट व फूल डेकोरेशन का काम करना
☞ वीडियो फोटोग्राफी का काम
☞ बग्गी या घोड़ी लेकर जाना
☞ बैंड बाजा बजाना
☞ हलवाई का काम करना

गुरुदेव भगवान ने बताया की मोक्ष मार्ग का ज्ञान और मर्यादाओ के विषय

मे पता लगने के बाद, उपदेशी भगत ने नाही तो कोई गलत काम करना है और नाही उसमे सहयोग देना है

क्योंकि, वर्तमान में समाज को सुधरने में थोड़ा वक्त लग रहा है, अतः शादी समारोह, जन्मदिन, या अन्य जागरण व उसमे सहयोग से संबंधित कुछ कार्य तो बिल्कुल भी नही करने है जैसे

☞ **फोटोग्राफी का कार्य**, उपदेशी भगत की फोटोग्राफी की दुकान हो सकती है, यदि उसकी दुकान पर आकर कोई फोटो खिंचवाते या बनवाते है तो दोष नही है, उपदेशी भगत ने इस कार्य को करने के लिए शादी विवाह या अन्य उत्सवों में नही जाना है

☞ **डेकोरेशन का कार्य** उपदेशी भगत अपनी दुकान पर यह कार्य कर सकता है, लेकिन शादी विवाह या अन्य उत्सवों में जाकर यह कार्य करना, समाज मे पाखंड व समाज मे फिजूलखर्ची को बढ़ावा देना है

☞ **मेकअप व ब्युटी पार्लर का काम,** मेकअप करना ब्यूटी पार्लर और मेकअप करने का कार्य हर प्रकार से अंदर या बाहर, सभी उपदेशी भक्तो के लिए वर्जित (मना) है, यह कार्य भी समाज मे आडम्बर व फिजूलखर्ची को बढ़ावा देने वाला है

☞ **घोड़ी या बग्गी का काम,** घोड़ी या बग्गी का कार्य सामान ढ़ोने के हिसाब से जायज है, लेकिन शादी विवाह में मात्र दूल्हे को बैठाने के लिए यह कार्य करना पूर्णतया वर्जित (मना) है

☞ **पानी सप्लाई व खाद्य सामग्री का काम,** पानी सप्लाई पानी व खाद्‌य सामग्री की सप्लाई का कार्य कुछ हद तक जायज है, फिर भी पानी को छोड़कर, यह कोशिश करे कि खाद्य सामग्री आपकी दुकान से ही लेकर जाये

☞ **टेंट व हलवाई का कार्य,** ज्ञान आधार से देखा जाये तो, जो कार्य एक भगत के लिए वर्जित है उन कार्यों में सहयोग करना भी परमात्मा का दोषी बनना है , यह कार्य यदि आप किसी शास्त्र विरुद्ध जागरण / सत्संग या राजनैतिक पार्टी के उत्सवों में करते है तो आपका सहयोग माना जायेगा

फिर ऐसी स्थिति में ज्ञान आधार से क्या करना उचित होगा ?

ऐसी स्थिति में यदि आप उस धंधे को बंद करके कोई अन्य धंधा करने में सक्षम है तो बहुत अच्छी बात है , अन्यथा उस कार्य को करने में आपकी विशेष रुचि नही होनी चाहिए, किसी दूसरे धंधे की तलाश व शुरू करने का शीघ्र प्रयास करे, और जब तक शुरू नही होता है तब तक आपजी यदि पहले वाला ही कार्य करते है - तो बारंबार गुरुदेव भगवान से प्रार्थना व क्षमा याचना करते रहिए , अन्यथा उन वर्जित कार्यो में आपका सहयोग होता चला जायेगा, क्योंकि इन बिगड़ी हुई सामाजिक व्यवस्थाओं में हमने अपने भगवान पर विश्वास करके पूर्णतया पीछे हटना पड़ेगा, अन्यथा ये परम्पराये और रिवाज गुरुदेव भगवान के ज्ञानमार्ग में दीवार की तरह बाधा बनकर खड़ी ही रहेंगी

घर पर गुरुदेव भगवान को भोग कैसे लगाये, तथा किन किन बातों का ध्यान रखे ?

भक्ति विधान कहता है -

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेशवरः - गुरु साक्षात पारब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः, अर्थात सृष्टि में विधमान सर्व देव शक्तियों के ऊपर, गुरु की सत्ता होने के कारण, गुरु को ही ब्रह्मा विष्णु महेश वाले गुणों से युक्त जाने, अर्थात साधक के जो कार्य यह तीनों देव

भी मिलकर करने में समर्थ नही है, वह कार्य गुरुदेव अकेले ही करने में सक्षम होते है इसलिए कहते है

एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय - माली सींचे मूल को, फलै फुले अघाय, यदि पेड़ के पत्तो व टहनियों में जल व खाद डालेंगे, तो वह पेड़ मुरझा जायेगा, इसके विपरीत यदि उसकी जड़ में पानी व खाद डाला जायेगा, तो स्वतः ही वह पानी और खाद पत्तो व टहनियों समेत पूरे पेड़ को लाभ देगा और फल भी लगेंगे, इसी तरह गुरुदेव ने बताया कि, पूर्ण परमात्मा इस संसार रूपी पेड़ की जड़ है, और देवी देवताओं को टहनियां बताया है, यदि हम केवल पूर्ण परमात्मा की शास्त्र विधि अनुसार, तत्त्वदर्शी संत की शरण मे आकर उनके बताये अनुसार भक्ति साधना करेंगे, तो साधक को सर्व आवश्यक आध्यात्मिक व भौतिक लाभ मिलेंगे

भक्ति विधान कहता है की
गुरु को ही पूर्ण ब्रह्म कर जाने - और भाव कभू ना लावे, अर्थात अपने गुरुदेव के अलावा अन्य किसी भी शक्ति को भगवान के रूप में स्वीकार नही करना है - यदि इसी जन्म में मोक्ष चाहते है तो

गुरु बड़े है गोविंद से मन मे देख विचार - हरि सुमरे सो रह गये, गुरु सुमरे होय पार, प्रत्येक धर्म शास्त्र गुरु को भगवान से बढ़कर बताता है, क्योंकि गुरु बिना ज्ञान नही हो सकता, और ज्ञान देने के लिए स्वयं भगवान ही गुरु बनकर आते है , इसलिए हर स्तर पर गुरु की पूजा को ही सर्व प्रथम महत्व दिया जाता है

सात द्वीप नौ खंड में गुरु से बड़ा ना कोय - भगवान करे ना कर सके, गुरु करे तो होय, अर्थात 21 ब्रह्मांड में गुरु से महान और कोई नही है , जो कार्य (मोक्ष प्रदान) गुरु कर सकता है, वो कार्य भगवान भी नही कर

सकता, अतः भगत के लिए गुरु से बढ़कर अन्य कोई भी भगवान या साधु संत का स्थान नही होना चाहिए

सतगुरु पूर्ण ब्रह्म है, सतगुरु आप अलेख - सतगुरु रमता राम है, इसमें मीन ना मेख, अर्थात सतगुरु स्वयं ही ब्रह्म यानी भगवान है, सतगुरु ही अलेख (जिसकी गति व समर्थता का आंकलन नही किया जा सकता है) परमात्मा है, और सतगुरु ही दुनिया का राम है इसमें कोई मीन मेख या शंशय नही होना चाहिए
अतः ज्ञानी भगत ने हर प्रकार से सोच विचार करते हुए, गुरुदेव को पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब मानकर उनकी पूजा करनी है , और अपने सामर्थ्य अनुसार भोग भी लगाना है

दुनिया सारी जेल है और जेलर है शैतान
पाप पुण्य का मुकदमा है झेल रहा इंसान
राजा रंक सब कैदी है, पर ज्ञान बिना अनजान
ना कोई छूटा ना छूट पाया, बिन सतगुरु की पहचान

अतः जब आपको सतगुरु रूप में परमात्मा की पहचान हो जाये, उसके बाद अपने घर पर समय और सामर्थ्य अनुसार चाहे तो प्रतिदिन, चाहे सप्ताह में, चाहे 15 दिन या महीने में, थोड़ा सा देशी घी का गेहूँ के आटे के साथ हलुआ राम बनाकर, भोग की आरती के साथ भोग अवश्यलगाये, भोग की आरती आपको भक्तिबोध पुस्तक में अन्नदेव की आरती के बाद (भोग लगाने की विधि) के साथ लिखी हुई मिल जायेगी

☞ हलुवा राम में देशी घी (चाहे दुकान से मिले या गाँव से) का ही प्रयोग करना है

☞ भक्ति विधान अनुसार हलुवा राम बनाने में गेहूँ के आटे का ही प्रयोग करे, सूजी, बेसन, मूंग आदि को मिक्स भी नही करना है

☞ हलुवा राम में किसी भी तरह के मेवा (काजू किशमिश, इलायची) आदि का प्रयोग नही करना है

☞ घर पर हलुवा राम बनवाने में अन उपदेशी माता बहन भाई की मदद ले सकते है , लेकिन यदि वे माता भाई बहनें जो नशा करते है, मांस खाते है, तो भूलकर भी मदद ना

☞ भोग प्रसाद बनाने के लिए संभव हो तो अलग से एक छोटी कड़ाही, एक थाली, कटोरी, चम्मच व गिलास खरीद ले - जिसका उपयोग सिर्फ गुरुजी का भोग लगाने के लिए ही करना है, यदि ऐसा संभव नही है तो घर के बर्तनों को पहले अच्छे से साफ करके ही भोग बनाये और लगाये

☞ भोग प्रसाद तैयार हो जाने के बाद, एक कटोरी में हलुवा डालकर, उसे थाल में रख ले, साथ मे एक शुध्द पानी का गिलास रख ले, और किसी साफ वस्त्र से (चाहे किसी भी रंग का हो) ढक दे, **सबसे पहले मंगलाचरण करे, उसके बाद आया है आया है बंजारा केशव आया है** वाला संध्या आरती का शब्द गाते हुए, थाल को हाथ मे लेकर दरबार साहेब की तरफ चले, और दरबार मे प्रसाद को रख दे, शब्द पूरा हो जाने पर यदि आप पढ़े लिखे है तो भक्तिबोध पुस्तक हाथ मे लेकर खड़े होकर, सिर को किसी वस्त्र, चुन्नी या तोलिये से ढ़ककर, भोग की आरती करें,

☞ यदि आपकी उम्र ज्यादा है, शरीर मे तकलीफ है, माता बहन ग्रभ से है या किसी अन्य कारणवश आप खड़े होकर आरती नही कर सकते है, तो आप जमीन पर, बेड पर, या कुसी पर बैठकर, या विशेष कारणवश लेटें हुए भी आरती कर सकते है, आत्मा का परमात्मा से संबंध है, हमने सिर्फ आरती पर ध्यान रखना है

☞ यदि आप अनपढ़ है, कम दिखाई देने या ना दिखाई देने की वजह से भक्तिबोध से पढ़कर भोग की आरती नही कर सकते है, तो you tube पर जाकर search करे **(भोग आरती संत रामपाल जी महाराज)** आपको गुरुदेव की आवाज में एक 40 या 42 मिनट के आसपास का भोग आरती का वीडियो मिल जायेगा, आप उस वीडियो से भी आरती कर सकते है, **(वीडियो केवल विशेष कारण से जो भाई बहन भक्तिबोध से आरती करने में असमर्थ है उन्ही के लिए है, अन्य के लिए नही)**

☞ भोग लगाने के बाद, सर्व प्रथम उसी भोग को ग्रहण करे, जो आपने गुरुदेव भगवान को लगाया है , हलुवा राम का भोग आप परिवार के अन्य अन उपदेशी मेंबर को भी दे सकते है, चाहे वे नशा करते हो या ना करते हो , परमात्मा को लगा भोग खाएंगे, तो विकार त्यागने की भी इच्छा बनेगी

☞ भोग प्रसाद बाहर जाकर किसी भी पड़ोसी को नही बांटना है, घर आये किसी भी व्यक्ति को खिला सकते है

☞ भोग आरती में कोई भी व्यक्ति शामिल हो सकता है **(ध्यान रखे, आरती के समय नशा किया हुआ ना हो)**

☞ इस तरह से आप चाहे तो गुरुदेव भगवान को छोटी भोग आरती के साथ सुबह शाम भी भोग लगा सकते है

छोटी भोग की आरती क्या है और कैसे करे?

ठीक उसी तरह हलुवा राम तैयार हो जाने के बाद, सबसे पहले मंगलाचरण करके, भोग की आरती के अंत मे एक शब्द है, **आज लगा**

साहेब को भोग दीन के टुकड़े पानी का - कोई जगा पुरबला भाग सफल हुआ दिन जिंदगानी का, इस शब्द के साथ भी छोटी भोग की आरती लगा सकते है

क्या गुरुदेव को देशी घी के अलावा अन्य तेल या डालडा में बने भोजन का भोग लगा सकते है ?

यह गलती भूलकर भी ना करे, पूर्ण परमात्मा का चाहे हलुवा राम हो या भंडारा, देशी घी में बना है तो ही भोग की आरती के साथ भोग लगाना है

गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार डालडा (वनस्पति) घी का प्रयोग तो भगत ने नाही ज्योति जलाने में प्रयोग करना है और नाही खाने में , क्योंकि डालडा घी में चिकनाई के लिए पशुओं की चर्बी का प्रयोग किया जाता है

अपने लिए प्रतिदिन खाना बनाने में हम तेल व घी का प्रयोग कर सकते है , और प्रतिदिन की तरह अन्न देव की आरती के साथ भोजन करे, अर्थात तेल से बने भोजन के साथ अन्न देव की आरती करके भोजन कर सकते है, **लेकिन तेल से बने भंडारे का भोग की आरती के साथ गुरुदेव को भोग नही लगाना है**

यदि गुरुदेव को भोग नही लगाएंगे, तो क्या हमारा मोक्ष नही हो पायेगा ?

यदि पूर्ण मर्यादा में रहकर, गुरुदेव को भगवान मानकर आजीवन भक्ति करते रहेंगे, तो गुरुदेव के वचन अनुसार मोक्ष में कोई शंशय नही है, लेकिन इसी जन्म में मोक्ष हो पायेगा - गुरुदेव को भोग लगाये बिना इसमें जरूर शंशय बना रहेगा

क्योंकि तीनो समय की आरती वाली भक्तिबोध में भोग लगाने की विधि भगवान को भोग लगाने के लिए ही लिखी हुई है, अर्थात मोक्ष प्राप्ति के लिए यह भी भक्ति विधि का एक हिस्सा है , लेकिन यह निर्णय फिर ज्ञान आधार से भगत ने स्वयं ही लेना होगा कि, **आज धरती पर असली भगवान कौन है ? और किसे भोग लगाये ?** यदि ज्ञान सुनकर आप यह निर्णय कर लेंगे की, असली भगवान स्वयं सतगुरु रामपाल जी भगवान ही है , तो आप भोग लगाने से पीछे नही रह पायेंगे , और भोग लगाने के बाद यह सिध्द हो जाता है कि आपने गुरु को भगवान के रूप में पहचान लिया है, उसके बाद यदि भगत आजीवन मर्यादा में रहेगा तो उसके मोक्ष में कोई शंशय नही होता है

यदि आपने जल्दबाजी और देखा देखी में कुछ दिन गुरुदेव को भोग लगाया, फिर किसी सिरफिरे के कहने या डरा धमकाने से भोग लगाना छोड़ दिया, तो भी मोक्ष से वंचित ही रहना पड़ेगा ,

गुरुदेव कहते है -

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति ना हो - भक्ति करे कोई सूरमा जाति वर्ण कुल खो, अतः इस तरह सभी सावधानी रखकर, हमने गुरुदेव भगवान को भोग लगाना है

साध संगति अथवा सत्संग में भंडारे के साथ कुछ मिठाइयां जैसे लड्डू जलेबी, बर्फी आदि बना सकते है या नही

ज्ञान आधार से आध्यात्मिक मार्ग में साधक जितना सहज व सरल होकर चलता है तो परमात्मा को अधिक प्यारा लगता है, एक भगत द्वारा साध संगति रखवाने का या साध संगति में आने का मुख्य मकसद गुरुदेव भगवान की महिमा, उन्हें भोग लगाना व ज्ञान आधार से चर्चा करना ही होता है, ताकि भक्तिमार्ग पर आगे बढ़ने के लिए विश्वास व दृढ़ता मिलती रहे,**अतः साध संगति में अपने अपने क्षेत्र अनुसार साधारण भोजन जैसे सब्जी रोटी, दाल, चावल आदि बनाना ही उचित है,** गर्मी के समय मे

चाहे तो छाछ या रायता आदि की व्यवस्था भी कर सकते है, अन्यथा मन को बकवाद के लिए जगह मिलती चली जायेगी, की अबकी बार लड्डू बनाया है अगली बार जलेबी बनाएंगे

यदि आर्थिक स्थिति से कमजोर किसी अन्य भगत भाई बहन के घर पर साध संगति है, तो उसके मन मे यह बात आ सकती है कि उस भाई ने तो लड्डू जलेबी बनाये थे, यदि मैंने भी एक आध मिठाई की व्यवस्था नही की, तो भगत भाई बहन क्या सोचेंगे ? साथ ही गुरुदेव ने बताया कि आगे चलकर यह कर्म एक परम्परा सी बन जाती है जो भक्तिमार्ग में उचित नही है

अतः साधारण भोजन बनेगा तो हमारे समय की भी बचत होगी, तथा गुरुदेव भगवान ने बताया कि खट्टे मीठे व चटपटे आहार मन की खुराक है, अतः सत्सग में ज्ञान आधार से साधारण भंडारा ही उचित रहता है, ज्यादा से ज्यादा चावल की खीर को शामिल किया जा सकता है

मेरा पति अनुपदेशी है, शराब, बीड़ी गुटका आदि का नशा भी करता है, मास भी खाता है, मजबूरन ना चाहते हुए भी मुझे पति पत्नी कर्म करना पड़ता है, मुझे शंका है कही मेरी मर्यादा तो खंडित नही हो रही है ? क्योंकि गुरुदेव भगवान ने सत्संग में बताया कि अनुपदेशी व्यक्ति का झूठा नही खाना चाहिए जबकि पति पत्नी कर्म में भी तो गुरु वचन की उलंघना होती है ?

गुरुदेव भगवान का वचन सत्य है कि किसी भी अनुपदेशी की झूठा खाने से मर्यादा खंडित होती है, लेकिन आपकी स्थिति थोड़ी अलग है, इसलिए पूज्य गुरुदेव ने, जब तक आत्मा को यह तत्त्वज्ञान अच्छे से समझ मे नही आ जाता है, और वह मीराबाई की तरह संघर्ष करने के योग्य नही बन जाती है तंबी तक पति पत्नी कर्म वाली क्रिया से दोषमुक्त रखा है, ताकि उपदेशी की तरफ से परिवार में कोई कलह का।कारण ना बने

गुरुदेव कहते है, **कबीरा तेरी झोपड़ी गल कटियन के पास - करेगा सो भरेगा तू क्यो भया उदास** अर्थात ऐसी स्थिति में उपदेशी स्त्री पुरुष अपनी तरफ से पति पत्नी कर्म वाली इच्छा व्यक्त ना करे और यदि अनुपदेशी पति/ पत्नी की तरफ से पहल होती है, तो उपदेशी स्त्री पुरुष को कोई दोष नही लगता है

दूसरी स्थिति में ज्ञान से परिपक्व आत्माओ के लिए गुरुदेव ने बताया कि...
औरत पराई आपणी भोग्य सर्वस्व जाय - जैसे आग पराई आपणी हाथ दिये जल जाय अर्थात अग्नि चाहे अपने घर की हो या बाहर की, यदि उसमे हाथ दिया जायेगा तो उसका गुण है वो हाथ अवश्य जलायेगी, **ठीक इसी तरह नाम उपदेश के बाद औरत चाहे अपनी हो या अन्य की, उसे भोगने से भक्ति पर असर पड़ेगा ही पड़ेगा**

लेकिन यहाँ पूज्य गुरदेव जी ने कुछ सामाजिक व्यवस्थाओं को यथावत बनाये रखने के लिए पति पत्नी कर्म में कुछ मर्यादाओं के साथ छूट दी है जैसे

☞ उपदेश प्राप्त पुरुष यदि शादी शुदा है, या शादी करनी है तो उसे लक्षमण की तरह जति रहना चाहिए (जति उस पुरुष को कहते है जो अपनी पतनी के अलावा अन्य स्त्री को माता बहन की दृष्टि से देखता है) फिर ऐसी आत्मा यदि अन्य सभी मर्यादाओं में रहकर भक्ति करती है तो

गुरुदेव कहते है
इंद्री कर्म ना लगे लगारम जो भजन करे निरदुंद रे - गरीब दास जग कीर्ति होगी जब लग सूरज चंद रे अर्थात ऐसी स्थिति में उस मर्यादित आत्मा को उस इंद्री कर्म (पती पत्नी व्यवहार) का दोष नही लगता है

☞ तीसरी स्थिति में जब भगत को पूर्ण तत्त्वज्ञान हो जाता है, तो उसे गुरुदेव भगवान का भक्ति विधान याद आयेगा की
भग (योनि) भोग्या भग ऊपजै, भग से बचा ना कोय - जै कोई भग से बचे, तो भगत कहावै, सोय अर्थात स्त्री भोग से कोई बिरला ही बच पाता है, जब तक आप स्त्री भोग करते रहेंगे, तब तब आपको बार बार उसी योनि से जन्म लेना पड़ेगा, **असल मे भगत तो वही बन पाता है जो ज्ञान को आधार बनाकर उस कर्म से दूर रहकर भक्ति करता है**

अतः गुरुदेव ने यहां हमे दोनों ही स्थिति में समझाया है की चिंतित होने की जरूरत नही है

☞ यदि मर्यादा में और जति रहकर पति/पत्नी कर्म किया जाये तो साधक की भक्ति नष्ट नही होती है

☞ अनावश्यक व दिन के समय में भोग क्रिया से बचना चाहिए, **क्योंकि एक बार की भोग क्रिया में करोड़ो आत्माओ के मरने का दोष लगता है**

☞ और तीसरी स्थिति में हमे अपना सारा प्रेम (स्त्री, माता पिता, बच्चो व संपति) से हटाकर प्रभु की सतभक्ति में लगा देना चाहिए, **तभी साधक की पूर्ण मुक्ति सम्भव है**

माता बहने महावारी (पीरियड्स) के दिनों में नियमित भक्ति कर्म आरती, सत्संग, सुमरण, दीपक जलाना आदि कर सकती है या नही ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि पहले ज्ञानहीन ऋषि व धर्मगुरुओं ने एक मनमुखी धारणा बना रखी थी कि महावारी के समय किसी भी स्त्री के हाथ से बना भोजन अपवित्र होता है, माहवारी के समय स्त्री ने घर मे पूजा

पाठ के लिए दीपक आदि नही जलाना है आदि आदि

जबकि पूज्य गुरुदेव जी ने यथार्थ भक्तिविधि व जानकारी बताई है कि माता बहनों को माहवारी (पीरियड्स) का आना एक प्राकृतिक क्रिया है, जैसे सर्दी में हर किसी को खांसी जुकाम हो जाना एक आम बात है

अतः यथार्थ सतभक्ति मार्ग में माहवारी (पीरियड्स) के समय भी माता बहनों ने अपनी किसी भी आध्यात्मिक क्रिया (आरती, सत्संग, सुमरण, ज्योत बत्ती, भंडारा बनाना, व भोग लगाना) बंद नही करना है, क्योंकि आत्मा का परमात्मा से संबंध है शरीर ने तो सिर्फ भक्ति के लिए इस आत्मा को शरण दे रखी है, अतः आत्मा को नाही महावारी आती है और नाही सर्दी जुकाम होती है

गुरुदेव कहते है
मन कर धीर बांध लें रे बोरे - छोड़ देना पिछलों की रीत - सतगुरु तारेंगे
अर्थात हमसे पहले ज्ञानहीन धर्मगुरुओं व पंडितों ने अपनी मनमुखी धारणा से जो इस तरह की उल्टी परंपरा व रीति रिवाज बना रखे है उन सभी को ज्ञान आधार से तोड़कर आगे बढ़ना है

क्योंकि, माहवारी के समय अपनी नियमित आध्यात्मिक क्रियाओं को या पारिवारिक कार्यो को ना करना किसी भी धर्म शास्त्र (गीता वेद कुरान पुराण) में नही लिखा है

अतः हमने भक्तिमार्ग पर किसी भी व्यक्ति की मनमुखी सोच को आगे रखकर नही बल्कि सतगुरु के सत्संगों को आधार बनाकर आगे बढ़ना है

उपदेश प्राप्त साधक के घर मे किसी उपदेशी या अनुपदेशी की मृत्यु (मौत) जो जाती है, तो किन किन बातों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है, ताकि मर्यादा खंडित ना हो ?

उपदेश प्राप्त करने के बाद भगत के लिए गुरु का वचन बहुत महत्वपूर्ण होता है, वचन की रक्षा अपने प्राणों से भी प्रिय होनी होनी चाहिए, क्योंकि गुरु का प्रत्येक वचन भगत के हित मे होता है

इंसान की मृत्यु के बाद, तत्त्वज्ञान की कमी व आध्यात्मिक मार्गदर्शकों की अज्ञानता के चलते समाज मे व्याप्त अनेक व्यर्थ की परंपराओं व रिवाजो ने इंसान को उलझाकर रख दिया है, प्राण त्यागने के उपरांत इंसान का शरीर मिट्टी तुल्य हो जाता है

☞ उसे चाहे जमीन में दफ़नाओ
☞ चाहे अग्नि में स्वाह करो
☞ चाहे पानी मे बहाओ
☞ चाहे पशु पक्षियों को खिलाओ / उस मिट्टी का सोना नही बन सकता है

लेकिन ज्ञानहीन धर्मगुरुओं व पंडितों ने तत्त्वज्ञान के अभाव में अपनी महिमा को यथावत बनाये रखने व पेज पूजा के लिए अनेक कर्मकांड शुरू करवा डाले

जबकि आज गुरुदेव भगवान ने आकर बताया कि आत्मा शरीर से निकलने के बाद कर्म आधार से अन्य योनि प्राप्त कर चुकी होती है, पीछे से उस बेजान शरीर के साथ व्यर्थ के क्रियाकर्म करने से उस आत्मा का कुछ भी भला नही होने वाला है

उपदेश प्राप्त करने के बाद साधक को ज्ञान हो जाता है इसलिए गुरु आदेश अनुसार हमने किसी भी कर्मकांड व पूजा पाठ में सहयोग नही करना है बल्कि गुरुदेव के आदेश अनुसार...

आप उस मृत शरीर को कफन से ढक सकते है, यदि आपसे पहले किसी और ने कफन डाल रखा है तो आपने उसके ऊपर दूसरा कफन भी नही डालना है और नाही डालने में सहयोग करना है

☞ अर्थी बनाने में सहयोग कर सकते है

☞ लाश को कंधा दे सकते है

☞ जलाने के लिए लकड़ी काटना या दफनाने के लिए खड्डा खोद सकते है

☞ चिता को अग्नि दे सकते है

☞ कर्मकांड के तहत पिंड भरना, मुँह में घी या आटे का लड्डू आदि नही डालना है

☞ कोई भी कलश या पानी की मटकी नही फोड़ना

☞ चिता के चारो तरफ चक्कर नही लगाना

☞ सिर नही मुंडवाना है

☞ अस्थियो को गंगा जी मे नाही तो डालने के लिए जाना है और नाही जाने वालों का सहयोग करना है

☞ परम्परा के तहत घर की चौखट या आंगन
में कील आदि नही गाड़ना है

☞ छलना या छलनी के नीचे दीपक आदि जलाकर नही रखना है

☞ नाही तेराहमी, छः माही, बरसी, पित्र पूजना, समाधि बनाकर पूजना, फिर श्राद्ध आदि निकालना ऐसा कुछ भी नाही करना है और नाही सहयोग करना है

गुरुदेव जी ने बताया यदि हम ज्ञान प्राप्त करके भी इन व्यर्थ की परंपराओं में सहयोग करेंगे, तो भला आम समाज से इन परम्पराओ की समाप्ति की क्या उम्मीद की जा सकती है, हो सकता है आपको, परिवार व समाज के थोड़े बहुत संघर्ष का सामना करना पड़े, लेकिन गुरुदेव के वचन को निभाने के लिए यह बहुत कम कीमत है,भगत मंसूर जैसे महापुरुषों ने तो गुरु वचन के लिए समाज से लड़ते लड़ते अपने शरीर का अंग अंग कुर्बान कर डाला था, मीराबाई को घर तक भी त्यागना पड़ गया था, जबकि आज बिचली पीढ़ी में तो पूर्ण मोक्ष का सुअवसर प्राप्त है, यदि गुरु वचन के लिए शीश भी कुर्बान करना पड़े तो भी कम कीमत होगी

☞ यदि आप भगत है और रिश्तेदारी में किसी की मौत हो गई है, तो आपजी बैठने के लिए जा सकते है

☞ यदि आप भगत है तो आपने जगत वालो की तरह रोना धोना नही है बल्कि तत्त्वज्ञान आधार से उन्हें सांत्वना दे

☞ यदि प्यास लगी हो, तो अन्नदेव की आरती करके जल ग्रहण कर

सकते है

लेकिन ध्यान रहे, चाहे आपका कितना ही प्रिय रिश्तेदार क्यो ना हो **तेरामाही या पूजा पाठ पर हरगिज नही जाना है**, क्योंकि वह आन उपासना के तहत एक धार्मिक अनुष्ठान होता है जिसमे जाना भी गुरुदेव ने महापाप का भागी बताया है

यदि आपके परिवार में ही मौत हुई है तो आप घर पर ही रहे, लेकिन ज्ञान आधार से किसी भी कर्मकांड में सहयोग ना करे

बैठने के लिए आने वाले मेहमानों की सेवा जरूर कर सकते है, जैसे पानी पिलाना, भोजन खिलाना **(लेकिन बीड़ी या हुक्का आदि भरकर बिल्कुल भी सहयोग नही करना है)**

कपड़े या पैसे आदि का परम्परा के तहत लेन देन बिल्कुल भी नही करना है

चाहे किसी भी प्रिय सदस्य की मौत क्यो ना हो जाये **भगत ने अपनी दैनिक भक्ति क्रिया को एक दिन के लिए भी नही त्यागना है** (जैसे आरती, सुमरण, दीपक जलाना)

यदि आप शादी शुदा स्त्री है और पीहर में मात पिता या भाई बंधुओ की मौत हो जाती है, तो तेरामाही (तेरहवाँ) वाले दिन को छोड़कर आपजी 2 चार दिन के लिए यदि आवश्यक हो तो वहां रुक सकती है लेकिन उपरोक्त मर्यादाओ का सख्ती से पालन करना होगा काल प्रेरणा से समाज के लोग या परिवार वाले आपके ऊपर परम्पराओ को निभाने के लिए दबाव बनाने का पूरा प्रयास कर सकते है लेकिन **ध्यान रहे - वो**

आपकी परीक्षा का समय होगा, यदि उन व्यर्थ की परम्पराओ के आगे झुक जाओगे तो सतगुरु से दूर हो जाओगे और **यदि संघर्ष किया तो सतगुरु को प्रसन्न कर जाओगे,** पुनः ध्यान दे - **आपने तेरामाहि वाले दिन वहाँ किसी भी कीमत पर नही रुकना है,** चाहे आपको कितना ही अपमानित क्यो ना होना पड़े, क्योंकि भगत का अपमान - उस अपमान से बढ़कर नही हो सकता है, जो अपमान गुरुदेव भगवान ने हम भाई बहनों को मोक्ष के अधिकारी बनाने के लिए 2 - 2 बार जेल जाकर समाज की ओछी मंदी बाते सुनकर सहा है और आज भी सह रहे है

गुरुदेव कहते है कि ...
सत ना छोड़े सूरमा, सत छोड़े पत जाय - सत के बांधे लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय, अर्थात भगत को किसी भी हालत में सत्य का साथ और गुरु वचन को नही तोड़ना चाहिए, यदि तोड़ दिया तो बनी बनाई भक्ति का नाश हो जाता है और यदि हिम्मत करके गुरु वचन पर डटे रहे तो परमात्मा साधक को पूर्ण मोक्ष का अधिकारी बना देता है !

और ज्ञानहीनता के चलते जो समाज आज आपका अपमान कर रहा है, कल को जब उन्हें ज्ञान होगा तब वही समाज आपके हिम्मत व संघर्ष के लिए सम्मान भी देगा ।

बहुत से भगत भाई तीनो समय की आरती व भोग की आरती करते समय छोटे कपड़े या आधे कपड़े ही पहने रहते है, क्या ऐसा कर सकते है ?

गुरुदेव भगवान की आरती करते समय साधक ने पूरे शरीर को ढकने वाले ढीले ढाले व सभ्य कपड़े पहनने चाहिए, कुछ भाई बहन अज्ञानतावश तीनो समय की आरती व भोग की आरती करते समय शर्ट की जगह मात्र

बनियान, या फुल पेट या पायजामे (लोअर) की जगह घुटनो तक का जांघिया (कैप्री) पहने रहते है, जोकि ज्ञान आधार से उचित नही है, अगर संभव हो तो आरती करते समय साधक को अपने सिर को भी नंगा नही रखना चाहिए, किसी रुमाल, चुनने या अन्य वस्त्र से ढककर रखना चाहिए, क्योंकि यह भी गुरुदेव भगवान के सम्मान में गिना जाता है !

उपदेशी माता बहनों पर अनुपदेशी पति या ससुर द्वारा , खाने में अंडे व मांस बनाने तथा हुक्का आदि भरने का दबाव बनाया जाता है, ऐसे में क्या करे ?

गुरुदेव भगवान ने बताया कि गलत कार्य करना व उसमे सहयोग करना दोनों ही महापाप के भागी बनाते है

यदि आप उपदेशी है और परिवार वाले आपके ऊपर मांस व अंडे पकाने तथा हुक्का भरने के लिए दबाव डालते है, तो ज्ञानी भगत ने अपने गुरुदेव पर विश्वास करते हुए प्रेम पूर्वक संघर्ष करते हुए मना कर देना है, क्योंकि नाम उपदेश लेने के बाद काल हमारी मर्यादा खंडित करवाने के लिए परिवार के अनुपदेशी लोगो द्वारा दबाव बनाने का पूरा प्रयास करेगा, अतः ऐसी स्थिति में ज्ञान आधार और आपका विश्वास व दृढ़ता ही आपको उस मुश्किल स्थिति से सामना करने की हिम्मत देंगे, (ऐसी स्थिति में गुरुदेव की तरफ से हमारी परीक्षा होती है, और जो भाई बहन अपनी मर्यादाओ को बचाने के लिए कोई भी कुर्बानी देने को तैयार हो जाते है, तो गुरुदेव भी उनके साथ ही खड़े हो जाते है, अतः ऐसी स्थिति में थोड़ी हिम्मत व ज्ञान से काम ले,) और विचार करे यदि गुरुदेव भगवान हमसे भक्ति करवाने के लिए दुनिया से इतना संघर्ष करते हुए जेल में बैठ सकते है, तो क्या मर्यादा बचाने के लिए मैं दो चार गाली और थप्पड़ भी सहन नही कर सकती हूँ ?

यदि आप संघर्ष और सामना नही कर पाते है और ना चाहते हुए भी गलत कर्मो में परिवार वालो का सहयोग करते है, तो ऐसा कर्म आपके द्वारा मजबूरीवश मर्यादा तोड़ने में आता है, और मजबूरी या दबाव के चलते तोड़ी गई मर्यादा की भी सजा मिलती है (यदि आपकी मौत होनी होगी, तो पैर टूटकर रह जायेगा, अर्थात नुकसान अवश्य उठाना पड़ेगा)

अतः मजबूरी या दबाव में आकर मर्यादा तोड़नी है या बचानी है इसका फैसला भी ज्ञान आधार से आपने स्वयं ही समय आने पर करना होगा, क्योंकि उस समय वह आपकी परीक्षा होगी !

यदि प्रथम मंत्र व सतनाम मंत्र में भूल जाये या जाप करने की विधि याद ना रहे तो क्या करे ?

गुरुदेव भगवान ने बताया, यदि किसी कारणवश साधक को प्रथम मंत्र व सतनाम मंत्र में भूल पड़ जाये या जाप करने की विधि भूल जाये तो इसके दो ही विकल्प है

प्रथम विकल्प - यदि गुरुदेव भगवान आश्रम में है तो आपने वहाँ जाकर उनके समक्ष अपनी समस्या का समाधान करवाना चाहिए, लेकिन वर्तमान 2022 में गुरुदेव जेल में है, और बाहर उनके नाम से फर्जी नामदान केंद्र व आश्रम खुल चुके है, जहाँ नाही कोई मर्यादा है और नाही भक्ति, केवल धन प्राप्ति के लिए आडंबर हो रहा है !

दूसरा विकल्प - गुरुदेव भगवान ने सत्संग में बताया कि ऐसी स्थिति में आप एक दूसरे भक्तो की मदद ले सकते है, यदि आपको प्रथम मंत्र के जाप करने की विधि में भूल पड़ गई है तो अन्य कोई भी भगत भाई बहन

आपको यह कहकर व प्रथम मंत्र का मुख से उच्चारण करते हुए मदद कर सकता है कि - (मुझे नामदीक्षा देते समय गुरुदेव भगवान ने प्रथम मंत्र को इस विधि से जाप करने का आदेश दिया था और मैं इसी विधि से जाप करता हूँ) यह सुनकर सामने वाला भगत जिसे भूल पड़ गई थी, वह समझ जायेगा कि प्रथम मंत्र कैसे जाप करना है (मदद करने से पहले फार्म देखकर यह जांच अवश्य कर ले, की उसे प्रथम मंत्र प्राप्त है या नही)

यदि आपको सतनाम मंत्र में या जाप करने की विधि में भूल पड़ गई है तो अन्य कोई भी भगत भाई बहन आपको यह कहकर व सतनाम मंत्र का मुख से उच्चारण करते हुए मदद कर सकता है कि - (मुझे नामदीक्षा देते समय गुरुदेव भगवान ने सतनाम मंत्र को इस विधि से जाप करने का आदेश दिया था और मैं इसी विधि से जाप करता हूँ) यह सुनकर सामने वाला भगत जिसे भूल पड़ गई थी, वह समझ जायेगा कि कैसे जाप करना है (मदद करने से पहले फार्म देखकर यह जांच अवश्य कर ले, की उसे सतनाम मंत्र प्राप्त है या नही)

ध्यान दे - गुरुदेव भगवान के आदेश अनुसार मदद करने वाले भगत ने ऊपर लिखी विधि अनुसार ही बताना है, यदि आपने गुरुदेव को बीच मे रखे बिना सीधा ही कह दिया कि, (यह प्रथम मंत्र या सतनाम है और इसका ऐसे जाप करना है) तो आप उसके गुरु माने जाएंगे और आपकी भी मर्यादा खंडित हो जाएगी, अतः विधि पूर्वक ही मदद करे !

इसके अलावा गुरुदेव भगवान ने बताया कि, सारनाम के विषय मे कोई भी भगत किसी की मदद नही कर सकता है, सारनाम की भूल पड़ने पर आपको गुरुदेव के ही पास जाना होगा, वर्तमान में अन्य कोई विकल्प नही है !

आरती या मंत्र करते वक्त यदि बीच मे कोई विशेष काम करना हो, तो कर सकते है या नही ?

गुरुदेव भगवान ने इस यथार्थ भक्तिमार्ग को सहज मार्ग की संज्ञा दी है, सहज का मतलब होता है - सरल मार्ग ! आरती व मंत्र करते समय या सत्संग सुनते समय कोशिश करे कि उन्हें ध्यान पूर्वक सुना व किया जाये, फिर भी यदि बीच मे किसी अति विशेष कारणवश आपको आरती मंत्र या सत्संग से उठना पड़ रहा है तो गुरुदेव को दंडवत प्रणाम करते हुए क्षमा याचना मांगकर वह काम कर सकते है, उसके बाद वापस आपने जहाँ से आरती बीच मे छोड़ी थी उसके आगे से आरती व मंत्र करना शुरू कीजिए !

लेखक व प्रार्थी :-
''परमपूज्य'' सतगुरु रामपाल जी भगवान का तुच्छ शिष्य
पवन दास (जयपुर-राजस्थान)

साध संगति से जुड़ने व अन्य शंका समाधान के लिये Youtube पर सर्च करें Shanka Samadhaan with Pawan Das
Facebook पर सर्च करें Pawan Das is Live

शंका व समाधान

केवल उपदेश प्राप्त भगत समाज के लिए



इस पुस्तक में लिखित शंकाओं का समाधान परमपूज्य सतगुरु रामपाल जी भगवान के सत्संगों को आधार बनाकर करने का प्रयास किया गया है।

वैसे तो गुरुदेव भगवान के आशिर्वाद से त्रुटि की कोई संभावना नही है, परन्तु फिर भी शंकाओं के समाधान को अपने आध्यात्मिक या व्यावहारिक जीवन मे लागू करने से पहले स्वयं के बुध्दि विवेक से निर्णय अवश्य ले।